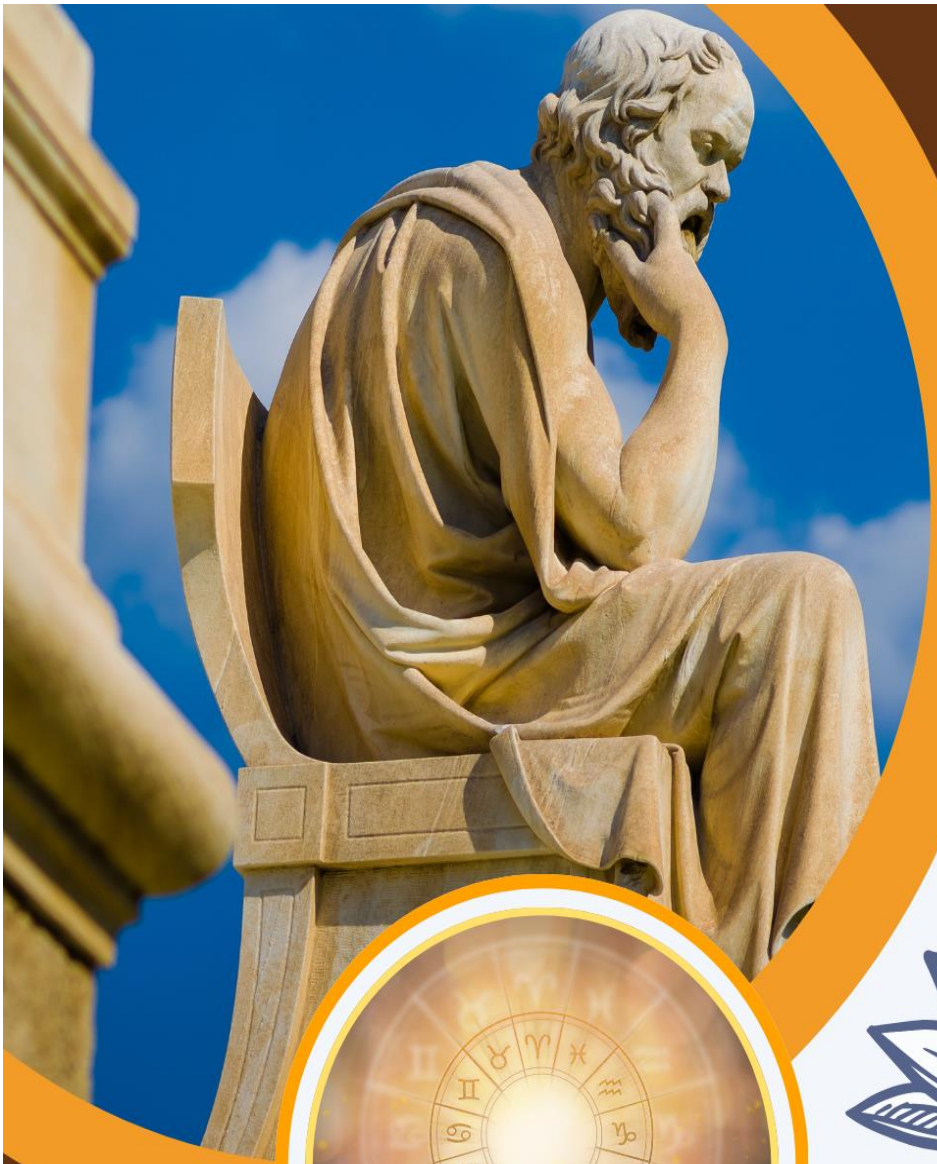

VIDYA ICS

We Nurture Dreams...

2024-25

# भारतीय षड्दर्शन

## मुख्य परीक्षा प्रश्नपत्र-IV

## (भाग-A : इकाई-01)

(हिन्दी माध्यम)


**CONTACT:**

942-574-4877

www.vidyaics.com

icsvidya@gmail.com

| क्रमांक | टॉपिक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1 | दर्शन (Philosophy) | 2-3 |
| 2 | सांख्य दर्शन (Sankhya Darshan) | 4-8 |
| 3 | योग दर्शन (Yoga Darshan) | 9-12 |
| 4 | न्याय दर्शन (Naya Darshan) | 13-15 |
| 5 | वेशैषिक दर्शन (Vaisheshik Darshan) | 16-19 |
| 6 | पूर्व मीमांसा दर्शन (Mimansa Philosophy) | 20-22 |
| 7 | उत्तर मीमांसा (वेदान्त) (Vedanta Philosophy) | 23-28 |
| 8 | सुकरात (Socrates) | 29-32 |
| 9 | प्लेटो का दर्शन (Plato) | 33-36 |
| 10 | अरस्तु (Aristotle) | 37-40 |
| 11 | जैन दर्शन (Mahavir Swami) | 41-43 |
| 12 | गौतम बुद्ध (Buddha) | 44-47 |
| 13 | चार्वाक (Charvak) | 48-51 |
| 14 | भर्तृहरि (Bharthari) | 52-53 |
| 15 | गुरूनानक (Gurunank) | 54-55 |
| 16 | कबीरदास (Kabirdas) | 56-57 |
| 17 | तुलसीदारस (Tulsidas) | 58-59 |
| 18 | संत रविदास (Sant Ravidas) | 60-61 |
| 19 | रविन्द्रनाथ टैगोर (Ravindra Nath Tagore) | 62-63 |
| 20 | राजा राममोहन राय (Raja Rammohan Rai,) | 64-65 |
| 21 | देवी अहिल्याबाई होल्कर (Devi Ahilya bai Holkar) | 66 |
| 22 | सावित्री बाई फुले (Savitri Bai Fule) | 67 |
| 23 | स्वामी दयानंद सरस्वती (Swami Dayanand) | 68-69 |
| 24 | महर्षि अरविन्द (Maharishi Arvind) | 70-71 |
| 25 | सर्वपल्ली राधा कृष्णन (Sarvapalli Radha Krishnan) | 72 |
| 26 | डॉ. भीमराव अंबेडकर (Dr. B.R. Ambedkar) | 73-75 |
| 27 | पण्डित दीनदयाल उपाध्याय (Pt. Deendayal Upadhyay) | 76-77 |
| 28 | स्वामी विवेकानंद (Swami Vivekanand) | 78-79 |

# दर्शनशास्त्र (Philosophy)

- दर्शनशास्त्र क्या है
- दर्शनशास्त्र का विकासक्रम
- दर्शनशास्त्र की शाखाऐं

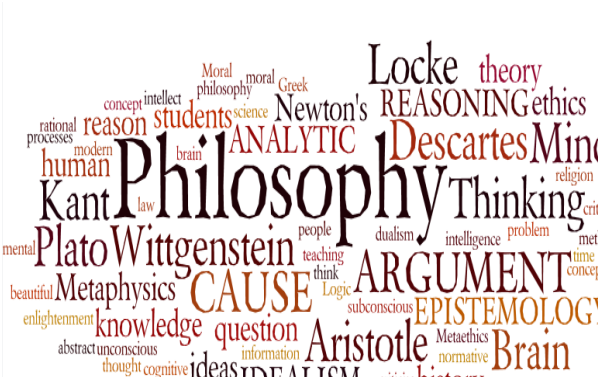


## दर्शनशास्त्र क्या है

Meaning of Philosophy

इंग्लिस में दो शब्दों Philos + Sophia से मिलकर बना है।

जहाँ पर Philo का अर्थ होताहै – Lover (प्रेमी)

Sophia का अर्थ होता है–Wisdom (Knowledge) = ज्ञान

Philosophy = (Love of Wisdome)'ज्ञान का प्रेमी (ज्ञान के प्रति प्रेम)

### दर्शनशास्त्र

दर्शन शब्द का अर्थ – दृश्य = देखना

प्रश्न उठते है ?

कि क्या देखना ? – परमसत्य/परमतत्व को देखना।

कैसे देखना ? – दिव्य दृष्टि, तार्किकता से देखना।

क्यों देखना ? – समाधान हेतु, लक्ष्य प्राप्ति हेतु।

## दर्शनशास्त्र का विकास कैसे हुआ

### विकासक्रम –

प्रत्येक विवेकशील मनुष्य के मस्तिष्क में मुख्यतः कुछ (3) प्रश्न उठते है कि

पहला प्रश्न – मैं कौन हूँ , मेरी उत्पत्ति कहाँ से व कैसे हुई , मेरा अंत क्या होगा ?

दूसरा प्रश्न – मेरे बाहर जो कुछ भी है, यह दुनिया/जगत क्या है इसकी शुरूआत व अंत क्या है

तीसर प्रश्न – मुझे व इस दुनिया को बनाने वाला/निर्माता कोई है क्या ?,

मुझमें व दुनिया में जो बदलाव हो रहे हैं इन सबको कौन कर रहा है ?

अगर कोई निर्माता है तो वो कौन है ?, कितने (संख्या) है ?, स्वरूप कैसा है ?

इसीतरह के प्रश्नों के जबावों के क्रम में दर्शनशास्त्र का विकास हुआ है। जो इन्ही प्रश्नों का जबाव खोजता है उसे हम दार्शनिक कहते है।

अगर इस तरह के प्रश्न आपके मस्तिष्क में है और आप उनका जबाव खोज रहे है तो आप एक दार्शनिक/Philosopher है या फिर बनते जा रहे है।

उपरोक्त प्रश्नों के जबावों के क्रम में दर्शन शास्त्र की विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ है।

- इन तीन प्रश्नों को व इनके जबावों को हम – **(परत तत्व को खोजना) तत्व मीमांसा (Metaphysics)** कहते है।
- इनका ज्ञान, जबाव कैसे व कहां से मिला व इनके प्रमाणों को – **(प्रमाणि ज्ञान को खोजना) ज्ञान मीमांसा** कहते है।
- हम किस कार्य,कर्म को पाप–पुण्य कहेंगें अथवा किसी व्यक्ति के ऐच्छिक कर्मों को अच्छा या बुरा कहेंगें ? इसके **मानक/मापदंड बनाना** एवं व्यक्ति के कर्मों का मूल्यांकन करना और अच्छे कर्मों हेतु मार्गदर्शित करना ही – **नीति मीमांसा (Ethics)** है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

Educator By : Ajeet Sir

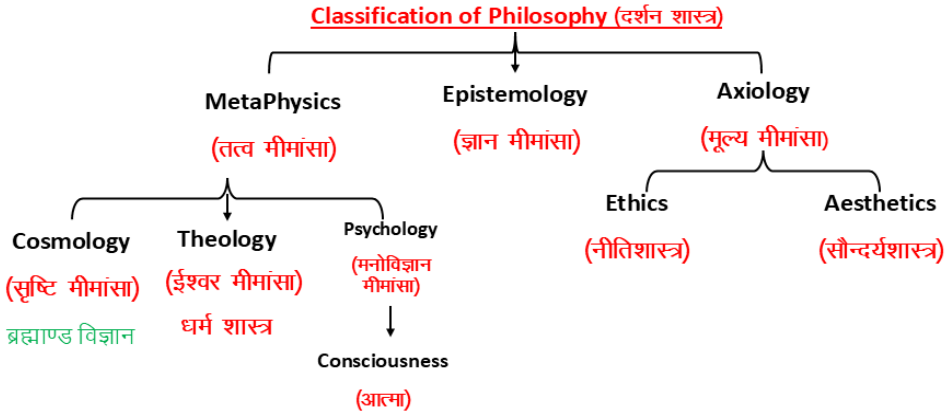


## Philosophy (दर्शनशास्त्र)

**यूरोपीय दर्शन**

- बुद्धिवादी
- अनुभववादी

**भारतीय दर्शन**

**आस्तिक दर्शन**
वेदों को प्रमाणिक मानते है।
षड्दर्शन (6)
- सांख्य – योग
- न्यान – वेशेषिक
- पूर्व मीमांसा –उत्तरीमीमांसा

**नास्तिक**
वेदों से हटकर नवीन दार्शनिक व्याख्याऐं
- बौद्ध (2 प्रमाण)
- जैन (3 प्रमाण)
- चार्वाक (1 प्रमाण)

**प्रश्न/जिज्ञासा/अध्ययन का विषय**
तत्व मीमांसा
ज्ञान मीमांसा
मूल्य मीमांसा–नीति मीमांसा

**लक्ष्य** → भारतीयों का – बंधन की समाप्ति → मोक्ष (दु:खों का अंत–समाधान)
यूरोपीयों का – जिज्ञासा तथा ज्ञान के लिये

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### भारतीय आस्तिक षड्दर्शन शास्त्रों के विषय

| दर्शन शास्त्र | रचयिता (ग्रंथ) | रचना | विवेचित विषय |
|---|---|---|---|
| सांख्य (25तत्व)3 प्रमाण | महर्षि कपिल | सांख्य सूत्र | मोक्ष एवं सृष्टि रचना (उद् विकासवाद) |
| योग (26तत्व)3 प्रमाण | महर्षि पंतजलि | योग सूत्र | समाधि–प्राप्ति विज्ञान (अष्टांगिक योग) |
| न्याय–4 प्रमाण | महर्षि गौतम | न्याय सूत्र | प्रमाण, उत्पत्ति, तर्क विज्ञान |
| वैशेषिक–2 प्रमाण | महर्षि कणाद | वैशेषिक सूत्र | भौतिक–रसायनविज्ञान (परमाणुवाद) |
| पूर्व मीमांसा–6 प्रमाण | महर्षि जैमिनि | मीमांसा सूत्र | यज्ञ–कर्म–विज्ञान (कर्मकाण्ड) |
| उत्तरमीमांसा–6 प्रमाण | महर्षि वादरायण (वेदांत) | ब्रह्म सूत्र | ब्रह्म (ईश्वर) विज्ञान (ज्ञानकाण्ड) |

## सांख्य दर्शन (Sankhya Darshan)

- परिचय
- प्रेणता → रचना
- अर्थ
- सिद्धांत
  - द्वैतवाद
  - कारणता सिद्धांत–सत्कार्यवाद
  - विकासवाद–25 तत्वों के विकास का डायग्राम
- त्रिदोष / त्रिविधिक दुःख (वंधन)
- मोक्ष
- ज्ञान मीमांसा (3 प्रमाण)
- अनीश्वरवादी विचार (ईश्वर की सत्ता का खंडन)
- महत्व व योगदान

5. **परिचय** (Introduction) **:**

**सांख्य सबसे प्राचीन भारतीय आस्तिक, सत्कार्यवादी व अनीश्वरवादी एवं द्वैतवादी दर्शन है, जिसमें 2 मूल तत्वों पुरूष व प्रकृति के संसर्ग से संयोगवश विकासात्मक प्रक्रिया के तहत 25 मूल तत्वों का विकास एवं जगत के विकास की व्याख्या की है।**

❖ **सांख्य संस्थापक व साहित्य :**

- **प्रवर्तक - महर्षि कपिल**, जिन्होंने सांख्य सूत्र एवं तत्व समास ग्रंथ की रचना की। सिद्धानां कपिलों मुनि–भगवत गीता में उल्लेख
- इसका **सबसे प्राचीन** व **प्रामाणिक** आधार **ग्रंथ** '**सांख्यकारिका**', **जिसकी रचना ईश्वरकृष्ण ने की।**

❖ **सांख्य शब्द का अर्थ (Meaning) :**

**सांख्य के दो अर्थ हैं, संख्या और सम्यक् ज्ञान ।**

- **इसमें** 25 **तत्त्वों का विवरण मिलता अतः इसे संख्या का दर्शन** (Philosophy of Numbers) **भी कहा जाता है।**
- **महाभारत और गीता में सांख्य शब्द का प्रयोग सम्यक् ज्ञान के अर्थ में हुआ है। यह पूर्णतया बौद्धिक एवं सैद्धान्तिक सम्प्रदाय है।**

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### सांख्य दर्शन के प्रमुख सिद्धांत

❖ सांख्य दर्शन के प्रमुख विचार एवं विशेषताऐं **(Main Ideas of Sankhya Philosophy)**

1) **सत्कार्यवाद (Causation)- कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है। उदाहरणार्थ तेल अपनी उत्पत्ति से पूर्व तिल में विद्यमान रहता है।**
2) **द्वैतवाद (Dualism)- भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन ही द्वैतवाद का समर्थक है, उसके अनुसार सृष्टि में दो तत्व है। पहला प्रकृति व दूसरा पुरुष।**
3) **अनीश्वरवाद** (Atheism)- **सांख्य सृष्टि के रचयिता के रूप में ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता है, फिर भी यह भौतिकवादी दर्शन नहीं है।**
4) **आस्तिक** (Believer) **दर्शन सांख्य वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करता है।**
5) **विकासवाद** (Evolutionism)- **सांख्य दर्शन के अनुसार विश्व विकास के दौरान अस्तित्व में आया है, किसी ने बनाया नहीं।**
6) **सांख्य कुल** 25 **तत्वों को मानता है तथा इनका ज्ञान मोक्ष प्राप्ति का साधन है।**
7) **त्रिविधिक दुःख है, सांख्य दर्शन का उद्देश्य भी बौद्ध दर्शन के समान मनुष्य को दुःखों से मुक्त करना है।**

## कारणता सिद्धांत (Causality Theory)

**भारतीय दर्शन में कारणता सिद्धान्त पर गंभीर चिन्तन किया है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है, कोई भी घटना बिना कारण घटित नहीं होती है। प्रायः सभी भारतीय दार्शनिक कारण-कार्य-सिद्धान्त में विश्वास करते हैं, परन्तु कारण एवं कार्य के स्वरूप व संबंध को लेकर इनमें मतभेद है।**

**इस संबंध में भारतीय दर्शन में प्रायः** 02 **दृष्टिकोणों से विचार किया है**

1. **कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व कारण में पहले से विद्यमान रहता है** इसे सत्कार्यवाद कहते है **(Manifested effect is pre Exist in the Cause)**

इसका समर्थन —**सांख्य, शंकर, रामानुज और महायानी बौद्ध करते हैं,**

2. **कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में पहले से विद्यमान नहीं रहता है, बल्कि स्वतंत्र एक नई उत्पत्ति है**—इसे असत्कार्यवाद कहते है (Effect is something Totally New).

इसका समर्थन — **न्याय-वैशेषिक और हीनयानी बौद्ध करते हैं।**

## सत्कार्यवाद (Theory of Causation)

सत्कार्यवाद सांख्य दर्शन का मुख्य आधार है

सत्कार्यवाद के 2 भेद है।

1. परिणामवाद 2. विवर्तवाद

1. परिणामवाद : जब कारण से कार्य का निर्माण होता है तो कार्य में कारण का वास्तविक एवं तात्विक रूपांतरण होता है। यह परिवर्तन वास्तविक है।

उदा. दूध से दही का बनना, — यहां कार्य **(Effect)** (दही) वास्तविक रूपांतरण है कारण **(Cause)** (दूध) का।

समर्थक — सांख्य, योग, रामानुज

सांख्य दर्शन का 'प्रकृति परिणामवाद'— विश्व/जगत (कार्य), प्रकृति(कारण) का वास्तविक रूपांतरण है

2. विवर्तवाद : इसमें कारण का कार्य में वास्तविक रूपांतरण नहीं होता है, बल्कि हमें केवल आभास **(Appearance)** होता है। वस्तुतः कार्य कारण का आभास, विवर्तमात्र है।

उदा. रस्सी में सर्प का आभास,

समर्थक — शंकराचार्य

शंकराचार्य का ब्रह्म विवर्तवाद— जगत (कार्य—भ्रम) , ब्रह्म (कारण—सत्) का आभासी रूपांतरण है।

सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद की अवधारणा के आधार पर ही प्रकृति से जगत के रूप में वास्तविक रूपांतरण के क्रम में ही विकासवाद सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

## द्वैतवाद (Dualsim)

दर्शनशास्त्र में तत्वमीमांसा की व्याख्या के क्रम में परम तत्व व मूल तत्व के स्तर पर दो मूल तत्वों को मानने वाला सिद्धांत ही द्वैतवाद कहलाता है।

द्वैतवाद के अनुसार दो प्रकार के मूलतत्व है। इसमें प्रथम तत्व चेतन स्वरूप और दूसरा तत्व जड़ स्वरूप है।

सांख्य दर्शन में चेतन तत्व को पुरूष तथा जड़ तत्व को प्रकृति की संज्ञा दी है।

### ❖ प्रकृति का सिद्धांत:

- **यह सृष्टि का आदिकारण है और इसे प्रधान एवं अव्यक्त की संज्ञा दी गयी है। प्रकृति नित्य और निरपेक्ष है। प्रकृति का कोई कारण नहीं है वरन् यह स्वयं सभी कार्यों का मूल स्रोत / मूल कारण है।**
- **प्रकृति में तीन गुण होते हैं-**

1.**सत्व** 2. **रजस्** 3. **तमस्।**

**इन तीनों की साम्यावस्था का नाम ही प्रकृति है।प्रकृति के तीनों तत्त्व रस्सी की डोरियों की भाँति मिलकर पुरुष को बाँधते हैं, अतः इन्हें गुण कहते हैं अथवा पुरुष के उद्देश्य में सहायक होने के कारण ये गुण हैं।**

## सांख्य दर्शन का द्वैतवाद

| प्रकृति | पुरूष |
|---|---|
| जड (Unconscious)<br>एक<br>अविद्यात्मक<br>त्रिगुणात्मिका<br>विकरों को उत्पन्न करने वाला<br>जगत् का आदि कारण<br>बंधन का कारण<br>देश–काल में है<br>भोग्या है<br>सक्रिय<br>विषय<br>प्रसवधर्मी<br>Purposeless<br>Universal<br>Infinite | चेतन<br>अनेक<br>ज्ञान स्वरूप<br>त्रिगुणातीत<br>विकारों से परे है<br>जगत से सर्वथा परे<br>बंधन से मुक्त<br>देश–काल से परे<br>भोक्ता है<br>निष्क्रिय<br>विषयी |

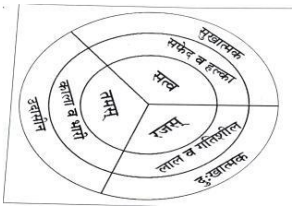


- **सत्व - प्रकाश और प्रसन्नता का** (Happiness) - White
- **रजस्- क्रियाशीलता का** (Passion, Activity) - Red
- **तमस्- स्थिरता अवरोध और मोह का प्रतीक है।** (Darkness, Inertness)-Black
- **सभी सांसारिक वस्तुओं में ये तीनों गुण दिखायी देते हैं क्योंकि वे सभी प्रकृति से उत्पन्न हुई हैं।**

**तीनों का अन्योन्याश्रित सम्बंध है। इन तीनों की तुलना तेल, बत्ती और दीपक से की गयी है जो परस्पर मिलकर प्रकाश उत्पन्न करते हैं।**

- **तीनों गुणों में जो प्रबल होता है उसी के अनुसार वस्तु का स्वरूप निर्धारित होता है।**
- **गुण निरन्तर परिवर्तित होते रहते हैं और गुणों में परिवर्तन दो प्रकार से होता है-**

**1. सरूप परिणाम: यह प्रलय की अवस्था, इसमें तीनों गुणों में साम्यावस्था होती है, इसमें किसी प्रकार की उत्पत्ति नहीं होती है। इसी को प्रकृति कहते हैं।**

**2. विरूप परिणाम: प्रलय काल की साम्यावस्था में जब तीन गुणों में से कोई एक गुण प्रबल हो जाता है तब सृष्टि के विकास का क्रम प्रारम्भ, गुणों में क्षोभ उत्पन्न जिससे साम्यावस्था उद्विग्न होती है। ऐसा तभी होता है जब प्रकृति, पुरुष के 'संसर्ग' में आती है। इसे ही विरूप परिणाम या परिवर्तन कहा जाता है।**

## विकास सिद्धांत (Theory of Evolution)

### ❖ जगत् की उत्पत्ति और विकास:

- **पुरुष के संसर्ग से प्रकृति के गुणों में क्षोभ उत्पन्न व गुणों की साम्यावस्था में विकृति अतः सृष्टि की उत्पत्ति होती है। सृष्टि का उद्देश्य पुरुष का हितसाधन करना है। पुरुष को भोग और कैवल्य दोनों के लिए प्रकृति की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर प्रकृति को ज्ञात होने के निमित्त पुरुष की आवश्यकता होती है।**

**त्रिगुणों में सर्वप्रथम रजस् गुण क्रियाशील होता है जिसके कारण अन्य उसे संतुलित और प्रतिसंतुलित करने के लिए अथवा परस्पर अधिकार करने हेतु उद्वेलित हो उठते हैं। तीनों गुणों के संयोग से विभिन्न सांसारिक वस्तुओं का निर्माण होता है।**

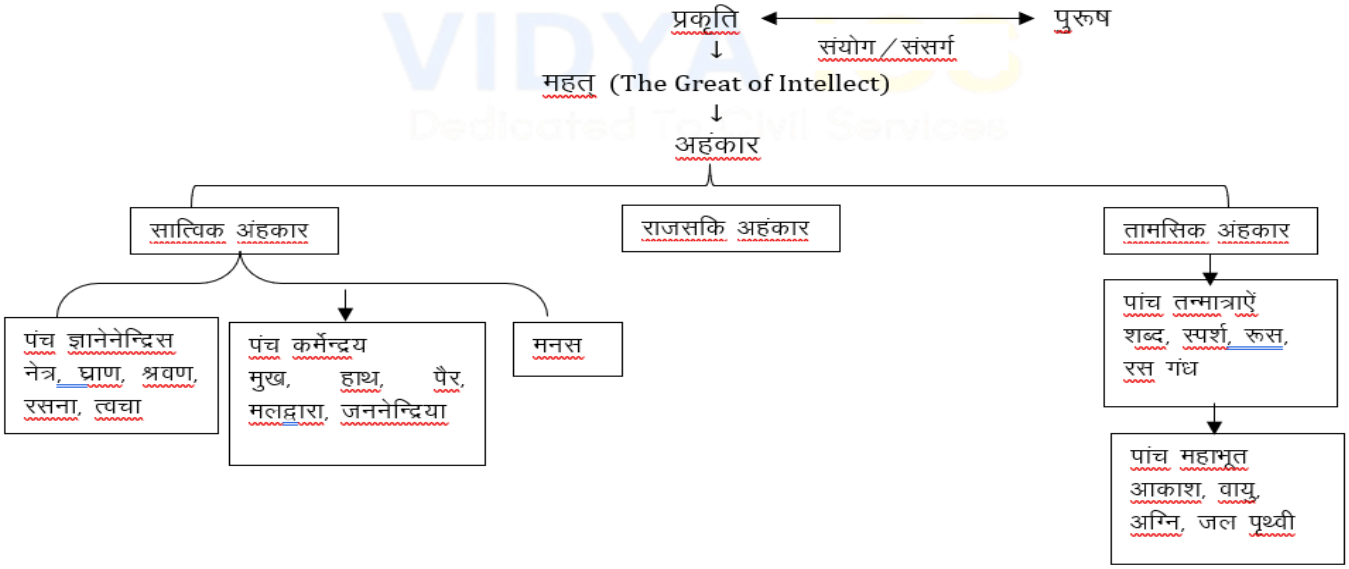


प्रकृति का पुरुष से संसर्ग होने से 'महत्' या 'बुद्धि' तत्त्व उत्पन्न होता है। यह प्रकृति का प्रथम विकार है। इसे महत्-तत्त्व भी कहते हैं। बुद्धि बाह्य जगत् की वस्तुओं का विशाल बीज है।

- जब सत्त्व गुण की प्रधानता होती है तब बुद्धि तत्त्व की उत्पत्ति होती है। बुद्धि ज्ञाता और ज्ञेय का भेद कराती है। जब बुद्धि में सत्त्व गुण की प्रधानता होती है तब सात्विक बुद्धि के फल होते हैं
- धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्यी परन्तु जब तमस् गुण की प्रधानता होती है तब तामसिक बुद्धि से अधर्म, अज्ञान, आसक्ति और अशक्ति की उत्पत्ति होती है।
- बुद्धि से अहंकार का जन्म होता है। बुद्धि में 'मैं' और 'मेरा' का भाव अहंकार है। अहंकार का कार्य अभियान को उत्पन्न करना होता है। पुरुष भ्रमवश अपना तादात्म्य अहंकार से स्थापित कर लेता है और स्वयं को कर्ता, भोक्ता, कामी और स्वामी समझने लगता है।

**अहंकार के तीन भेद हैं**

1. सात्विक 2. तामस 3. राजस

**1. सात्विक : इसमें सत्व की प्रधानता होती है जिससे मन, पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है।**
**पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है- आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।**
**पाँच कर्मेन्द्रियाँ- मुख, हाथ, पैर, मलद्वार और जननेंद्रिया**

**2. तामस : इसमें तमस् की प्रधानता होती है। इससे पाँच तन्मात्रों की उत्पत्ति होती है। तन्मात्र (Subtle essence) का अर्थ है पंचमहाभूतों का मूल सूक्ष्म रूप।**
**पाँच तन्मात्र हैं - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।**
**इन्हीं पंच तन्मात्रों से पंचमहाभूतों की उत्पत्ति होती है- आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी एवं इसकी इनके गुण क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध हैं।**

**3. राजस : इसमें रजस् की प्रधानता होती है। यह सात्विक और तामस को गति प्रदान करता है।**
सांख्य दर्शन का विकासवाद प्रकृति के कुल 23 परिणामों को प्रस्तुत करता है –
महत् (1), अंहकार (1), इंद्रिया (11), पंचतन्मात्र (5), पंचमहाभूत (5),
**इस तरह यह 24 तत्त्वों का खेल मात्र है। पुरुष को मिलाकर सांख्य मत ने 25 तत्वों को स्वीकार किया । पुरुष इस विकास की परिधि से बाहर रहकर इसका द्रष्टामात्र होता है।'पुरुष' न तो कारण है और न ही कार्य। 'प्रकृति' कारण मात्र है। महत्, अहंकार और पाँच तन्मात्र कार्य एवं कारण दोनों ही ही हैं। पंच महाभूत और मन कार्य मात्र होते हैं।**

इस प्रकार सृष्टि का विकास प्रकृति (अत्यन्त सूक्ष्म तत्व) से प्रारम्भ होकर पंच महाभूतों (स्थूल तत्व) पर समाप्त होता है।

❖ **बंधन और मोक्ष (Bondage & Salvation) :**

पुरुष स्वतंत्र और शुद्ध चैतन्यस्वरूप है। यह देश, काल और कारण से सीमातीत एवं निर्गुण और निष्क्रिय है। शारीरिक और मानसिक विकार इसको प्रभावित नहीं करते हैं। सुख और दुःख मन के विषय हैं, पुरुष के नहीं। किन्तु अज्ञान के वशीभूत हो पुरुष स्वयं का तादात्म्य प्राकृतिक विकारों; यथा- बुद्धि और अहंकार आदि, से कर बैठता है। यह स्वयं को ही शरीर, इन्द्रिय, मन और बुद्धि मान लेता है। पुरुष स्वयं को कर्त्ता और भोक्ता मान लेता है जिससे नाना प्रकार के दुःखों को प्राप्त होता है।

सांख्य मत में संसार दुःखों से परिपूर्ण माना गया है। दुःख तीन प्रकार के बताये गये हैं (Suffering):

1) आध्यात्मिक दुःख (Body & Mind)- व्यक्तिगत कष्ट
2) आधिभौतिक दुःख (By other Being)- वस्तुगत द्वारा
3) आधिदैविक दुःख (Nature)- भूतप्रेत, देवता द्वारा

अविवेक या अज्ञान बन्धन का कारण है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य इन तीनों दुःखों से छुटकारा प्राप्त करना है। मोक्ष का अर्थ है सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति। यही अपवर्ग अथवा पुरुषार्थ है। दुःखों और बंधन से मुक्ति का एकमात्र साधन 'विवेक ज्ञान' है।

सांख्यकारिका में कहा गया है-

विवेक ज्ञान का अर्थ है पुरुष का स्वयं को प्रकृति के विकारों से अलग समझ लेना। विवेक ज्ञान की प्राप्ति निरन्तर साधना से होती है। इस साधना का विवरण 'योगदर्शन' में मिलता है और यह सांख्य दर्शन का व्यावहारिक पक्ष है।

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति का उल्लेख मिलता है- 1. जीवनमुक्ति 2. विदेहमुक्ति

सांख्य में मोक्ष का अर्थ है सभी प्रकार के दुःखों से मुक्ति और इसमें पुरुष अपने अपने शुद्ध चैतन्यस्वरूप को प्राप्त होता है।

❖ **ईश्वर की सत्ता का खण्डन (तर्क)/अनीश्वरवादी सांख्य (Atheism) :**

- यह मत ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता था। उसके अनुसार: यह कार्य-कारण श्रृंखला का परिणाम है जिसके विकास के लिये प्रकृति और पुरुष ही समर्थ है। इसमें ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है।
- अगर ईश्वर चेतन है तो चेतन से जड़ तत्व (प्रकृति) की रचना कैसे
- सत् (ईश्वर) का प्रमाण कैसे–पांच ज्ञान इंद्रियों से ईश्वर का ज्ञान संभव नहीं।
- विरोधाभास–ईश्वर (चेतन तत्व) सुख/पवित्र है तो फिर प्रकृति के पास लाकर शरीर रचना में दुख क्यों देना चाहतें हैं।
- कर्मवाद–सुख, दुःख का कारण कर्म ही है तो ईश्वर की क्या भूमिका है।
- आत्मावाद–अगर आत्मा अमर, अजन्मा है तो फिर ईश्वर ने इसकी रचना कब और क्यों की।

❖ **आलोचना/दोष (Critism) :**

- जगत का प्रयोजन अहेतु
- संयोग/कैसे–लक्ष्य है जंगल से बाहर आना–जब दो लंगडे + अंधे दोनों चेतन है। जबकि प्रकृति तो अचेतन है।
- विकास क्रम निर्धारित होने का प्रमाण नहीं है।
- एका–एक /अचानक – प्रलय और सृष्टि विकास कैसे शुरू होता है।

❖ **महत्व व निष्कर्ष (Conclusion) :**

सांसारिक दुःखों की निवृत्ति की जिज्ञासा से प्रारम्भ होना इसकी व्यावहारिकता, यथार्थता का प्रतीक है।
इस दर्शन ने भारत में उद्विकास का प्रथम प्राचीनत तार्किक प्रयास किया।

# योग दर्शन (Yoga Darshan)

- परिचय
  - प्रणेता/रचना –योग का अर्थ
  - सांख्य-योग की समानताऐं
  - सिद्धांत (तत्व मीमांसा)
    विकासवाद → द्वैतवादी ,ईश्वरवादी→ सत्कार्यवाद
  - ज्ञान मीमांसा (3 प्रमाण)
- योग दर्शन –चित्त
  - चित्तवृत्ति (5)
  - चित्तभूमि (मन की 5 अवस्थाऐं)
  - क्लेश (5) विवेचन
- योग का आष्टांग मार्ग
- महत्व व निष्कर्ष

## ❖ परिचय (Introduction):

- योग,सांख्यदर्शन का पूरक है जो कि द्वैतवादी, विकासवादी, सत्कार्यवादी भी है इसे प्रायः ईश्वरवादी सांख्य भी कहते है

## ❖ प्रणेता (Founder):

**महर्षि पतंजलि "योग के जनक" व इनकी कृति 'योगसूत्र' है।**

**योग शब्द का अर्थ (Meaning) :**

- **शाब्दिक - मिलन अर्थात् आत्मा का परमात्मा के साथ मिल जाना।**
- **यहां योग का अर्थ जोड़ना नहीं अपितु अलग करना है।**
- **पतंजलि के अनुसार "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् चित्तवृत्ति का निरोध योग है।**

## ❖ सांख्य व योग दर्शन की समानताऐं (Similarity) :

- योग व सांख्य दर्शन दोनों ही द्वैतवादी, सत्कार्यवाद को स्वीकार करते हैं।
- योग व सांख्य विकासवाद के सिद्धांत को अपनाते है।
- सांख्य जहां 25 तत्वों को स्वीकार करता है, वहीं योग दर्शन इन 25 तत्वों के अलावा 26वें तत्व के रूप में ईश्वर को मानता है। अर्थात् इस योग 26 तत्वों को स्वीकार करता है।
- योग दर्शन, सांख्य की तत्वमीमांसा को पूर्णतः स्वीकार करता है, किन्तु ईश्वर को जोड़ देता है। इसलिये इसे ईश्वरवादी संख्या भी कहते है।
- योग भी सांख्य की तरह तीन प्रकार (अध्यात्मिक दुःख, आधिभौतिक दुःख व आधिदैविक) के दुःखों को मानता है।
- मोक्ष का अर्थ इन तीनों से क्षुटकारा पाना होता है।
- **इसमें सांख्य के 'विवेक ज्ञान' को भी मान्यता है।**

## ❖ योग दर्शन :

**योग दर्शन कैवल्य प्राप्ति के लिए 'व्यावहारिक मार्ग' का निर्देशन करता है।**

- **योगसूत्र के अनुसार "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।**
- **पुरुष के चैतन्य का प्रकाश, जो वृत्ति को प्रकाशित करता है, 'ज्ञान' कहलाता है।**
- **पुरुष मूलतः शुद्ध चैतन्य स्वरूप है और प्रकृति द्वारा बाधित नहीं है। परन्तु भ्रमवश वह अपना समीकरण चित्त में अपने प्रतिबिम्ब से स्थापित कर लेता है और इसमें परिवर्तन का आभास होने लगता है।**

VIDYA ICS
Dedicated to Civil Services

➢ जब पुरुष स्वयं को पूर्ण निरपेक्ष और निष्क्रिय द्रष्टा मात्र समझ लेता है, तब चित्त के प्रतिबिम्ब के साथ उसका सम्बन्ध टूट जाता है जिससे प्रतिबिम्ब समाप्त हो जाता है और चित्तवृत्ति निरुद्ध हो जाती है। चित्तवृत्ति के इसी निरोध को योग कहते हैं जिसमें पुरुष अपने विशुद्ध चैतन्य रूप में आ जाता है।

## ❖ चित्त और उसकी वृत्तियाँ

➢ **चित्त (Chitta)** → से तात्पर्य बुद्धि, अहंकार और मन के सम्मिलित रूप से है। चित्त प्रकृति का प्रथम विकार है

➢ इसमें सत्व तत्त्व की प्रधानता रहती है। चित्त स्वभाव से जड़ है, परन्तु पुरुष (आत्मा) से निकटता होने के कारण यह उसके प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है और चेतनता का आभास कराता है।

### चित्तवृत्ति :

➢ जब चित्त का किसी विषय से सम्पर्क होता है तो यह उसी का आकार ग्रहण कर लेता है और इसी स्वरूपपरिवर्तन को 'वृत्ति' कहते हैं। चित्त का बाह्य विषयों को सत्य मानकर मन में विषय का आकार बना लेना ही चित्तवृत्ति है।

➢ चित्त की पाँच वृत्तियाँ हैं-

1) **प्रमाण** 2)**विपर्यय** 3)**विकल्प** 4)**निद्रा** 5)**स्मृति**

1. **प्रमाण (सत्य ज्ञान)**: जिसे द्वारा यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है, उसे ही प्रमाण कहते है।

**प्रमाण के तीन भेद हैं-** 1. **प्रत्यक्ष,** 2. **अनुमान** 3. **शब्द**

2. **विपर्यय**: विपर्यय का अर्थ है भ्रांत या झूठा ज्ञान

**जैसे-** रस्सी में सर्प का ज्ञान

3. **विकल्प**: यह शब्द ज्ञान से उत्पन्न होने वाली वृत्ति है। इससे हमें ऐसे विषय का ज्ञान होता है, जिसका इस संसार में अभाव होता है। **अर्थात् कल्पना**

**जैसे- आकाश-कुसुम।**

4. **निद्रा**: सुषुत अवस्था के समय चित्त जिन विषयों से एकाकार होता है, उन्हें निद्रा में शामिल किया जाता है **अर्थात् मन के विकार से है।**

5. **स्मृति**: अतीत के किसी अनुभव का यथातथ्य स्मरण हो आने पर चित्त उसी का आकार ग्रहण करता है।

**Note**: इन पांच वृत्तियों का निरोध योग दर्शन का लक्ष्य है, क्योंकि इसी से मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

### चित्तभूमि (मन की 5 अवस्थाऐं) Level :

**योग दर्शन में चित्त के विवेचन के अन्तर्गत चितभूमि की व्याख्या की गई है। चितभूमि का अर्थ मानसिक अवस्थाओं के विभिन्न स्तरों से है। व्यास के अनुसार चित्त की 05 भूमिया है।**

1. **क्षिप्त**: ऐसी अवस्था है, जहां रजस् गुण की प्रधानता, जिससे चित्त चंचल एवं बैचेन भटकता रहता है।
2. **मूड़**: वह अवस्था है, जहां तमम् गुण की प्रधानता यहां निद्रा, आलस्य एवं निष्क्रियता का बोलबाला रहता है।
3. **विक्षिप्त**: यह क्षिप्त एवं मूढ़ के मध्य की अवस्था है। इसमें रजस् गुण अपने आंशिक रूप में विद्यमान, चित्त स्थिरता अपने आंशिक रूप में उपस्थित रहती है।
4. **एकाग्र**: यहां सत्व गुण की प्रधानता, ज्ञान का प्रकाश रहता है। चित्त अपने विषय पर अधिक देर तक ध्यान केन्द्रित रखता है। यहां चित्तवृत्तियों का पूर्ण निरोध नहीं हो पाता है। यह अवस्था योग के लिए मार्ग प्रशस्त करती है।
5. **निरुद्ध**: चित्त की पांचवीं अवस्था है। इस अवस्था में चित्त की समस्त वृत्तियों का निरोध हो जाता है। इस अवस्था में चित्त को स्थिरता प्राप्त होती है। यह अवस्था योग के अनुकूल वातावरण तैयार करती है।

## बंधन (Bondage)

- पुरुष का चित्त की वृत्तियों या विकारों के साथ भ्रमवश अपना तादात्म्य स्थापित कर लेना बन्धन है।
- इस अवस्था में पुरुष अपने को कर्ता, भोक्ता आदि समझते लगता है। पुरुष को प्रतीत होने लगता है कि पुरुष का जन्म तथा मरण होता है और वही नाना प्रकार के दुःखों का भोक्ता है।

### क्लेश/दुःख विवेचन :

योग दर्शन के अनुसार जब पुरुष का प्रतिबिम्ब विषयाकार चित्त पर पड़ता है, तो वह उसे अपनी अवस्था मान लेता है। बंधन की इस अवस्था में जीव जन्म-मरण चक्र में बंधकर जिन दुःखात्मक स्थितियों का भोग करता है, उन्हें ही क्लेश कहा गया है। चित्तवृत्ति के निरोध के बाद मोक्ष की प्राप्ति से क्लेश की समाप्ति होती है।
योग दर्शन में पांच प्रकार के क्लेश बताए गए हैं-

**दुःख पाँच प्रकार के हैं**: अविद्या, अस्मिता (अहंकार), राग (आसक्ति), द्वेष (ईर्ष्या) और अभिनिवेश (मृत्यु का भय)।

1. **अविद्या (Delusion):** अनित्य को नित्य, अशुचि को शुचि, दुःख को सुख ,अनात्मा को आत्मा मानना ही अविद्या है
2. **अस्मिता**(Egoism) : दृक् शक्ति पुरुष तथा दर्शन शक्ति बुद्धि दोनों परस्पर भिन्न है किन्तु इन दोनों को एक मानना ही अस्मिता है।
3. **राग** (Attachment): सुख की अत्यन्त इच्छा को राग कहते है।
4. **द्वेष** (Repulsion): दुःख के साधनों में जो क्रोध हो वही द्वेष है।
5. **अभिनिवेश** (Will to Live): अभिनिवेश अर्थात् मृत्यु भय। यह जीवमात्र का एक स्वभाविक गुण है।

## मुक्ति (Salvation/Liberation)

विवेक ज्ञान के उदय होने से पुरुष को स्वयं और प्रकृति के भेद का ज्ञान हो जाता है जिससे चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है। योग का उद्देश्य इसी अवस्था को प्राप्त करना है।
उक्त दुःखो / क्लेशों से धर्म, अधर्म बनते हैं। पश्चात् उन्हीं से जाति, आयु तथा भोग उत्पन्न होते है और पश्चात् उनसे सुख और दुःख होता है। क्लेशों से मुक्त होने तथा चित्त को समाहित करने के लिए योग दर्शन में अष्टांगिक योग का मार्ग प्रस्तुत किया है।

## अष्टांग योग (Ashtanga Yoga)

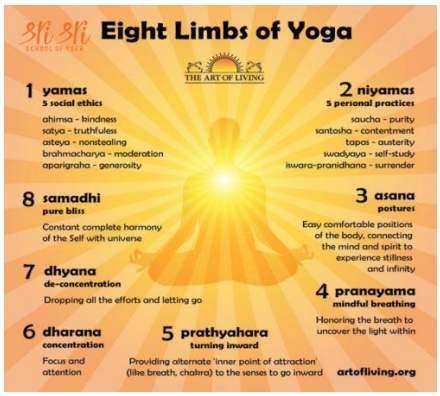


योग शरीर, मन और इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने का उपदेश करता है।
इन्द्रियजन्य राग एवं आसक्ति मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में बाधक हैं।
इनपर विजय पाने का साधन 'अष्टांग योग' है।
"यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणा ध्यानसमाधयोष्टावंगानि।"
क्लेशों से मुक्त होने तथा चित्त को समाहित करने के लिए
योग के आठ साधनों का अभ्यास योग दर्शन में आवश्यक बताया है।
ये है : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

बहिरंग साधन

1. **यम :** अन्तःकरण की शुद्धि को यम कहते हैं अर्थात् कायिक, वाचिक तथा मानसिक संयम यम कहलाता है। ये पाँच है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रहमचर्य और अपरिग्रह।
2. **नियम :** साधना के लिए वातावरण तैयार करने के लिए बाह्य शुद्धि को ही नियम कहते है। ये भी पाँच है- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान।
3. **आसन :** साधना के लिए स्थिर और सुखपूर्वक की जाने वाली आकृति विशेष को आसन कहते है।
4. **प्राणायाम :** प्राणों के विस्तार का आयाम अर्थात् श्वास तथा प्रश्वास की गति के विच्छेद को प्राणायाम कहते है।

**इसके तीन आयाम है:- पूरक, रेचक और कुम्भका**

5. **प्रत्याहार : अपने-अपने विषयों से इन्द्रियों को हटाकर अन्तर्मुखी करने की क्रिया को प्रत्याहार कहते है।**

अंतरग साधन

6. **धारणा : चित्त को किसी स्थान विशेष में स्थिर कर देना धारणा है।**
7. **ध्यान : किसी वस्तु विशेष में चित्त की निरन्तर एकाग्रता ध्यान कहलाता है।**
8. **समाधि : जब ध्यान ही ध्येय के आकार में भासित हो और अपने स्वरूप को छोड़ दे तो वह स्थिति समाधि कहलाती है। समाधि की स्थिति में ध्यान और ध्याता का भान नहीं होता, केवल ध्येय रहता है अर्थात् ध्याता, ध्यान तथा ध्येय तीनों की एक सी प्रतीति होती है।**

## ईश्वर

**योग दर्शन में ईश्वर की सत्ता स्वीकृत है। उसके विषय में योगसूत्र कथन है-**

**अर्थात् ईश्वर वह पुरुष विशेष है जो क्लेश, कर्म, परिणाम, आशय (संस्कार) आदि से अप्रभावित रहता है। ईश्वर नित्य, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। वह सर्वविधि परिपूर्ण है। ईश्वर का प्रतीक "ओइम्" है। ईश्वर की भक्ति समाधि प्राप्ति करने का साधन है।**

## निष्कर्ष (Conclusion):

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाना योग दर्शन की वैश्विक लोकप्रियता व महत्तता को दर्शाता है।
वर्तमान में विश्व भर में योग दर्शन के आष्टांटिक योग के 'आसन व प्राणायाम' को जीवन का हिस्सा बना रहे है। जिससे वैज्ञानिक तौर पर शारीरिक व मानसिक विकारों का निराकरण संभव हुआ। योग दर्शन, कैवल्य प्राप्ति हेतु एवं आत्मशुद्धि और आत्मनियंत्रण का व्यवाहारिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# न्याय दर्शन (Naya Darshan)

- परिचय
  - ➢ न्याय का अर्थ
  - ➢ प्रवर्तक, साहित्य एवं विकास
- ज्ञान मीमांसा प्रमाण विचार
- न्याय का कारणता सिद्धांत–असत्कार्यवाद
- महत्व व योगदान

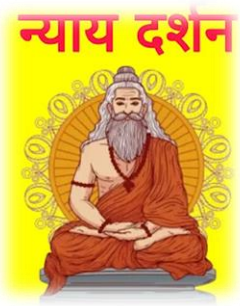


❖ **परिचय (Introduction) :**

**न्याय दर्शन भारतीय आस्तिक षड्दर्शनों में एक अत्यन्त प्राचीन** तथा **जीवन्त दर्शन है।**

- ➢ भारतीय तर्कशास्त्र का प्रतितिधत्व न्याय दर्शन करता है। इसमें तर्कशास्त्र एवं ज्ञानमीमांसा पर अत्यधिक जोर दिया।
- ➢ न्याय दर्शन का लक्ष्य भी मोक्ष की प्राप्ति है अर्थात् दुःखों का विनाश।
- ➢ प्रमाण, प्रमेय व 16 पदार्थों का ज्ञान होने पर दुःख एवं उसके कारणों की समूल परम्परा का नाश होता है।
- ➢ न्याय दर्शन का मुख्य विषय उसकी ज्ञानमीमांसा है।

❖ **न्याय शब्द का अर्थ (Meaning) :**

- ➢ **'नीयते अनेन इति न्यायः वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मस्तिष्क एक निष्कर्ष पर पहुँचे, न्याय है। किन्तु उचित निष्कर्ष पर पहुँचना तो तर्क करना है। (The Science of Logic and Epistemology)**

❖ **वस्तुतः न्याय दर्शन मुख्यतः तर्क विद्या का प्रतिपादन करने वाला ही दर्शन है। इसीलिए इसे तर्कशास्त्र कहते एवं प्रमाणशास्त्र भी कहते है क्योंकि इसमें प्रमाणों के द्वारा किसी विषय की समीक्षा की जाती** है

❖ **प्रवर्तक, साहित्य एवं विकास (Literature):**

महर्षि गौतम का 'न्यायसूत्र' इस दर्शन का आधारभूत ग्रंथ है। इन टीकाकारों में वात्सायन मिश्र एवं उदयनाचार्य के नाम उल्लेखनीय है। गौतम ऋषि के नाम पर अक्षपाद दर्शन भी कहते है।

❖ **ध्येय :**

**तत्त्वज्ञान से मोक्ष प्राप्ति, निःश्रेयस् या परम तत्व की प्राप्ति के लिए प्रमाण और प्रमेय का ज्ञान आवश्यक है किन्तु जब तक संशय, प्रयोजन दृष्टांत, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, आदि का ज्ञान नहीं होगा तब तक प्रमेय का ज्ञान अच्छी तरह से नहीं हो**

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## ज्ञान मीमांसा (Epistemology)

**प्रमा (Real Knowledge)** : यथार्थ ज्ञान या अनुभाव को प्रमा कहते है।
यथार्थ ज्ञान का अर्थ है – जो वस्तु जैसी है, उसको वैसा ही जानना।
उदा. रस्सी को रस्सी ही समझना।

**अप्रमा (Delusion)** : इसमें जो वस्तु जैसी है, उसको वैसा न समझकर किसी अन्य रूप में समझ लेना ही अप्रेमा है।
उदा. रस्सी को सांप समझ लेना।

❖ **'अयथार्थ ज्ञान' :**

**न्याय में संशय, विपरीत ज्ञान तथा तर्क, इन तीनों को 'अयथार्थ ज्ञान' माना गया है। इन तीनों से निश्चित ज्ञान नहीं होता।**

❖ **यथार्थ ज्ञान : यथार्थ ज्ञान चार प्रकार के होते है- प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण, उपमान प्रमाण तथा शब्द प्रमाण।**

❖ **प्रत्यक्ष प्रमाण :**

- ज्ञानेन्द्रिय और किसी वस्तु के सन्निकर्ष से साक्षात् जो यथार्थ अनुभव उत्पन्न हो उसे 'प्रत्यक्ष' ज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान को उत्पन्न करने में जो सबसे अधिक साधक हो, वही 'प्रत्यक्ष प्रमाण' है। वस्त
- जैसे किसी वस्तु का साक्षात् अनुभव तभी होता है जब हमारी आँखे अर्थात् चक्षुरूपी ज्ञानेन्द्रिय का उस वस्तु के साथ साक्षात् सम्बन्ध हो।
- इस सम्बन्ध से उत्पन्न जो ज्ञान हो उसे 'चाक्षुष प्रत्यक्ष' कहते हैं।
- इसी प्रकार घ्राणेन्द्रिय के सम्बन्ध में 'घ्राणज प्रत्यक्ष' कहे जाते है। इसी प्रकार 'मन' भी एक इन्द्रिय है।

❖ **अनुमान प्रमाण (Inference)**

- जिस वस्तु के साथ इन्द्रियों का सन्निकर्ष न हो वह 'परोक्ष कहलाती है। जिस प्रक्रिया के द्वारा परोक्ष वस्तु का ज्ञान हो अनुमान कहते हैं। जैसे रसोईघर में 'जहाँ धुआँ है, वहाँ आग है',
- इसके बाद वह पुरुष जब कभी जंगल में जाता है तो उसे पर्वत से निकलता हुआ धुआँ दीख पड़ता है तब उसे स्मरण होता है कि 'जहाँ धुआँ हो, वहाँ आग होती है। यही अनुमान प्रमाण है।

❖ **उपमान प्रमाण (Analogy)**

किसी संज्ञा शब्द का उससे बोध कराने वाले पदार्थ के साथ सम्बन्ध के ज्ञान को 'उपमान' कहते है। जैसे गाय और नीलगाय इन दोनों में जो सादृश्य है उसी के आधार पर यह उपमान निर्भर है।

❖ **शब्द प्रमाण (Testimony/Authority)**

महान पुरुष सर्वमान्य पुरुष के बचन आप्त पुरुष के वाक्य को शब्द प्रमाण कहते हैं। तत्त्व को यथार्थ देखने वाले या यथार्थ कहने वाले 'आप्त' कहे जाते हैं।

उपर्युक्त चार प्रमाण न्याय दर्शन में माने जाते हैं। इन्हीं के द्वारा सभी पदार्थों का यथार्थ ज्ञान होता है। पदार्थों का यथार्थ ज्ञान होने से ही तत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है और तभी दुःखों से सर्वथा मुक्ति मिलती है। यही दुःखों की चरम निवृत्ति या परमसुख की प्राप्ति न्याय दर्शन का परम ध्येय है। इसी के लिए प्रमाणों का ज्ञान आवश्यक है।

## प्रमाण विचार

❖ **प्रमाण**

- मन तथा चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान ही 'प्रमाण' है।
- न्याय दर्शन में प्रमेयों को जानने के लिए चार प्रमाण बताए है. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा शब्द प्रमाण के द्वारा जिन पदार्थों पर यथार्थ ज्ञान हो वे ही प्रमेय कहे जाते है अर्थात् जो पदार्थ यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के योग्य हो वे प्रमेय है।
- आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मनस्, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुःख तथा अपवर्ग ये 12 प्रमेय न्याय दर्शन में माने गये है।

1. **आत्मा** : ज्ञान का जो अधिकरण हो, वही आत्मा है। सभी का द्रष्टा, सभी का भोक्ता, सर्वज्ञ नित्य तथा सर्वव्यापक 'आत्मा' है। बाह्य इन्द्रियों के द्वारा 'आत्मा' का प्रत्यक्ष नहीं होता। मानसिक प्रत्यक्ष भी सभी नहीं मानते। अतः इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख तथा ज्ञान रूप लिंग (हेतु) के द्वारा आत्मा के पृथक् अस्तित्व का अनुमान किया जाता है। 'आत्मा' शब्द ही यहाँ जीवात्मा है और यही 'बद्ध आत्मा' है।
2. **शरीर** : न्याय दर्शन के अनुसार शरीर दूसरा प्रमेय है इस की प्राप्ति को दूर करने के लिए जो क्रिया किया जाए, उसे चेष्टा कहते हैं। जिसमें यह चेष्टा रहे या जिसमें इन्द्रियाँ रहे या जिसमें जीवात्मा को सुख-दुःख का अनुभव हो वही शरीर है। इसे 'भोगायतन' भी कहते है।

3. **इन्द्रिय** : बाह्य जगत् के रूप. रस, गंध, स्पर्श तथा शब्द इन विषयों का जिससे ज्ञान हो, उसे ही इन्द्रिय कहते हैं। इन्द्रियाँ दो होती है, बाह्येन्द्रिय तथा अन्त्ररिन्द्रिय।

4. **अर्थ** : रूप, रस, गन्ध, स्पर्श तथा शब्द ये पाँच न्याय दर्शन में अर्थ कहलाते हैं। ये क्रमशः तेजस्, जल, पृथ्वी, वायु तथा आकाश के 'विशेष गुण' है।

5. **बुद्धि** : न्याय दर्शन में बुद्धि उपलब्धि तथा ज्ञान ये तीनों पर्याय माने गए है।

6. **मनस्** : सुख, दुख, इच्छा, द्वेष आदि 'आत्मा' के गुणों का ज्ञान 'मन' के द्वारा होता है। 'मन' अणु-परिमाण का है। 'मन' नित्य है। मरने के समय यह शरीर से बाहर निकल जाता है जिसे उपसर्पण कर्म कहते है।

7. **प्रवृत्ति** : कायिक, वाचिक तथा मानसिक जो क्रिया होती है उसके आरम्भ को प्रवृत्ति कहते हैं।

8. **दोष** : जिसके कारण प्रवृत्ति हो वही दोष है राग, द्वेष तथा मोह के कारण हमारी सारी प्रवृत्तियाँ होती है इसलिए राग, द्वेष तथा मोह को 'दोष' कहते हैं।

9. **प्रेत्यभाव** : मरने के पश्चात् दूसरे शरीर में जीवात्मा की स्थिति को प्रेत्यभाव कहते है। परलोक का होना इसी से प्रमाणित हो जाता है। इसी को फिर से जीवात्मा की उत्पत्ति भी कहते हैं।

10. **फल** सुख और दुःख का संवेदन होना ही 'फल' है। अपने अनुकूल भाव को 'सुख' तथा प्रतिकूल को 'दुःख' कहते हैं।

11. **दुःख** : इसे ही पीड़ा, ताप, क्लेश आदि भी कहते है।

12. **अपवर्ग** : 'अपवर्ग' मोक्ष को कहते हैं। अर्थात् जीवात्मा के 21 प्रकार के दुःख तथा दुःख के कारण जब नष्ट हो जाएं तभी, वह जीवात्मा मुक्त कहलाती है अर्थात् 21 प्रकार के दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति ही 'मोक्ष' है।

व्यवहारिक दृष्टिकोण से न्याय दर्शन में 16 पदार्थों का ज्ञान सब तरह से प्राप्त करने से परमतत्व की प्राप्ति होती है।

## न्याय का कारणता सिद्धान्त : असत्कर्यवाद
## (Causality Theory)

भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदाय तत्वमीमांसा विवेचन के क्रम में कारणता सिद्धांत को स्वीकार करते है।
कारण एवं कार्य में संबंध के विषय में न्याय दर्शन का सिद्धान्त असत्कार्यवाद कहलाता है। इसके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व अपने कारण में असत् या अविद्यमान रहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कार्य का आरंभ होता है, इसी कारण इसे आरंभवाद भी कहते हैं। यह सांख्य दर्शन के सत्कार्यवाद का विरोध करता है,

**कारण के प्रकार** - 3

1. **समवायि कारण** - यह वह सामग्री (कारण) है, जिससे कार्य उत्पन्न होता है। वस्तुतः न्याय दर्शन में उपादान कारण को ही समवायि कारण माना जाता है।

2. **असमवायि कारण** - असमवायि कारण उस गुण या कर्म को कहते हैं, जो कार्य की उत्पति में सहायक रहता है। कपड़े का निर्माण सूतों के संयोग से होता है। यही सूतों का संयोग (कर्म) कपड़े का असमवायि कारण है।

3. **निमित्त कारण** - इसका संबंध उस शक्ति से है, जो समवायि कारण से कार्य उत्पन्न करता है। जैसे जुलाहा, कुम्भकार।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# वैशेषिक दर्शन (Vaisheshik Darshsn

- परिचय
  - वैशेषिक का नामकरण
  - न्याय वैशेषिक समान तंत्र व अंतर
- तत्वमीमांसा (पदार्थ)
  - अर्थ
  - वर्गीकरण — भाव (6); अभाव (7वां)
- द्रव्य (9)
  - पंचमहाभूत , दिक् एवं काल, आत्मा ,मन
- ज्ञानमीमांसा (2 प्रमाण)
- परमाणुवाद
- महत्व व योगदान

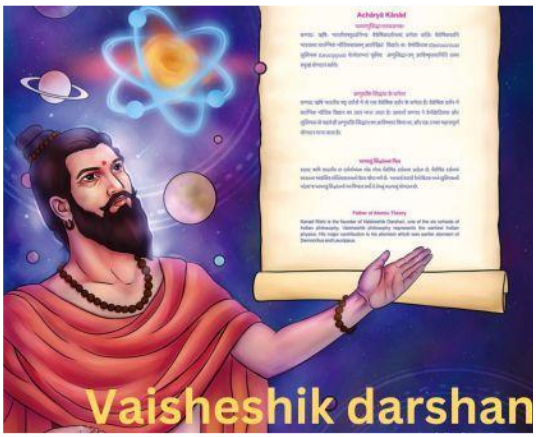


## ❖ परिचय (Introduction) :

- वैशेषिक एक आस्तिक व ईश्वरवादी, असत्कार्यवादी एवं परमाणुवादी दर्शन है।
- **न्याय और वैशेषिक दर्शन परस्पर सम्बन्धित हैं। ये दोनों वस्तुवादी (Realistic) दर्शन हैं।**

## ❖ प्रणेता :

**प्रवर्तक- महर्षि कणाद हैं। इनका वास्तविक नाम 'उलूक था। इसलिये औलूक्य दर्शन भी कहते है। उनकी कृत 'वैशेषिक-सूत्र' इस दर्शन का मूल प्रामाणिक ग्रन्थ है।**

**महर्षि कणाद के अन्य नाम : कणभुक, उलूक और काश्यप। प्रशस्तपाद कृत 'पदार्थधर्मसंग्रह' वैशेषिक सूत्र पर टीका है। उदयन और श्रीधर इसके अन्य टीकाकार हैं।**

**वैशेषिक शब्द का अर्थ : "विशेष पदार्थमधिकृत्य कृतं शास्त्रं वैशेषिकम्" अर्थात् विशेष नामक पदार्थ को मूल मानकर प्रवृत्त होने के कारण इस शास्त्र का नाम वैशेषिक है**

## न्याय वैशेषिक में समानताऐं व अंतर

**न्याय एवं वैशेषिक दर्शन में इतनी घनिष्ठता है कि दोनों को समान तंत्र कहा जाता है तथा न्याय-वैशेषिक दर्शन के संयुक्त नाम पुकारा जाता है। दोनों को समान तंत्र कहने के निम्नलिखित कारण है**

1) **वैशेषिक तत्वमीमांसा न्याय दर्शन के प्रमाण शास्त्र पर आधारित है। न्याय दर्शन भी वैशेषिक तत्वमीमांसा को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं।**
2) **दोनों ईश्वरवादी दर्शन हैं। नैयायिकों द्वारा दिए गए ईश्वर अस्तित्व की सिद्धि के प्रमाणों को वैशेषिक भी अपनाता है।**
3) **विश्व की उत्पत्ति के विषय में दोनों ही दर्शन परमाणुवादी विचार अपनाते हैं। वैशेषिक दर्शन के विश्व संबंधी विचारों के नैयायिक बिना किसी संशोधन के ग्रहण कर लेते हैं।**
4) **आत्मा के स्वरूप को लेकर भी दोनों दर्शनों में कोई अन्तर नहीं है। दोनों आत्मा को मूलतः अचेतन मानते हैं। इनके अनुसार चैतन्यु आत्मा का आगंतुक गुण है।**
5) **दोनों ही दर्शन मोक्ष के स्वरूप को लेकर समान विचार रखते हैं। दोनों के ही अनुसार मोक्ष एक निषेधात्मक अवस्था है, जहां दुःखों के पूर्ण विनाश के साथ भानन्द का भी पूर्ण अभाव रहता है।**
6) **दोनों ही दर्शन कारण-कार्य सिद्धान्त के विषय में समान विचार रखते हैं। दोनों ही असत्कार्यवाद को अपनाते हैं**

दोनों दर्शनों में उपर्युक्त समानताओं के बावजूद कुछ अन्तर पाए जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं

1. न्याय दर्शन में प्रमाणमीमांसा प्रधान है, जबकि वैशेषिक दर्शन में तत्वमीमांसा।
2. न्याय दर्शन चार प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द व उपमान) को स्वीकार करता है। इसके विपरीत वैशेषिक दर्शन केवल (2 प्रमाण (प्रत्यक्ष व अनुमान) को स्वीकार करता है।
3. न्याय दर्शन 16 पदार्थ स्वीकार करता है, जबकि वैशेषिक दर्शन 7 पदार्थ स्वीकार करता है।

## ❖ पदार्थ (Category):

- अर्थ – जिस पद का कुछ अर्थ हो वह पदार्थ है, जिसे नाम दिया जा सकता है। पदार्थ भी अनगिनत हुये।
- जिस वस्तु का किसी पद अथवा शब्द से ज्ञान होता है उसे पदार्थ कहते हैं। पदार्थ (पद अर्थ) का अर्थ है- पद या शब्द का अर्थ। संसार की वे सभी वस्तुएँ, जिनके विषय में सोचा जा सकता है तथा जिनका नामकरण किया जा सकता है, पदार्थ के अन्तर्गत आते हैं।
- भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदाय की तरह (चार्वाक को छोड़कर) वैशेषिक दर्शन का लक्ष्य भी मोक्ष की प्राप्ति है।
- तत्वधान आवश्यक है
- अपने पदार्थ सिद्धांत से तत्व का विवेचन करता है।
- कणाद के अनुसार पदार्थों का सम्यक् ज्ञान होने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- इसमें पदार्थों को दो भागों बाँटा गया है-

1. **भाव**(6)
   1. द्रव्य (9)
   2. गुण
   3. कर्म
   4. सामान्य
   5. विशेष
   6. समवाय

   1) **पृथ्वी**
   2) **जल**
   3) **तेज/अस्ग्न**
   4) **वाय**
   5) आकाश
   6) काल
   7) द्विक
   8) आत्मा
   8) आत्मा
   9) मन

- 2. **अभाव (7वां)**
- भाव का अर्थ उन पदार्थों से है जो विद्यमान है और इनकी संख्या छः है। मूलतः वैशेषिक इन्हीं छः पदार्थों को मान्यता देता है। किन्तु कालान्तर में 'अभाव' नामक सातवाँ पदार्थ जोड़ दिया गया।
- इस तरह पदार्थों की कुल संख्या सात है -

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

1. द्रव्य (Substance) :

- द्रव्य गुणों और कर्मों का आश्रय है तथा उससे भिन्न भी है। यह अपने कार्यों का समवायी कारण (Inherent cause) भी है (क्रियागुणवत् समवायकारणम् द्रव्यः)।
- जैसे वस्त्र का समवायी कारण सूत होता है क्योंकि वस्त्र उसी से निर्मित होता और निर्माण पूर्व उसी में निहित रहता है। कोई भी गुण या कार्य बिना आधार के नहीं रह सकता। उनका कोई र कोई आधार अवश्यमेव होने चाहिए। यही आधार द्रव्य है।
- वैशेषिकों ने 9 द्रव्यों को मान्यता दी है :

द्रव्य

पंचमहाभूत – 5 (जल, आकाश, वायु, पृथ्वी, अग्नि) 6. दिक् 7. काल

8. आत्मा

आत्मा नित्य और सर्वव्यापी द्रव्य है और यह सभी चैतन्य वस्तुओं का आधार है। चैतन्य आत्मा का गुण नहीं है, यह आत्मा का अभिन्न गुण भी नहीं है, अपितु चैतन्य आत्मा का आगन्तुक गुण माना गया है जोकि मन के सानिध्य से उसमें उत्पन्न होता है। आत्मायें अनेक हैं।

**9. मन**

मन नित्य है परन्तु विभु नहीं है। यह अन्तरिन्द्रिय है। मन के द्वारा ही आत्मा वस्तुओं से सम्पर्क स्थापित करता है। यह अगोचर अणु द्रव्य है। मन से एक समय में एक ही वस्तु की अनुभूति हो सकती है क्योंकि यह परमाणु के समान अत्यन्त सूक्ष्म है। प्रत्येक आत्मा में एक मन होता है। मन ज्ञान का आन्तरिक साधन है जिसके द्वारा आन्तरिक आत्मा विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है।

2. **गुण (Quality):**

- कार्य का असमवायिकारण 'गुण' है। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, ज्ञान, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म तथा संस्कार ये 24 'गुण' के भेद है।
- इनमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, स्नेह, स्वाभाविक, द्रवत्व, शब्द तथा ज्ञान से लेकर संस्कार, पर्यन्त, ये 'वैशेषिक गुण' है। अवशिष्ट 'साधारण गुण' है 'गुण' द्रव्य में ही रहते है।

3. **कर्म (Action):**

क्रिया को 'कर्म' कहते हैं। ऊपर फेंकना, नीचे फेकना, सिकुड़ना, फैलाना तथा गमन जैसे भ्रमण, स्पंदन, रेचन आदि पाँच 'कर्म' के भेद है। कर्म द्रव्य में ही रहता है।

4. **सामान्य (General):**

- किसी वर्ग के सामान लक्षणों को सामान्य कहा जाता है- नित्यम् एकम् अनेकानुगतम् सामान्यम्। विभिन्न व्यक्तियों में कुछ ऐसे सामान्य लक्षण हैं जिनसे वे 'मनुष्य' कहे जाते हैं।
- इसी प्रकार विभिन्न गायों में कुछ सामान्य लक्षण होते हैं जिनसे वे कही जाती हैं। यहाँ 'मनुष्यत्व' और 'गोत्व' सामान्य लक्षण हैं जो विभिन्न व्यक्तियों और गायों में अनुगत हैं।

5. **विशेष (Specific) :**

यह सामान्य के विपरीत पदार्थ है। प्रत्येक मनुष्य अथवा वस्तु में कुछ विशिष्ट लक्षण या गुण विद्यमान रहते हैं जिनके आधार पर वे एक दूसरे से अलग समझी जाती है। विशेष के कारण ही एक आत्मा दूसरी आत्मा से, एक परमाणु दूसरे परमाणु से भिन्न समझा जाता है। परमाणु, आत्मा, दिक्, काल, मन आदि सभी के अपने-अपने विशेष धर्म होते हैं। विशेषों को मानने के कारण ही दर्शन को 'वैशेषिक-दर्शन' करते हैं।

6. समवाय (Inherence) : वैशेषिक दर्शन ने समवाय नामक स्वतंत्र सत्ता का प्रतिपादन, एक प्रकार का आंतरिक संबंध है। जिनका पृथक अस्तित्व नहीं रह सकता है। जो एक–दूसरे पर आश्रित होते है, एक के नष्ट होने पर पर दूसरा भी नष्ट हो जाता है। उदा. धागे व कपड़े के बीच, गुलाब के फूल व सुंगंध के बीच।

7. अभाव (Non-Existence): वैशेषिक दर्शन अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ स्वीकार करत है। कणाद स्वतंत्र रूप से अभाव को पदार्थ नहीं मानते है। किन्तु बाद के आचार्यों ने अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ माना है।

## परमाणुवाद का सिद्धांत (Atomic Theory)

- न्याय वेशेषिक दर्शन अन्य भारतीयों की तरह जगत की उत्पत्ति के सम्बन्ध मं सृष्टिवाद के सिद्धांत को अपनाता है। वह असत्कार्यवाद के आधार पर सृष्टि की व्याख्या करने के लिये परमाणुवादी सिद्धांत स्वीकार करता है। बहुतत्ववादी वस्तुवाद का प्रमुख सिद्धांत है। सृष्टि की व्याख्या परमाणु संयोग के माध्यम से तथा विनाश या प्रलय की व्याख्या परमाणु वियोग के माध्यम से की जाती है।

**विशेषताऐं :**

1. परमाणु सूक्ष्मतम तत्व है, जिनका और विभाजन नहीं किया जा सकता
2. परमाणु निरवयव है।
3. परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के अन्तर है।
4. स्वाभाविक रूप से क्रियाशून्य और गतिहीन है।
5. परमाणु देशरहित है।

**प्रकार :**

गुणात्मक दृष्टि से परमाणु 4 प्रकार के है।

1. वायवीय 2. तैजस् 3. जलीय 4. पार्थिव

नोट – न्याय दर्शन आकाश को महाभूत तो मानता है, किन्तु परमाणवीय नहीं मानता।

- **वैशेषिक दर्शन में 'सत्कार्यवाद' का सिद्धांत अमान्य है। वैशेषिक में कार्य की उत्पत्ति सर्वथा नवीन होती है।**
- **संसार के सभी कार्य द्रव्यों का निर्माण चार प्रकार के परमाणुओं से होता है**

जैसे : **पृथ्वी, जल, तेज और वायु।**

**परमाणुओं के संयोग से उत्पत्ति और विच्छेद से विनाश होता है। परमाणु निष्क्रिय होते हैं और उनका संयोग और विच्छेद स्वतः नहीं होता है बल्कि इन्हें गति प्रदान करने वाली सत्ता 'ईश्वर' है। ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने के कारण वैशेषिक परमाणुवाद 'आध्यात्मिक' हो जाती है।**

**वैशेषिक परमाणुवाद जगत् के अनित्य के बारे में है न कि नित्य के बारे में।**

- **जगत् के नित्य पदार्थों (आकाश, दिक्, काल, मन, आत्मा और भौतिक परमाणु) की न तो सृष्टि होती है और न ही विनाश।**

**दो परमाणुओं के प्रथम संयोग को द्वयणुक बनता है। तीन द्वयणुकों के संयोग से त्र्यणुक बनता है। द्वयणुक ह्रस्व और अगोचर होता है जबकि त्र्यणुक महत्, दीर्घ और दृष्टिगोचर होता है।**

- **परमाणुओं के संयोग का यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कि पृथ्वी, जल, तेज और वायु महाभूत उत्पन्न नहीं हो जाते हैं।**

**इस सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर है जो अचेतन अदृष्ट को परिचालित करता है और अदृष्ट उसी की सहायता से परमाणुओं को गति प्रदान करता है। अदृष्ट द्वारा गति प्रदान किये जाने पर परमाणुओं में कम्पन (परिस्पन्दन) उत्पन्न होता है और वे तत्क्षण द्वयणुक में परिवर्तित हो जाते हैं।**

- **इस दर्शन में ईश्वर, आत्मा और कर्मफल सिद्धान्त की स्वीकृति है। ईश्वर सर्वज्ञ, अनन्त और पूर्ण है। वह संसार का निमित्त कारण (Efficient Cause) है और परमाणु इसके उपादान कारण (Material Cause) हैं। आत्मायें और परमाणु ईश्वर के साथ- साथ विद्यमान रहते हैं और उसी के समान नित्य हैं। ईश्वर परमाणु का कर्ता नहीं है अपितु वह केवल उसे गति प्रदान करता है।**

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## वैशेषिक दर्शन की आलोचना (Criticism)

- **पाश्चात्य दार्शनिकों के विपरीत वैशेषिक अपने परमाणुवाद को ईश्वर से जोड़कर आध्यात्मिक आधार देते हैं।**
- **इस दर्शन में भक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।**
- **आत्मा और मोक्ष सम्बन्धी विचार संतोषप्रद नहीं है। यहाँ मोक्षावस्था जड़ है जहाँ कोई अनुभूति नहीं है इसीलिए शंकर इसे 'अर्द्धवैनाशिक' और श्रीहर्ष 'वास्तविक उलूक दर्शन' कहकर इसकी आलोचना करते हैं।**
- परमाणु निष्क्रिय है, तो सृष्टि असंभव है और परमाणु सक्रिय है, तो प्रलय असंभव।
- परमपाणु देश रहित है तो स्थान कैसे घेर सकते।
- परमाणु गोलाकार है तो अन्य आकारों के क्यों बन पाते हैं।
- सिद्ध किया कि परमाणु अंतिम तत्व नहीं। इसके भीतर इलेक्ट्रॉन–प्रोट्रॉन भी है।

## मूल्यांकन (Evaluation)

परमाणुवादी सिद्धान्त कई अन्तर्विरोधों से ग्रस्त है। क्योंकि इसकी व्याख्या चार्वाक के जड़वाद और हीनयानियों के क्षणिकवाद से तो बेहतर है। आधुनिक वैज्ञानिक विकास का पूर्वाभास भी दिखाई पड़ता है।

# मीमांसा दर्शन (Mimansa Philosophy)

## मीमांसा दर्शन

### पूर्वी मीमांसा

- प्रणेता – महर्षि जैमिनी
- ग्रंथ – मीमांसासूत्र
- परिचय एवं विकास :
- ज्ञान मीमांसा(प्रमाण)
- कमियां
- महत्व

**मीमांसा का अर्थ**

गंभीर मनन और विचार

अंग्रेजी में अर्थ – **Investigation, Consideration.**

अर्थात् किसी विषय पर गंभीरतापूर्वक किये गये विचार–विमर्श को मीमांसा कहते है। – "मीमांसन मीमांसा। "

- वेद तथा वैदिक धर्म के ऊपर जब बहुत आक्षेप हुआ उस समय मीमांसा दर्शन की रचना हुई।
- मीमांसा में मुख्य विषय धर्म है। इस दर्शन के अनुसार "यतोड भ्युदयानिः श्रेयसः सिद्धिः स धर्मः अर्थात् जिससे इस लोक तथा परलोक में कल्याण की प्राप्ति हो उसी को धर्म कहते है।
- यह विचारधारा न सिर्फ वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करती है, बल्कि वेदों पर पूर्णतः आधारित भी है।
- मीमांसा के अनुसार वेद ही धर्म के मूल है।

### उत्तर मीमांसा

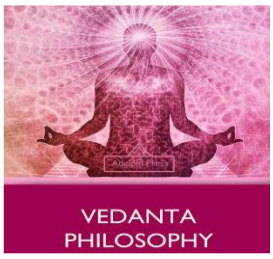


प्रेणता – महर्षि वादरायण
ग्रंथ – ब्रह्मसूत्र

❖ मीमांसा दर्शन का विभाजन व विकासक्रम : पूर्व मीमांसा v/s उत्तर मीमांसा

➢ **वेदों के दो भाग हैं:** 1. **कर्मकाण्ड** 2. **ज्ञानकाण्ड**

**ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक कर्मकाण्डों की मीमांसा या कर्मकाण्डों का वर्णन है, जबकि उपनिषद् ज्ञानमार्ग से सम्बंधित हैं।**

➢ **इस आधार पर मीमांसा के दो प्रकार हो गये :-**

1. **कर्ममीमांस (कर्मकाण्ड)** = पूर्व मीमांसा
2. **ज्ञानमीमांसा (ज्ञानकाण्ड)** = उत्तर मीमांसा → वेदान्त

- **वैदिक कर्मकाण्डों के युक्तिपूर्वक व्याख्या और प्रतिपादन करने वाली विचारधारा कर्म-मीमांसा कहलायी। दूसरी ओर ज्ञान के माध्यम से तत्व तक पहुँचने की मीमांसा करने वाली मत प्रणाली ज्ञान-मीमांसा कहलायी। दूसरे शब्दों में कर्म-मीमांसा वेद-विहित कर्मों को प्राथमिकता देती है तो वहीं ज्ञान-मीमांसा ज्ञान को प्राथमिकता देती है।**

❖ **पूर्व और उत्तर मीमांसा में शब्द भेद :**

➢ **इस दर्शन को पूर्वमीमांसा इसलिए नहीं कहा जाता कि यह उत्तर-मीमांसा से पहले अस्तित्व में आया वरन् यहाँ पूर्व का अर्थ है कर्मकाण्ड मानव का पहला धर्म है और ज्ञानकाण्ड उसके बाद आता है।**

➢ **पूर्व-मीमांसा के लिए मीमांसा शब्द प्रचलित हो गया जबकि उत्तर-मीमांसा के लिए वेदान्त शब्द।**

**'पूर्व-मीमांसा' का उद्देश्य वैदिक कर्मकाण्डों की दार्शनिक महत्ता को क प्रतिपादित करना है। यह मत वेदों को अपौरुषेय और नित्य मानती है।**

**उपनिषद् (वेदांत) को 'उत्तर-मीमांसा' कहा गया है और इसमें ज्ञानमार्ग का प्रतिपादन है।**

**ज्ञानकाण्ड की मीमांसा वेदांत दर्शन में जबकि कर्मकाण्ड की मीमांसा हमें मीमांसा दर्शन में मिलती है।**

**यही कारण है कि मीमांसा और वेदान्त को समान तंत्र (Allied System) भी कहा जाता है; जैसे कि सांख्य-योग और न्याय- वैशेषिक।**

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# पूर्व मीमांसा (Purva Mimansa)

## परिचय (Introduction) :

- पूर्व मीमांसा दर्शन के प्रणेता महर्षि जैमिनि हैं। यह छः आस्तिक दर्शनों में से एक है, जो अनीश्वरवादी, कर्मकाण्डी मानते है कि 'वेद ही गुरू' है , मार्गदर्शक है।
- वेदविहित कर्म ही कर्म है, जो मोक्ष प्रदान करने वाले है।

## ❖ मीमांसा साहित्य (Literature):

- जैमिनि कृत 'मीमांसा सूत्र।'
- शबरस्वामी कृति 'शबर-भाष्य।' यह जैमिनि सूत्र पर लिखी गयी टीका है।
- कुमारिल भट्ट कृत 'तन्त्रवार्तिक' और 'श्लोकवार्तिका'
- मध्वाचार्य कृत 'जैमिनीय न्यायमाला विस्तार।

मीमांसकों ने वेदविहित कर्म के 5 प्रकार बताए हैं।

1. नित्य कर्म : जिन कर्मों का पालन व्यक्ति को प्रतिदिन करना चाहिये, उन्हें नित्य कर्म कहते है। जैसेः स्नान,पूजा।
2. नैमित्तिक कर्म : किस विशेष अवसरों पर किये जाने वाले कर्मों को। जैसेः दान एवं जन्म, मृत्यु एवं विवाह के अवसर पर।
3. काम्य कर्म : किसी निश्चित फल की अभिलाशा से किय जाने वाले कर्मों को। जैसेः स्वर्ग प्राप्ति हेतु, इससे पुण्य का संचय।
4. निषिद्ध कर्म : जिन कर्मों को निषेद वेदों ने किया गया जिससे पाप का संचय होता है।
5. प्रायश्चित कर्म : निषिद्ध कर्मों को करने अथवा अनजाने में कोई गलत काम करने के पश्चात् उनके अशुभ परिणामों से बचने के लिये।

## पूर्व मीमांसा की ज्ञान मीमांसा

महर्षि जैमिनी ने मुख्यतः 3 प्रमाण माने।
बाद में प्रभाकर ने 2 (उपमान, अर्थापत्ति) जोड़ दिये,
फिर आगे चलकर कुमारिल भट्ट ने 6वां प्रमाण (अनुलब्धि) जोड़ा।

## मीमांसा के प्रमुख सिद्धान्त

**मीमांसा दर्शन को को हम सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बाँटकर अध्ययन कर सकते हैं-**

1) **प्रमाण-विचार** (Epistemology) 2) **तत्व-विचार** (Metaphysics) 3) **धर्म-विचार** (Religion and Ethics)

### 1. प्रमाण विचार

**वेदों की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए मीमांसकों ने प्रमा, प्रामाण्य इत्यादि पर गंभीरता से विचार किया है। मीमांसा में ज्ञान-विचार बहुत ही गंभीर और सूक्ष्म है।**

- **ज्ञान के रूप और साधन**
- **मीमांसा दर्शन में दो प्रकार के ज्ञान माने गये हैं-**

1. **प्रत्यक्ष ज्ञानः**
2. **परोक्ष ज्ञान- परोक्ष ज्ञान के पुनः 5 प्रकार हैं-**
   a) **अनुमान शब्द उपमान अर्थापत्त अनुपलब्धि।**

**1. प्रत्यक्ष प्रमाण :**

- **प्रत्यक्ष ज्ञान केवल सत् एदार्थों का हो सकता है। किसी ज्ञानेन्द्रिय के साथ सत् (वर्तमान) पदार्थ या विषय का सम्पर्क होने पर ही प्रत्यक्ष या यथार्थ ज्ञान आत्मा को हो सकता है।**
- **प्रभाकर के अनुसार विषय के प्रत्यक्षीकरण में आत्मा (Self), ज्ञान (Cognition) एवं विषय (Object) का प्रत्यक्षीकरण होता है। अर्थात् वे त्रिपुटी-प्रत्यक्ष (The Triple Perception) के समर्थक हैं।**

VIDYA ICS
Dedicated to Civil Services

प्रत्यक्ष ज्ञान तब होता है जब इंद्रिय के साथ विषय का सम्पर्क हो।

**2. परोक्ष / अप्रत्यक्ष प्रमाण**

**a) अनुमान प्रमाण (Inference):**

- किसी पूर्व-ज्ञान के आधार पर वस्तुओं का अटकल लगाना अनुमान है।
- पूर्वज्ञान के आधार पर किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना अनुमान है। ऐसा ज्ञान केवल इन्द्रियों से ही नहीं होता, वरन् ऐसे साधन से होता है जिससे साध्य या अनुमानित वस्तु का नियत सम्बन्ध रहता है।

**b) उपमान प्रमाण (Analogy):**

- उपमान (Comparison) का अर्थ है- तुलना। उपमान में समानता और तुलना के आधार पर एक वस्तु से दूसरी वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
- मीमांसा का उपमान नैयायिकों से भिन्न है। न्याय दर्शन में किसी विश्वसनीय व्यक्ति द्वारा पूर्ववर्णित ज्ञान के आधार पर वस्तु की पहचान होती है जबकि मीमांसा में प्रत्यक्ष दर्शन आवश्यक है।

**c) शब्द प्रमाण (Testimony/Authority):**

- मीमांसा दर्शन में शब्द प्रमाण का सर्वाधिक महत्व है। मीमांसकों ने शब्द प्रमाण के दो भेद बताये हैं-
- एक, पौरुषेय- आप्त-वाक्य या आप्त-कथन पौरुषेय हैं। विश्वसनीय व्यक्तियों के वचन / कथन को आप्त वाक्य या कथन कहा जाता है।
- द्वितीय, अपौरुषेय वेद-वाक्य अपौरुषेय हैं। वेद को स्वतः प्रमाण माना गया है जोकि नित्य और समस्त ज्ञान का आधार है। ऋषि वैदिक मंत्रों द्रष्टामात्र है न कि रचयिता।

**d) अर्थापत्ति प्रमाण :**

- अर्थापत्ति (Implication) शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- अर्थ और आपत्तिः जिसके क्रमशः अर्थ हैं- विषय और कल्पना। इस तरह अर्थापत्ति का अर्थ है "किसी विषय की कल्पना करना।"
- ज्ञात अर्थ की व्याख्या के लिये अज्ञात अर्थ की कल्पना अर्थात् जिसकी सहायता के बिना ज्ञात अर्थ की उत्पत्ति न हो सके उसे अर्थापत्ति (Implication) कहते हैं। जब कोई ऐसी घटना हमारी दृष्टि में आती है जिसे समझने में कुछ विरोध हो तब उस विरोध को समझने के लिए कोई आवश्यक कल्पना की जाती है।

**e) अनुपलब्धि प्रमाण :**

- उपलब्धि (प्राप्ति) के अभाव के अभाव को अनुपलब्धि (Negation/Non-existence) कहते हैं। इसके विषय में हम किसी विषय के न होने (अभाव) का ज्ञान प्राप्त करते हैं। अभाव का अर्थ है 'जिस परिस्थिति में जो वस्तु होनी चाहिए, उसका न होना।' इसको 'योग्यानुपलब्धि' कहते हैं।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## मीमांसा दर्शन की आलोचना (Criticism)

वेद सम्मत होने के कारण आस्तिक दर्शनों में स्थान प्राप्त है;

- फिर भी इसमें तत्त्व-ज्ञान और आध्यात्म-शास्त्र का अभाव पाया जाता है। यहाँ पर परम तत्त्व, जीव व जगत् का विवेचन नहीं मिलता है।
- मीमांसा एक दर्शन न होकर कर्म-शास्त्र है। इसमें कर्म के प्रकार एवं विधियों का उल्लेख हुआ है। यहाँ पर यज्ञ विधियों का वर्णन मिलता है। यह कर्मकाण्ड बनकर रह गया है और इसमें दार्शनिक विचारों का अभाव (शून्य) है।

यहाँ पर आत्मा सम्बन्धी विचार अविकसित है। मीमांसकों का धर्म-विचार भी अविकसित है।

वैदिक देवताओं का स्थान यहाँ गौण बना दिया गया है। वे निरर्थक से लगते हैं। कर्म-काण्ड इतना प्रभावी हो गया है कि ईश्वर का स्थान अविशेष सा हो गया है

अतः फिर भी यह कहना कि मीमांसा दर्शन महत्त्वपूर्ण है ठीक नहीं है। इससे हमें धर्म व कर्तव्य का बोध होता है। हिन्दुओं के धर्म-कर्म को विवेचन मीमांसा से मिलता है।

## उत्तर मीमांसा (वेदान्त) (Vedanta Philosophy)

- परिचय
- प्रणेता / प्रवर्तक
- साहित्य
- तत्व मीमांसा- अद्वैतवाद, ब्रह्म, ईश्वर, माया-जीव, जगत
- बंधन मोक्ष
- ज्ञान मीमांसा (6 प्रमाण)
- महत्व

जन्म - 788 ई. केरल कालड़ी ग्राम
माता -आर्याम्बिका देवी
पिता - शिवगुरु
गुरु-गोविंद भगवत्पाद
'शंकराचार्य' नाम दिया।
निर्वाण 820 ई.

## परिचय (Introduction)

- वेदांत अर्थ - वेदों के अंतिम भाग, अर्थात् उपनिषदों का दर्शन।
  वेद चार है ऋग्वेद, सामवेद, यर्जुवेद तथा अथर्ववेद।
  इन चारों वेदों के तीन-तीन भाग है संहिता, ब्राह्मण और आरण्यक व उपनिषद्।
  इस तरह उपनिषद् वेदों के अंतिम भाग है, इसलिए इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।
- वेदों के प्रारंभिक भाग, अर्थात् संहिता तथा ब्राह्मण में कर्मकाण्ड पर जोर है,
  जबकि अंतिम भाग आरण्यक तथा उपनिषद् में ज्ञान तत्व महत्वपूर्ण है। वस्तुतः वेदांत दर्शन का मुख्य प्रयोजन उपनिषदों की शिक्षा में एकरूपता दिखलाना और उनका वास्तविक अर्थ स्पष्ट करना है
- सभी उपनिषदों में संगति स्थापित करने और विभिन्न विद्वानों के मतभेद को दूर करने के लिए वेदांत दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य बादरायण व्यास ने ब्रह्मसूत्र की रचना करी।
  चूंकि इसकी रचना छोटे-छोटे सूत्रों में हुई है तथा ब्रह्म' इस ग्रंथ का प्रमुख विषय है, इसलिए यह ब्रह्मसूत्र कहा गया।
- ब्रह्मसूत्र वेदांत दर्शन को प्रस्तुत करने का एक महान् प्रयास था, किन्तु संक्षेप में इसके सूत्रों की रचना होने के कारण आगे चलकर इसके वास्तविक अर्थ के विषय में विद्वानों में मतभेद व शंकाएं उत्पन्न होने लगी। इन शंकाओं के समाधान हेतु अनेक भाष्यकारों ने ब्रह्मसूत्र पर अपना अलग-अलग भाष्य लिखा। प्रत्येक भाष्यकार ने अपनी-अपनी भाष्य की पुष्टि के लिए वेद और उपनिषद् में वर्णित विचारों का उल्लेख किया।

### ब्रह्मसूत्र के भाष्य

| आचार्य | भाष्य | सिद्धांत |
|---|---|---|
| शंकराचार्य | शारीरिक भाष्य | अद्वैत |
| रामानुजाचार्य | श्री भाष्य | विशिष्ट द्वैत |
| भास्कराचार्य | भास्कर भाष्य | भेदाभद |
| निम्नवाकचिार्य | वेदान्त पारिजात | द्वैताद्वैत |
| मध्यपाचार्य | पूर्वप्रज्ञा भाष्य | द्वैत–वेदांत |
| बल्लभाचार्य | अणुभाष्य | शुदाद्वैत |

### शंकराचार्य

- आचार्य शंकर प्रतिभा संपन्न, अद्वैत वेदांत के प्रणेता, उपनिषद् व्याख्याता और हिंदू धर्म प्रचारक थे।
- असाधारण मेधासंपन्न तमिलभाषी, संस्कृत, गणित, संगीत आदि का एवं 8 वर्ष की आयु में संपूर्ण वेद का ज्ञान प्राप्त कर लिया। जिन्होंन भारत को व हिन्दु संस्कृति का एकता के सूत्र में बांधने के लियs उत्तर में ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ), दक्षिण में श्रृंगेरी मठ (चिकमंगलूर), पूर्व में गोवर्धन मठ (पुरी), पश्चिम में शारदा मठ (द्वारका) में, चार पीठोa की स्थापना की।

## साहित्य (Literature)

उनका ब्रह्मसूत्र पर भाष्य, शारीरिक भाष्य कहलाता है।
प्रमुख रचनाएं - तत्वबोध, आत्मबोध, दश्श्लोकी, उपदेशसहस्त्री, आनंदलहरी, सौंदर्यलहरी आदि।

## अद्वैतवाद (Advaitavaad)

शंकराचार्य ने एक मात्र परम तत्व/परम सत्ता ब्रह्म को माना।
जीव और ब्रह्म दो नहीं, अपितु तत्वतः एक है। वे अद्वैत है अद्वैत का अर्थ होता है जहां सत्ता दो न होकार एक है।

### अद्वैत दर्शन क्यों कहते है (Meaning) ?

- शंकर के अनुसार ब्रह्म पूर्ण है और जो पूर्ण है उसे संख्या की सीमा में नहीं बांधा जा सकता।
- दूसरा, शब्द अथवा संख्या एक दो के सापेक्ष है। बिना दो के हम 'एक' की कल्पना नहीं कर सकते। यदि 'एक' है तो दो भी होगा, किन्तु परम सत्ता ब्रह्म सापेक्ष न होकर निरपेक्ष है, इसीलिए इसे अद्वैत कहा जाता है।

"ब्रह्म सत्यम्, जगत् मिथ्या, जीवो ब्रह्मव नापरः"

## ब्रह्म (Brahma)

ब्रह्म ही एकमात्र परमसत्य। जो अनादि, अनंत, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान एवं देश-काल से परे सत्ता है। यहीं मूलतत्व और सर्वोच्च ज्ञान है। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी मिथ्या है।
ब्रह्म की प्रकृति और विशेषताओं निम्नलिखित है-

ब्रह्म एकमात्र सत् है - सत् वह है, जो त्रिकालाबाधित हो, अर्थात् जिसका तीनों काल में बाध न हो।
शंकर ने तीन प्रकार की सत्ता मानी है-

1. प्रातिभासिक सत्ता : ऐसी सत्ता जिसका हमें केवल आभास होता है। स्वप्न तथा भ्रम में उपस्थित , क्षणिक होते है।
2. व्यावहारिक सत्ता : हमें जाग्रत अवस्था में सत्य प्रतीत होते हैं जैसे जगत् और उसक वस्तुएं।
   ये व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने में सहायक होते है,
3. पारमार्थिक सत्ता : पारमार्थिक सत्ता उसकी है, जिसका तीनों कालों में बाघ नहीं होता. अर्थात् जो अनश्वर और नित्य हो। केवल एक ही सत्ता है और वहीं ब्रह्म है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## निर्गुण और सगुण रूप

उपनिषदों में ब्रह्म का दो रूपों में वर्णन - निर्गुण ब्रह्म एवं सगुण ब्रह्म।
यह दो रूप दृष्टिकोण के भेद से है - वास्तव में पारमार्थिक दृष्टिकोण से ब्रह्म निर्गुण निराकार ही है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यहीं ब्रह्म जब माया की उपाधि से युक्त होता है तो यह ब्रहा (ईश्वर) सगुण साकार रूप में प्रतीत होता है।

### ब्रह्म के दो लक्षण :

तटस्थ लक्षण व स्वरूप लक्षण।
भेद 03 प्रकार - सजातीय, विजातीय एवं स्वगत।

### ब्रह्म अज्ञेय है

किसी भी पदार्थ को भेदों के माध्यम से ही जानते है, भेदों से परे है, अतः अज्ञेय है। ब्रह्म देश-काल की सीमाओं के परे इसलिए वे इसे अपरिभाषेय, अवर्णनीय एवं अनिर्वचनीय भी कहते है।

ब्रह्म का केवल नकारात्मक वर्णन संभव है, अर्थात् हम यह तो बता सकते है कि ब्रह्म क्या नहीं है, किन्तु यह नहीं बता सकते कि ब्रह्म क्या है?. उपनिषद् में ब्रह्म को नेति-नेति कहा है अर्थात् वह यह नहीं है।

## ब्रह्म की अपरोक्षानुभूति

ब्रह्म- अज्ञेय है अतः हम उसे अपनी इंद्रियों और बुद्धि के द्वारा नहीं जान सकते हैं,
किन्तु हम ब्रह्म को अपरोक्षानुभूति के द्वारा जान सकते है। यह अपरोक्षानुभूति वस्तुतः आत्मज्ञान के द्वारा संभव है। यह आत्मानुभूति ही है। इसके फलस्वरूप सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते है और अद्वैत ब्रह्म का साक्षात्कार होता है।

**आत्मा और ब्रह्म एक है :**

आत्मज्ञान के द्वारा ब्रह्मज्ञान इसलिए संभव है क्योंकि आत्मा ब्रह्म ही है। उपनिषद् में 'अहं ब्रहास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) 'तत्त्वमसि' (वह ब्रह्म तू ही है) आदि इसी बात को प्रकट करते है।

**ब्रह्मज्ञान और मोक्ष :**

शंकर निर्गुण ब्रह्म को अत्यधिक महत्व देते हैं क्योंकि इसका ज्ञान मनुष्य को समस्त दुःखों, द्वंद्वो और संदेहों से मुक्त करता। वस्तुतः ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्म के समान ही सच्चिदानंद स्वरूप हो जाता है।

## ईश्वर (सगुण ब्रह्म)

**ब्रह्म के दो रूप- निर्गुण और सगुण.**

निर्गुण ब्रह्म निराकार है,
अतः शंकर ने अपने अद्वैतवादी दर्शन को आमजन के अनुकूल बनाने के लिए सगुण ब्रह्म की व्याख्या की। शंकर ने "माया से युक्त ब्रह्म को ही सगुण ईश्वर की संज्ञा" दी है।

**सगुण ब्रह्म (ईश्वर) विशेषताऐं :**

1. व्यावहारीक सत्ता
2. उत्पन्नकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता
3. जगत का कारण- उपादन और निमित्त दोनों कारण है।
4. ईश्वर जगत् में तथा उससे परे भी - ईश्वर विश्व व्यापी है।
5. ईश्वर, लीला के लिए सृष्टि/जगत की रचना करता है
6. ईश्वर का गुण- सगुण व साकार अनन्त गुणों का स्वामी।
7. माया- ईश्वर की शक्ति जिससे जगत की रचना करता है।
8. कर्मफलदाता
9. अवतार ग्रहणकर्त्ता
10. भक्ति का केंद्र ईश्वर हमारी श्रद्धा और भक्ति का केंद्र है।

शंकराचार्य का ईश्वर उनके निर्गुण ब्रह्म के रूप से उपरोक्त आधारों पर भिन्न हैं

| ब्रह्म (निर्गुण ब्रह्म) | ईश्वर (सगुण ब्रह्म) |
|---|---|
| जगत का निमित्त एवं उपादान कारण नहीं है। | ईश्वर ही जगत का निमित्त एवं उपादान कारण है। |
| र, निराकार | सगुण, सविशेष, साकार |
| , अंतिम सत् | व्यावहारिक सत् |
| षय नहीं | उपासना का विषय है। |
| यों द्वारा अवर्णनीय | सगुण होने के कारण वर्णनीय |
| | व्यक्तित्वपर्ण |

## माया Maya (अविद्या विचार)

**माया शब्द का अर्थ है:**

1) माया शब्द में 'मा' का अर्थ होता है 'मोह' और 'या' का अर्थ है 'जो'।
जो जीव को मोहित करे, वह माया है (यया मोहितं जगत्)।
2) माया शब्द में 'मा' का अर्थ होता है 'नहीं' और 'या' अर्थ 'जो', अर्थात् जो नहीं है। जिसका अस्तित्व नहीं है, उसे
3) 'मा' का एक अन्य अर्थ 'मापना' भी है।

शंकर के दर्शन में माया का उपरोक्त तीनों अर्थों में प्रयोग हुआ है। पहला, शंकर के अनुसार माया के कारण ही जीव मोहित होता है और बंधन में पड़ता है। दूसरा, माया का पारमार्थिक दृष्टि से कोई अस्तित्व नहीं है। तीसरा, माया ही है, जो अपरिमित ब्रह्म को परिमित जगत् के रूप में प्रस्तुत करती है।

माया ब्रह्म की रहस्यमय शक्ति है, जो ब्रह्म में निवास करती है। लेकिन ब्रह्म इस शक्ति से अप्रभावित रहता है। ब्रह्म अनादि है, अतः ब्रह्म की तरह माया भी अनादि है।

**माया की प्रकृति , विशेषताओं**

1. रहस्यमयी शक्ति : 2. अनादि एवं अस्थायी : 3. व्यावहारिक सत्ता : 4. भावरूप : 5. अनिर्वचनीय :

**माया की 02 शक्तियां है - आवरण और विक्षेप।**

1. आवरण शक्ति - पर्दा, जो सत्य को ढंकता है अथवा छिपाता है। इससे माया सर्वप्रथम ब्रह्म को छिपा, पर्दा डाल देती है, जैसे रस्सी-सर्प भ्रम में रस्सी हमें दिखाई नहीं देता। माया का यह निषेधात्मक कार्य है।

2. विक्षेप शक्ति - वास्तविक वस्तु के स्थान पर अवास्तविक वस्तु को प्रस्तुत करना। विक्षेप शक्ति के द्वारा माया ब्रह्म के आवरण पर जगत् को प्रस्तुत करती है, माया का यह भावात्मक कार्य है।

→ ब्रह्म माया से अप्रभावित : माया केवल जीव को मोहित करने का सामर्थ्य रखती है, ब्रह्म को नहीं।

**माया और अविद्या अन्तर**

1. माया भावात्मक है, जबकि अविद्या निषेधात्मक है। माया भावात्मक इसलिए है, क्योंकि माया के द्वारा ब्राह्य सम्पूर्ण जगत् प्रदर्शन करता है। इसके विपरीत अविद्या ज्ञान के अभाव को संकेत करने के कारण निषेधात्मक है।
2. माया जब ब्रह्म से युक्त होती है, तो ईश्वर कहलाती है। जबकि ब्रह्म अविद्या से ग्रस्त होता है, तो जीव कहलाता है।
3. माया से जगत निर्मित होता है। अज्ञान से जीव बंधन में पड़ जाता है।
4. सर्वज्ञ ईश्वर माया का स्वामी है, जबकि अविद्या जीव की स्वामिनी है।
5. माया में सतोगुण की प्रधानता है जबकि अविद्या में तमोगुण की प्रधानता है।

## जगत् (World)

शंकर, ब्रह्म की ही एकमात्र सत्ता को स्वीकार करते है और जगत् को मिथ्या, मायिक, रस्सी में सर्प के समान भ्रामक कहा। जगत् के मिथ्यात्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया ।

मिथ्या वह है, जो परवर्ती ज्ञान से बाधित हो। शंकर सत्ता के तीन स्तरों को स्वीकार कर हैं प्रातिभासिक, व्यावहारिक एवं पारमार्थिक। प्रातिभासिक सत्ता में भ्रम एवं स्वप्न आते है, जिनका खण्डन व्यवहार से हो जाता। इसी तरह व्यावहारिक स्तर पर जगत् की सत्ता को स्वीकार करते हैं, किन्तु पारमार्थिक स्तर पर इसका भी खण्डन हो जाता है। अतः जगत मिथ्या है।

शंकर अध्यासवाद और विवर्तवाद के आधार पर भी जगत् के मिथ्यात्व की व्याख्या करते हैं।

**अध्यासवाद :**

अध्यास का अर्थ है अतत् में तत् की प्रतीरि अर्थात् जो वस्तु जहां नहीं है वहां उसका अनुभव होना ही अध्यास है। जगत् का बाध ब्रह्म के ज्ञान से संभव होता है।

**विवर्तवाद :**

जगत् व्याख्या सम्बन्धी सिद्धान्त- इसे ब्रह्म विवर्तवाद भी कहता है। शंकर कारणता सिद्धान्त में सत्कार्यवाद का समर्थन करते हैं, किन्तु वे परिणामवादी व्याख्या का खण्डन कर विवर्तवादी व्याख्या करते हैं।

विवर्तवाद- कारण का कार्य में वास्तविक रूपान्तरण नहीं होता है, बल्कि हमें आभास (Appearance) होता है कि वह रूपान्तरित हुआ है। वस्तुतः कारण कार्य का आभासमात्र है, विवर्तमात्र है।

उसी प्रकार जगत् के रूप में ब्रह्म का आभास होता है। यह जगत् ब्रह्म का यथार्थ रूपान्तरण न होकर आभासमात्र है।

## जीव विचार

### ब्रह्म और जीव :

जब आत्मा पर अज्ञानता के आवरण या अविद्या से ग्रस्त होती है तो वह जीव रूप होती है। वस्तुतः जीव आत्मा या ब्रह्म का अविद्याग्रस्त व्यावहारिक रूप ही है।

ब्रह्म और जीव तात्विक रूप से एक है, अज्ञानता के कारण अंतर निम्नलिखित है-

1. ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता है, जबकि जीव की व्यावहारिक सत्ता है।
2. ब्रह्म मुक्त है, जबकि जीव बंधनग्रस्त है तथा पाप-पुण्य व कर्म नियम से बंधा है।
3. ब्रह्म एक है, किन्तु जीव अनेक है।
4. ब्रह्म शरीररहित है, किन्तु जीव शरीरयुक्त है।
5. ब्रह्म सिर्फ ज्ञाता है, जबकि जीव ज्ञाता, कर्ता, भोगता तीनों है।

### ईश्वर और जीव :

जब ब्रह्म माया से युक्त होता है तो वह ईश्वर हो जाता है तथा जब ब्रह्म अविद्या से युक्त होता है तो जीव हो जाता है :

जीव और ईश्वर दोनों ब्रह्म के विवर्त (प्रतीति) है। दोनों की व्यावहारिक दृष्टिकोण से ही सत्य है, पारमार्थिक से नहीं है। कुछ भिन्नताएं निम्नलिखित है -

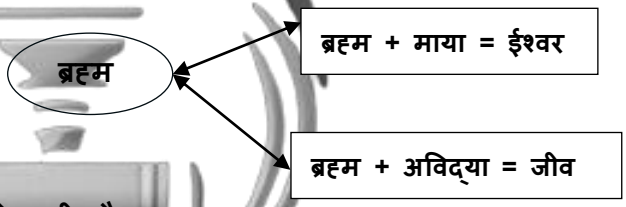


1. ईश्वर मुक्त है, जबकि जीव बंधनग्रस्त है।
2. ईश्वर अकर्ता है, जबकि जीवकर्ता है।
3. ईश्वर उपास्य है, जबकि जीव उपासक है।
4. ईश्वर कर्म नियम से परे है, किन्तु जीव कर्म नियम के अधीन है।
5. ईश्वर कर्मफलदाता है, जीव कर्मों का फल भोगता है।
6. ईश्वर अविद्या से शून्य है, इसलिए वह आनंदमय है, जबकि जीव अविद्या से युक्त है इसलिए दुःखमय है।
7. ईश्वर माया का स्वामी है, जबकि जीव माया का दास है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### बंधन और मोक्ष (Bondage & Salvation) :

ब्रह्म की ही एकमात्र है और आत्मा ब्रह्म ही है। अतः आत्मा और ब्रह्म की अभिन्नता है मोक्ष की अवस्था है, किन्तु जब आत्मा अविद्या में प्रतिबिंबित होकर खुद को जीव समझने लगती है तो यहीं स्थिति बंधन है।

### बंधन व उसका कारण :

आत्मा का शरीर के साथ आसक्त हो जाना ही बंधन हैजिसका सम्बन्ध जीव से है न कि आत्मा से।

बंधन का कारण - अविद्या है। आत्मा स्वभावतः नित्य, शुद्ध, चैतन्य, मुक्त और अविनाशी है, किन्तु अविद्या के वशीभूत होकर वह बंधनग्रस्त हो जाती है

### अविद्या की निवृत्ति ज्ञान द्वारा :

### आत्मा ही परमात्मा है

### मोक्ष प्राप्ति के साधन

शंकर ने ज्ञानमार्ग को ही मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन कहा है। यद्यपि कर्म मार्ग और भक्ति मार्ग को ज्ञान प्राप्ति में व्यावहारिक और सहायक माना है, किन्तु वे मोक्ष प्राप्ति में सहायक नहीं है।

ज्ञान की प्राप्ति वेदांत दर्शन के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकती है, परन्तु आत्मा का ब्रह्म रूप में साक्षात्कार करने से पूर्व साधक को साधन-चतुष्टय से युक्त होना होगा।

**साधन-चतुष्टय** (4) :-

1. विवेक (नित्यानित्य-वस्तु विवेक) साधक को नित्य और अनित्य वस्तुओं में भेद करने का विवेक होना चाहिए।
2. विराग (इहाभुत्रार्थ भोग-विराग) साधक को लौकिक और पारलौकिक भोगों की कामना का परित्याग करना चाहिए।
3. षद् सम्पत्ति (शमदमादि-साधक सम्पत्) साधक को शम, दम बढ़ा, समाधान, उपरति और तितिक्षा इन छः साधनों को अपनाना चाहिए। इन्हें ही शंकर षट् सम्पत्ति कहते है।
   a. शम - मन का संयम'।
   b. दम - 'इंद्रियों का नियंत्रण' ।
   c. उपरति - अपने धर्म में जो शास्त्रों द्वारा नियम, संयम, कर्तव्य आचारण बताए गए है, उनका पालन करना।
   d. तितिक्षा - सर्दी, गर्मी सहन करने का अभ्यास।
   e. श्रद्धा - गुरु और वेदांत शास्त्रों के प्रति विश्वास रखना।
   f. समाधान - चित्त पर नियंत्रण कर उसे ब्रह्म में एकाग्र करना।
4. मुमुक्षत्व- साधक को मोक्ष प्राप्त हेतु दृढ़ संकल्प से युक्त होना। जो साधक इन चार साधनों से युक्त होकर ज्ञानमार्ग पर चलता है तो उसकी साधना तीन चरणों में संपन्न होती है-
   a. श्रवण - योग्य गुरु से उपनिषद् ज्ञान प्राप्त करना।
   b. मनन - प्राप्त ज्ञान पर तार्किक चिंतन करना।
   c. निदिध्यासन - ब्रह्म और जीव की एकता का तक निरंतर ध्यान करना, जब तक इसके एकत्व की अनुभूति न हो जाए।

**मोक्ष की अवस्थाएं (Liberation from the Cycle death and Re-birth):**

मोक्ष की 02 अवस्थाओं - जीवन मुक्ति तथा विदेह मुक्ति।

1. **जीवन मुक्ति** : जब साधक को जीवित अवस्था में ही आत्मा और परमात्मा के एकत्व का ज्ञान हो जाता है
2. **विदेह मुक्ति** : इसमें जीव को सभी प्रकार के बंधनों, चक्रों, इन्द्रियों एवं शरीर सहित मुक्ति मिल जाती है। तथा परम आनन्द की अनुभूति होती है।

**मोक्ष का स्वरूप**

आत्मा और ब्रह्म के एकत्व के कारण आत्मा का स्वरूप भी ब्रह्म के समान सच्चिदानंद होता है।

**प्राप्ति की प्राप्ति**

मोक्ष कोई नवीन वस्तु या स्थिति नहीं है। मोक्ष में व्यक्ति केवल आत्मज्ञान द्वारा अपने भूले हुए स्वरूप को पहचान लेता है। इसलिए इसे प्राप्ति की प्राप्ति कहा गया है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# सुकरात (SOCRATES)

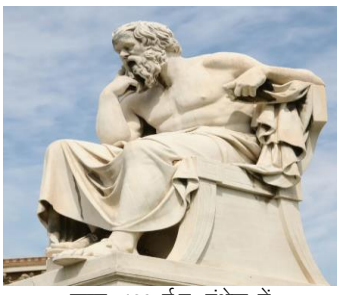

जन्म–469 ई.पू. एंथेस में
मृत्यु–399 ई.पू. (जहर पिलाकर)
पिता–सोफ्रोनिस्क्स (शिल्पकार)
माता–फिनरिट (दाई का काम)
शिष्य–प्लेटो
प्रमुख विचार– ''बिना जांगा गया जीवन जीने लायक नहीं है।''

- **परिचय :**
- सुकरात की समस्या
- सुकरात की दार्शनिक पद्धति
  - संदेहवाद
  - वाद–विवादात्मक(संवाद)
  - परिभाषात्मक
  - आगमनात्मक
  - निगमनात्मक
- सुकरात की ज्ञान मीमांसा
- सुकरात का नैतिक दर्शन
  - सद्गुण ही ज्ञान है, शिक्षणीय है, एक है, आत्मज्ञान, सद्गुण से आनंद
  - महत्व/योगदान

## परिचय

**सुकरात ने एथेंस में प्रायः नीतिशास्त्र, धर्म और राजनीति से सम्बन्धित खुले दार्शनिक वाद-विवादों को पैदा किया ।** सवांद प्रश्नोत्तर शैली है वस्तुनिष्ट प्रत्यय व सदगुरू नैतिकता का प्रस्तुत किया

## सुकरात की समस्या (Socrates Problem)

**सुकरात की समस्या उनके पूर्ववर्ती तथा समकालीन सोफिस्टों द्वारा उत्पन्न हुई थी। सोफिस्टों ने घोषित किया कि मनुष्य ही प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है। इसमें दो बातें स्पष्ट होती है, पहली- यह कि मानव महत्वपूर्ण है. दूसरी यह कि सत्यता वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ है।**

**अब यदि सत्यता आत्मनिष्ठ होगी तो हर व्यक्ति सत्य को अपने इच्छानुसार परिभाषित करेगा।**

**वस्तुनिष्ठ सत्य, ज्ञान और नैतिकता प्राप्त नहीं की जा सकती है**

**इस प्रकार सोफेस्टों ने ज्ञान और नैतिकता की जड़ें हिलाकर समाज में अराजकता व संशयवाद पैदा कर दिया था।**

**सुकरात ने इस तरह के आत्मनिष्ठ, संशयवादी और सापेक्षित दर्शन को घातक माना। यह ठीक है कि मनुष्य के विचारों में अनेकत और विविधता पाई जाती है, परन्तु इन अनेकताओं और विविधताओं में एकता और समन्वय का अनुसंधान करना ही दर्शन का लक्ष्य होना चाहिए। अतः सुकरात के दर्शन का प्रधान उद्देश्य ज्ञान और नैतिकता की समस्या का समाधान ढूंढना और उन सार्वभौमिक सत्यों की खोज करना था, जिनके विषय में सभी एकमत से। इसके लिए उन्होंने एक विशिष्ट पद्धति का आविष्कार किया, जिसे ग्रीक दर्शर में सॉक्रेटिक पद्धति कहते है।**

## सुकरात की दार्शनिक पद्धति (Socratic Method)

**दर्शन का उद्देश्य सत्य का अनुसंधान करना है। विशिष्ट पद्धति -जिसे सुकरातीय पद्धति कहा जाता है। सुकरात का दर्शन किसी को शिक्षित करने के लिए नहीं, वरन् लोगों में आत्मज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा जागृत करने के लिए था. इसके लिए उन्होंने एक द्वंद्वात्मक पद्धति (Dialectical Method) की खोज की, जो प्रश्नोत्तर की पद्धति है। निम्नलिखित विशेषताएं**

## संदेहात्मक (Method of Doubt)

**सुकरात, का दर्शन संदेह से आरंभ करते है। समस्या का समाधान ढूंढते वक्त या सत्य को परीक्षा करते समय सबसे पहले अपने को अज्ञानी बताते थे, जिसे सेक्रेटिक विडम्बना (Socratic Irony) कहते है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में बौद्धिक विनयशीलता होना अनिवार्य है। कि सोफिस्टों का संदेहवाद निश्चयात्मक और निर्णायक है, किन्तु**

इसके विपरीत सुकरात का यह संदेह अस्थायी और परीक्षात्मक है। संदेह, असंदिग्ध ज्ञान तक पहुंचने का एक साधन है।

## वाद-विवादात्मक (Conversational)

सुकरात वाद-विवाद के अत्यंत प्रेमी थे। यह प्रश्नोत्तर की पद्धति थी, जिसका शिक्षात्मक महत्व था।

वाद-विवाद एवं प्रश्नोत्तर करते हुए सत्य तक पहुंचाते थे। ज्ञान आत्मा का सहज स्वभाव है, वह कहीं बाहर से नहीं आता। शिक्षा का लक्ष्य आत्मा के इस निहित ज्ञान का विकसित करना है।

सुकरात की इस द्वंद्वात्मक प्रणाली को धात्री-प्रणाली (Maieutic Method) अथवा बौद्धिक प्रवासिकी (Intellectul Midwifery) भी कहते है। जिस प्रकार धात्री (दाई) का काम बाहर से बच्चे को मां के गर्भ में रखना नहीं, अपितु मां को बच्चा जन्म देने में मदद करना ,उसी प्रकार शिक्षा का कार्य किसी बाहरी ज्ञान को व्यक्ति के मस्तिष्क में ठूसना नहीं होता, अपितु उसका उद्देश्य मनुष्य की आत्मा में निहित् ज्ञान को स्पष्ट, विकसित और प्रस्फुटित करना

## परिभाषात्मक अथवा प्रत्यात्मक (Conceptual or Definitional)

सुकरात , ज्ञान को परिभाषाओं द्वारा प्राप्त प्रत्ययों से निर्मित ज्ञान कहते थे।

प्रत्यय से तात्पर्य- किसी भी वर्ग या जाति में निहित वे सामान्य गुण जो उसकी परिभाषा बनाते है।

उदाहरणार्थ यदि हमें मनुष्य का ज्ञान प्राप्त करना है तो अनेक मनुष्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनके सामान्य गुणों को विशेष गुणों से अलग करके देखना होगा।

हम जानते है कि मनुष्य में बौद्धिकता और पशुता के सामान्य गुण पाए जाते है। अतः इन दोनों गुणों को मिलाकर हम मनुष्य के सामान्य प्रत्यय का निर्माण करते है। -मनुष्य का वास्तविक ज्ञान इसी प्रत्यय का ज्ञान है।

-नित्यता, ज्ञान का स्वभाव है। अतः वास्तविक ज्ञान क्षणिक संवेदनाओं और क्षणिक प्रत्ययों में न होकर नित्य प्रत्ययों और परिभाषाओं में निहित होता है।

**अनुभवात्मक अथवा आगमनात्मक (Impirical or Inductive) Inductive) :** सुकरात का दैनिक जीवन में अनुभवों को अत्यंत महत्व देते और इनका उपयोग वह ज्ञान की प्राप्ति हेतु करते थे। अनुभव के द्वारा अलग-अलग विभिन्न तथ्यों की जाँच के बाद किसी एक सत्य पर पहुंचना आगमन कहलाता है। सामान्य प्रत्यय जिनसे हमारा ज्ञान निर्मित है, अनुभवों पर ही आश्रित है। अनुभवों के द्वारा हम वस्तुओं के गुणों को महसूस करते है। तत्पश्चात् तुलना करके सामान्य गुणों को विशेष गुणों से पृथक कर उनका सामान्यीकरण करते हैं। सामान्यीकरण के पश्चात् जो प्रत्यय निर्मित होता है, उसका नामकरण करते है। यही सामान्य प्रत्यय हमारे ज्ञानों के स्रोत है। इसी कारण सुकरातीय पद्धति आगमनात्मक कही जाती है।

## निगमनात्मक (Deductive)

सुकरातीय पद्धति आगमनात्मक होने के साथ निगमनात्मक भी है। निगमन, आगमन का विपरीत है। सुकरात का मानना है कि सत्य के प्रति पूर्ण संतुष्टि के लिए आगमन के साथ-साथ निगमन का भी प्रयोग करना चाहिए। आगमन द्वारा निश्चित की गई परिभाषाओं का जब तक निगमन के द्वारा परीक्षण नहीं होगा तक तक उसकी सत्यता संदिग्ध बनी रहेगी।

## सुकरात की ज्ञानमीमांसा (Epistemology of Socrates)

सुकरात की ज्ञानमीमांसा के 02 पक्ष- सोफिस्टों की ज्ञानमीमांसा का खण्डन और अपनी ज्ञानमीमांसा का स्पष्टीकरण।

सोफिस्टों - प्रत्यक्ष (Perception) ही ज्ञान है। यह प्रत्यक्ष, आत्मनिष्ठ (Subjective) होता है, अर्थात् जिस व्यक्ति को जैसा प्रत्यक्ष होता है, उसे उसका वैसा ही ज्ञान होता है। इसलिए ज्ञान -सापेक्ष (Relative) है। सोफिस्टों की इस आत्मनिष्ठ ज्ञानमीमांसा का अंत संशयवाद (Skepticism) में हो जाता है।

सुकरात ने ज्ञान को सर्वव्यापी, सर्वमान्य और वस्तुनिष्ठ कहा किसी वस्तु से परिचय के दौरान अपनी इंद्रियों की सहायता से जो ज्ञान प्राप्त करते है, उसे प्रत्यक्षीकरण कहते है। सोफिस्ट ज्ञान को यहीं तक सीमित मानते है, किन्तु सुकरात प्रत्यक्ष में आत्मनिष्ठा के साथ वस्तुनिष्ठा का तत्व भी मानते है।

-ज्ञान प्रत्यात्यक होता है. जिसका सम्बन्ध वस्तुओं में निहित सामान्य गुणों से होता है और मानव को उस शक्ति के द्वारा प्राप्त होता है, जिसे तर्कबुद्धि कहते हैं।

सामान्य गुण सभी एक प्रकार की वस्तु-विषयों में निहित होकर व्यक्ति को बुद्धि के द्वारा प्राप्त होते हैं और बुद्धि भी सभी व्यक्तियों में एक समान होती है। अतः इंद्रियों के द्वारा व्यक्ति भिन्न-भिन हो सकते हैं. पर बुद्धिपरकता के कारण सब एक समान होते है। इस प्रकार सुकरात ने सिद्ध कर दिया कि प्रत्ययों के द्वारा प्राप्त ज्ञान सामान्य सर्वव्यापक और वस्तुनिष्ठ होता है।

## सुकरात का नैतिक दर्शन (Moral Philosophy of Socrates)

सुकरात , डेल्फी के मंदिर की देववाणीं से प्रभावित, मानव ! तुम अपने को जानो (Man! Know that Self)। -सुकरात का दर्शन भी सोफिस्टों की तरह मानव केंद्रित और व्यावहारिक था। सोफिस्ट कहा करते थे जो कुछ हमें दिखता, अनुभवित होता है वहीं जान है, वहीं सत्य है। जिसे जो सुखद प्रतीत हो उसके लिए वहीं नैतिक मापदण्ड होगा। चूंकि सुख का अनुभव भिन्न-भिन्न होता है, इसलिए नैतिकता का कोई सर्वमान्य मापदण्ड नहीं हो सकता है। ऐसी स्थिति में अच्छाई बुराई में कोई अंतर नहीं रह जाएगा और नैतिक अराजकता उत्पन्न हो जाएगी।

सुकरात का उद्देश्य यूनान में फैली नैतिक अराजकता को समाप्त कर विचारों में स्थिरता लाना और निश्चित नैतिक संहिता का निर्माण करना था। सुकरात ने अपनी ज्ञानमीमांसा का प्रतिपादन भी नीति ज्ञान के संदर्भ में ही किया है। आत्मज्ञान के बिना कोई भी नीतिवान नहीं हो सकता है और नीतिवान बनने के लिए सद्गुणों (Virutes) को अपनाना आवश्यक है।

## सद्गुण ज्ञान है

ज्ञानी व्यक्ति ही सद्गुणी हो सकता है। यहां ज्ञान से तात्पर्य उचित अनुचित, सही-गलत के ज्ञान से या वास्तविकता के ज्ञान से है। इस प्रकार सद्गुण ज्ञान है या ज्ञान ही सद्गुण है और ज्ञान- प्रत्यय के द्वारा प्राप्त होता है। प्रत्यय- सर्वमान्य सर्वव्यापी और वस्तुनिष्ठ होते है। अतः सद्गुण भी वस्तुनिष्ठ होंगे। इस प्रकार वह नीति सर्वमान्य होगी जो प्रत्ययों पर आधारित होगी और जिन प्रत्ययों को बुद्धि के द्वारा जाना जाएगा।

सुकरात -ज्ञान सद्गुण है, वरन् इसका विपरीत यह भी कहते है अज्ञान दुर्गुण है।

ज्ञान से तात्पर्य मात्र जानकारी से नहीं है, अपितु अंतरइंष्टि से प्राप्त सत्य से है। अगर व्यक्ति को ज्ञान है , कि शुभ क्या है तो अवश्य ही शुभ कर्म करेगा। एक चोर वस्तुतः अच्छे से नहीं जानता है कि चोरी करना बुरा है, इसलिए वह चोरी करता है।

## सद्गुण शिक्षणीय है

सद्गुण ज्ञान है और ज्ञान सिखाया जा सकता है। उनका मानना है कि सद्गुण के लिए सच्चरित्र का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए

## सद्गुण एक है

VIDYA ICS
Dedicated to Civil Services

सद्गुण एक है, वे कहते है कि शुभ, न्याय, आत्मसंयम आदि सद्गुण अलग-अलग न होकर ज्ञानरूपी सद्गुण के विभिन्न प्रकार है।

## सद्गुण का आत्मज्ञान

उनका प्रसिद्ध वाक्य है अपने को जानो (Know thyself)।

उनका मानना है कि आत्मज्ञान के बिना कोई भी नीतिवान नहीं होता। आत्मज्ञानी ही वास्तव में सद्गुणी होता है और वहीं सच्चा सुख पाता है।

## सद्गुण से आनंद

सद्गुण के द्वारा व्यक्ति को आनंद प्राप्त होता है। उनके अनुसार सद्गुण ज्ञान है और यह ज्ञान शुभ का है और शुभ मानव कल्याण में निहित है। अतः सद्गुण वह है जिसे प्रज्ञावान शुभ समझकर करता है। शुभ कार्य करने के फलस्वरूप आनंद की प्राप्ति होती है।

## सुकरात का महत्व (Importance of Socrates)

सुकरात ने ग्रीक दर्शन में उस विचारधारा का सूत्रपात किया, जिसने प्लेटो और अरस्तू जैसे महान् दार्शनिकों को जन्म दिया। उन्होंने दो क्षेत्रों में यूनानी चिंतन को प्रभावित किया ज्ञानमार्ग एवं नीतिदर्शन। आगे उनके शिष्य प्लेटो ने सुकरात की ज्ञानमीमांसा को तत्वमीमांसा में परिणय कर दिया और उन्होंने प्रत्यय को ही परम तत्व के रूप में स्थापित किया। यहीं प्रत्ययवाद की धारा आगे स्पिनोजा, बर्कले से होकर हीगल के प्रत्ययवाद में पूर्णतः विकसित हो गई।

सुकरात का मुख्य उद्देश्य- मानव को सदाचारी जीव बनाना इसलिए उन्होंने नीतिदर्शन, एवं सद्गुण नैतिक दर्शन की स्थापना की, जिसका प्रभाव प्लेटो और अरस्तू के दर्शन में दिखाई देता है। अतः सुकरात का दर्शन पाश्चात्य् दर्शन में एक अपूर्व क्रांति था।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# प्लेटो का दर्शन ( PLATO)

- परिचय
- रचनाऐं
- सिद्धांत (दर्शन)
  - ज्ञान मीमांसा (प्रत्ययवाद)
  - तत्व मीमांसा (प्रत्यय जगत्)
- नैतिक विचार
  - नीति मीमांसा (सद्गुण की अवधारणा)
- राजनैतिक दर्शन
  - ↓
  - न्याय सिद्धांत
  - आदर्श राज्य की अवधारण
- महत्व व निष्कर्ष

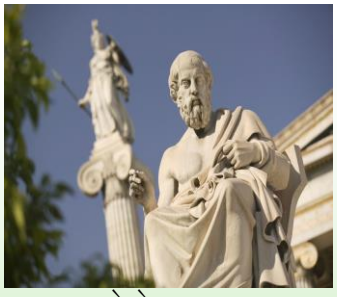

नाम – प्लेटो
(मूलनाम–अरिस्टोक्लीज)
जन्म – 428 ई.पू.
स्थान – एथेन्स नगर
पिता – एरिस्टन
माता – पेरिक्टोन
मृत्यु – 347 ई.पू.
विशेष – सुकरात का शिष्य
संस्था – एकेडमी (पाठशाला)

**परिचय :–**
प्रत्ययवादी, बुद्धिवादी व पाश्चात्य जगत का प्रथम स्वप्नदर्शी, आदर्शवादी एवं व्यवस्थित दार्शनिक

**रचनाऐं** – रिपब्लिक (आदर्श राज्य,साम्यवाद का वर्णन), एपोलॉजी (दार्शनिक), द लॉज फिलेवस (नैतिक दर्शन), थीटिटस, द स्टेट्समैन, सिम्फोजियम, क्रीटो।

## सिद्धांत (प्रत्ययवाद)

### प्लेटो की तत्वमीमांसा (प्रत्ययवाद) (Theory of Ideas)

- प्लेटो का यह एक मौलिक सिद्धांत है। जो ज्ञानमीमांसा व तत्वमीमांसा दोनों से संबंधित है।
- सुकरात के 'ज्ञान के प्रत्यय' को तत्वमीमांसा दृष्टि से विकसित रूप में प्रस्तुत किया है
- प्लोटो के अनुसार, सत्ता उसी की है जो अपरिवर्तनशील व स्थाई है।
- जगत तो परिर्वतनशील है – जगत के मूल में जो स्थायी है वह प्रत्यय है। अतः सत्ता प्रत्यय की है।
- ज्ञानमीमांसा दृष्टिकोण से प्रत्यय ही ज्ञान के विषय है, तो दूसरी ओर तत्वमीमांसा दृष्टिकोण से प्रत्यय की ही वास्तविक सत्ता है।

प्रत्ययों का अपना लोक है, प्राकृतिक जगत से परे –इसे प्रत्ययों का दिव्यजगत् (The Divine World of Ideas).

### प्रत्यय सिद्धांत व विशेषताऐं

1. प्रत्यय सामान्य होते है , किसी वर्ग या जाति के सामान्य गुण।
2. किसी वर्ग के सार का वर्णन
3. जगत की वस्तुओं के मूल आकार है, अतः द्रव्यस्वरूप है।
4. देशकाल से परे है।
5. स्थाई व अनश्वर है।
6. प्रत्यय–वस्तु संबंध
7. प्रत्ययों का अपना जगत होता है जिसे प्रत्ययलोक कहते है। सभी प्रत्यय वहीं निवास करते है।
8. बौद्धिक – प्रत्यय जन्म से ही निहित होते है। इंद्रियों उद्दीपन से ज्ञान प्रस्फुटन होता है।
9. शुभ का प्रत्यय– अर्थात् ईश्वर, सर्वोच्च है। अन्य सभी प्रत्यय शुभ की अभिव्यक्ति के सोपान है।

**प्रतिबिंववाद**
वस्तुऐं प्रत्यय की प्रतिबंधित है।
जो पूर्ण सत्य नहीं है।

**सहभागितावाद**
वस्तुऐं प्रत्यय जो की सहभागी है।
जितनी ज्यादा सहभागिता उतनी अधिक सत्यता।

### आलोचना

- प्रत्यय वस्तु का सारतत्व है, अतः स्वतंत्र सत्ता संभव नहीं है।
- अविनाशी, स्थाई प्रत्यय से विनाशी एवं अस्थायी जगत की व्याख्या संभव नहीं है।
- प्रत्यय जगत की मान्यता काल्पनिक
- प्रतिबिंववाद एवं सहभागिता सिद्धान्त की स्पष्ट व्याख्या नहीं।
- प्रत्यय जगत व प्रत्यक्ष जगत की तार्किक व्याख्या नहीं।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

**ईश्वर संबंधी विचार**

- ईश्वरवादी दार्शनिक है। ईश्वर नित्य, शुद्ध, पूर्ण है।
- प्रत्ययवाद की व्याख्या हेतु ईश्वर का प्रतिवादन किया।
  प्रत्ययों की एक व्यवस्थित श्रृंखला है, जिसमें उच्चतर व निम्नतर प्रत्ययों का श्रेणी विभाजन मिलता है। इस क्रम में शुभत्व का प्रत्यय (ईश्वर) सर्वोच्च है। अन्य सभी प्रत्यय शुभ की अभिव्यक्ति के ही सोपान है।, विभिन्न प्रत्ययों का आधार सुख का प्रत्यय (Idea of God) ही है, जो सभी प्रत्ययों में समन्वय स्थापित करता है।
- ईश्वर शुभ है, उसने शुभ से प्रेरित होकर विश्वर की रचना की ताकि सभी वस्तुऐं शुभ हो।
- सृष्टि के 4 कारण है।

1. निमित्त → ईश्वर  2. उपादन → जड़त्व  3. स्वरूप → प्रत्यय  4. लक्ष्य → शुभ

- ईश्वर अस्तित्व सिद्धि के प्रमाण, कारणता तर्क के आधार पर प्रस्तुत किये।

**प्लेटो की ज्ञान मीमांसा**

प्लेटो बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा के प्रवर्तक है। इनके दर्शन का आधार प्रत्यय सिद्धांत है।
दो दृष्टिकोण से विचार करते है। ज्ञान को जानने से पहले जो 'ज्ञान नहीं है' उसे जानना आवश्यक है।

**1. ज्ञान क्या नहीं है।**

- 'प्रत्यक्ष' ज्ञान नहीं है क्योंकि यह आत्मनिष्ठ होता है।
- 'मत' ज्ञान नहीं है। यह भी आत्मनिष्ठ होता है।
  यह दोनों कभी–कभी गलत भी हो सकता है।

**2. ज्ञान क्या है।**

- ज्ञान अपरिवर्तनशील, सास्वत, सार्वभौमिक होता है।
- वस्तुनिष्ठ मापदंड का आधार है।
- अतः सम्यक ज्ञान का अर्थ–प्रत्ययों का ज्ञान।
- यह बौद्धिक अंतदृष्टि (Rational Insight) से प्राप्त होता है।

इसप्रकार ज्ञान के विषय प्रत्यय (Idea) है।
मत के विषय प्राकृतिक है।
प्लेटो ने प्रत्ययों को स्थिर, अपरिवर्तनशील एवं वास्तविक सत्ता कहा है।

**ज्ञान के 4 स्तर**

1. काल्पनिक–भ्रम, स्वप्न, कल्पना आदि – निम्नतम स्तर
2. व्यवहारिक–प्रत्यक्ष, मत, विश्वास – व्यवहारिक जीवन में प्रयोग
3. तार्किक–वैज्ञानिक, गणितीय,ज्ञान। – पूर्ण ज्ञान
4. बौद्धिक अंतदृष्टि–प्रत्ययों का ज्ञान – यही पूर्ण ज्ञान है।

## नैतिक दर्शन व अन्य विचार

**नैतिक सद्गुण → न्याय सिद्धांत → आदर्श राज्य की अवधारणा का सम्मिलत क्रम है।**

**नैतिक विचार/नीति मीमांसा**

प्लेटो ने अपने ग्रंथ 'फिलेबस व द रिपब्लिक' में नैतिक विचार प्रस्तुत किये। माना कि मनुष्य को संतुलित एवं सांमन्जस्यपूर्ण जीवन जीना चाहिये।

**सद्गुण नीतिशास्त्र**

सुकरात की तरह प्लेटों की नीतिशास्त्र सद्गुणों पर आधारित है। प्लेटो ने नैतिकता की संकल्पना दो स्तरों पर की है।

1. **व्यक्तिगत स्तर पर**– प्लेटो ने मनुष्य को 4 गुणों से युक्त बताया है।
2. **सामाजिक एवं राज्य स्तर पर**–
3. **व्यक्तिगत स्तर पर**– प्लेटो ने मनुष्य को 4 गुणों से युक्त बताया है।

**कार्डिनल गुण**

विवेक  संयम  साहस  न्याय

1. **विवेक**– ज्ञान व बुद्धि का सद्गुण अच्छे–बुरे, सही–गलत में अंतर करने में सक्षम।
2. **संयम**– आत्मनियंत्रण अर्थात् अपनी भावनाओं, इच्छाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होना। साथ ही लालच, क्रोध आदि से दूर रहना।
3. **साहस**– वीरता, और दृढत्रता का सद्गुण। कठिन परिस्थितियों का सामना व सही कार्य करने हेतु तैयार।
4. **न्याय**– सभी सद्गुणों का समावेशी सद्गुण है। अर्थात् हम दूसरों के साथ उचित व निष्पक्ष व्यवहार करें।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

विवेक, संयम, साहस का सही अनुपात एवं सामंजस्य से न्याय सद्गुण विकसित होता है। न्यायपूर्ण व्यक्ति ही ऐसा व्यक्ति विवेकपूर्ण आचरण करता है, साहस द्वारा बाधाओं से पार पाता है। संयम द्वारा इंद्रियों पर नियंत्रित रखता है।

प्लेटो ने अपना नैतिक सद्गुण की अवधारणा के क्रम में सोफिस्टों के सुखवाद का खंडन किया।

- सुद–दुख आत्मनिष्ठ मानसिक भाव होते है। , अस्थायी हाते हैं, परिवर्तित होते रहते है।
- सुख को नैतिकता का मापदंड बनाने कसे अच्छे–बुरे, नैतिक–अनैतिक का भेद समाप्त हो जायेगा।

## न्याय सिंद्धात

न्याय सिद्धांत प्लेटो के दर्शन की आधारशिला है। रिपब्लिक में वर्णित आदर्श राज्य का मुख्य उद्देश्य न्याय की प्राप्ति है। प्लेटो की 'द रिपब्लिक' को न्याय विषय ग्रंथ Concerning Justice) कहा है। न्याय सिद्धांत, नैतिकता से संबंधित है।

- प्लेटो के लिये 'न्याय' केवल नियम पालन न होकर, मानवीय आत्मा की अंतःप्रकृति आत्मा पर आधारित सिद्धांत है।
- राज्य में एकता व समरसता लाने हेतु।

न्याय एक आंतरिक वस्तु है। आत्मा का अभिन्न अंग है।

**प्लेटो के न्याय के 2 रूप है।** 1. व्यक्तिगत न्याय 2. सामाजिक एवं राज्य के स्तर पर न्याय

**1. व्यक्तिगत न्याय :–** न्याय व्यक्ति की आत्मा में निहित तीन गुणों के सामंजस्यपूर्ण विकास में निहित होता है।

1. **विवेक**–ज्ञान एवं बुद्धि का गुण।
2. **साहस**– वीरता व आत्मविश्वास का गुण
3. **संयंम**– आत्मनियंत्रण तथा संतुलन का

जब व्यक्ति की आत्मा के साहस एवं संयम तत्व/गुण–विवेक के नियंत्रण और अनुशासन में कार्य करते है। इस स्थिति में आत्मा के तीनों तत्वों में संयोग, एकता, व सामंजस्य होता है। यही व्यक्तिगत न्याय है।

**2. सामाजिक एवं राज्य के स्तर पर न्याय**

**राज्य या समाज व्यक्तियों की ही अभिव्यक्ति है। व्यक्तियों के तीन गुणों के आधार पर प्लेटो ने समाज के तीन वर्गों की पहचान की ।**

समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया।

1. **शासक वर्ग**– विवेकपूर्ण एवं ज्ञानी व्यक्ति समाज का नेतृत्व करें।
2. **सैनिक वर्ग**– साहसी और वीर व्यक्ति जो समाज की रक्षा करें।
3. उत्पादक वर्ग– कर्मठ व कुराल व्यक्ति जो समाज की आवश्यकता को पूरा करें।

| सामाजिक वर्ग | आत्मा की प्रवृत्ति | व्यक्तिगत सद्गुण |
|---|---|---|
| उत्पादक | तृष्णा/इच्छा | संयम |
| सैनिक | मनोवेग/भावना | साहस |
| दार्शनिक | ज्ञान | विवेक |
| समाज व्यवस्था के लिये उपयुक्त सद्गुण न्याय | | |

उपरोक्त समाज के तीनों वर्ग अपने स्वभाव अनुरूप कार्यों (कर्त्तव्यों) को पूरा करें तो सामाजिक न्याय की प्राप्ति होगी। राज्य के संदर्भ में न्याय का अर्थ :–संयमशील उत्पादक वर्ग को साहसी सैनिक वर्ग का सरंक्षण प्राप्त हो और इन दोनों को बुद्धिमत्ता संम्पन्न दार्शनिक वर्ग (दार्शनिक शासक) का मार्गदर्शन प्राप्त हो। इस प्रकार प्लेटो का 'न्याय सिद्धांत' व्यक्ति व राज्य दोनों का सर्वोत्तम सद्गुण है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### विशेषताऐं

- विशिष्टीकरण का सिद्धांत – प्रत्येक व्यक्ति अपना कार्य करें।
- अहस्तक्षेप का सिद्धांत
- व्यक्तिवादी का विरोधी – समाज से प्रथक व्यक्ति का अस्तित्व व नकारा।
- सामंजस्य एवं एकता का सिद्धांत।
- कर्त्तव्यपालन,आत्मा का गुण, न्याय के दो रूप

### आलोचना

- केवल नैतिक, कानूनी नहीं।
- कर्त्तव्यों पर अधिक बल।
- बंद समाज, अलोकतांत्रिक।
- निरकुंशवाद को बढ़ावा।
- श्रम प्रणाली विभाजन का अभाव।

## आदर्श राज्य की अवधारणा

- प्लेटों के ग्रंथ 'द रिपब्लिक' में आदर्श राज्य की संकल्पना :– यह प्लेटो का राजनैतिक आदर्शवाद है।
- प्लेटो का 'आदर्श राज्य' न्याय सद्गुण की अवधारणा पर आधारित है। प्लेटों के अनुसार इस राज्य के सभी युवा, नागरिकों को खुशी व समृद्धि प्राप्त होगी।
- आदर्श राज्य के **चार स्तम्भ** है।

1. दार्शनिक शासक 2. न्याय अवधारणा 3. शिक्षा 4. साम्यवाद

**विशेषताऐं**

**1. शासन व्यवस्था**

- दार्शनिक राजा– राज्य का शासन केवल ज्ञान और सद्गुणी व्यक्तियों के द्वारा ही किया जाना चाहिये
- **त्रिवर्ग व्यवस्था**– समाज 3 वर्गों में विभाजित

1. शासक → दार्शनिक  2. रक्षक → सैनिक  3. उत्पादक → किसान, व्यापारो, कारीगर

**2. शिक्षा व्यवस्था**

- सभी नागरिकों को शिक्षा द्वारा अपने कार्यों में निपुण करना।
- शिक्षा का उद्देश्य न्याय, ज्ञान, चार सद्गुण और नागरिकता की भावना का विकार करना।

**3. सम्पत्ति/सांम्यवाद**

- निजी सम्पत्ति का उन्मूलन।
- सभी नागरिकों को राज्य द्वारा समान अवसर व सुविधाऐं।
- सम्पत्ति व परिवार के स्तर पर सांम्यवाद की स्थापना।
- राजनैतिक व आर्थिक उत्पादन की शक्तियों का प्रथककरण।

**4. न्याय**

- राज्य का सर्वोच्च सद्गुण।
- प्रत्येक नागरिक को अपनी योग्यता के अनुसार कार्य का अवसर प्राप्त।
- स्वकर्त्तव्य पालन व्यक्तिगत व सामाजिक वर्ग के स्तर पर।

**5. महिलाओं की भूमिका**

- पुरूषों के समान अधिकार व अवसर प्राप्त।
- शिक्षा व शासन में भाग लेने का अधिकार प्राप्त।
- परिवार में **'मैं'** की भावना का अभाव।

**आलोचना**

- आदर्श राज्य अव्यवहारिक।
- न्याय सिद्धांत दोषपूर्ण।
- आधुनिक राज्यों पर लागू नहीं।
- कानून की उपेक्षा।
- दास प्रथा पर मौल।
- दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था।

**निष्कर्ष व महत्व**

दर्शन के स्तर पर बुद्धिवाद व प्रत्ययवाद की व्यवस्थित व्याख्या और राजनैतिक आदर्शों की स्थापना। न्याय सद्गुण की व्यवस्थित प्रस्तुति, स्वकर्त्तव्यपालन को बढ़ावा व भेदभाव, असमंजस एवं टकराव से मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत किया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# अरस्तु (Aristotle)

- परिचय
- रचनाऐं
- तत्वमीमांसा
  - ईश्वर विचार
  - द्रव्य सिद्धांत
  - कारणता सिद्धांत
- नीति मीमांसा
  - सुकरात, प्लेटो का खंडन
  - सद्गुण नैतिकता
  - स्वर्णिम मार्ग
- न्याय का सिद्धांत
- महत्व व निष्कर्ष

नाम – अरस्तु
(मूलनाम–अरिस्टोक्लीज)
जन्म – 384 ई.पू.
स्थान – स्टेगिरा नगर
पिता – निकोमैकस.
माता – फेस्टिंस
मृत्यु – 322 ई.पू.
विशेष – प्लेटो का शिष्य
संस्था – लाइसियम (पाठशाला)

**परिचय :** व्यवहारिक मध्यमार्गीय, बहुमुखी विद्वान इन्होंनें दर्शन, नीति, विज्ञान, तर्कशास्त्र राजनीति व भौतिकी आदि विषयों पर व्यापक गंभीर व व्यवस्थित चिंतन प्रस्तुत किया। ग्रीक शिरोमणि कहलाते है।

**रचनाऐं** – यूडीमस, मेटाफिजिक्स, निकोमेशियन इथिक्स, द पॉलिटिक्स, ऑन हेवेन्स इत्यादि।

## तत्वमीमांसा

प्लेटो के दर्शन का विकसित रूप। अरस्तु ने प्राकृतिक तथ्यों के निरीक्षण में रूचि प्रदर्शित की तथा अनुभववाद की उपेक्षा नहीं की। अनुभाविक पक्ष को भी जोड़ा।

### परम तत्व/मूल तत्व/ईश्वर विचार

पाश्चात्य दर्शन में सुकरात ने संप्रत्यय (Concept), प्लेटो ने प्रत्यय (Idea) जबकि अरस्तु ने शुद्ध आकार (Pure Form) कहा है। जहां प्लेटो ने मूल तत्व – प्रत्यय को माना एवं प्रत्यय के लिये प्रत्यय जगत की कल्पना की वहीं अरस्तु ने मूल तत्व को आकार माना, जो अपना स्वतंत्र, आत्मनिर्भर अस्तित्व रखता है व सारतत्व होता है। इस तरह प्लोटो के काल्पनिक प्रत्ययजगत को जमीन पर लाया।

अनुभव जगत से परे दो निरपेक्ष विकल्प है।
1. **शुद्ध आकार** पदार्थ विहीन है → ईश्वर → शुद्ध आकार होने के कारण इंद्रियों द्वारा अनुभव नहीं।
2. **शुद्ध पदार्थ** आकार विहीन → मूल प्रवृत्ति → आकार विहीन होने के कारण प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं।

उपरोक्त दोनों निरपेक्ष सत्ता एक तार्किक संभावना है। अतः अरस्तु हमारे दृश्यमान जगत की प्रत्येक वस्तु को पदार्थ मानकर और आकार का मिश्रण मानते है।

### द्रव्य सिद्धांत (Substance)

प्रत्येक वस्तु द्रव्य है। जो पदार्थ (सामग्री/Matter) तथा आकार (Form) से मिलकर बनी।
द्रव्य विचार को समझने से पहले कारणता सिद्धांत को समझना होगा।

### कारणा सिद्धांत

अरस्तु लौकिक जगत की व्याख्या के लिये स्थायित्व के साथ–साथ जगत में हो रहे परिवर्तनों का कारण खोजते है। इसकी व्याख्या हेतु – कारणता सिद्धांत। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है।
अरस्तु ने प्रत्येक कार्य के पीछे 4 कारणों को माना।

1. उपादान कारण – सामग्री → पदार्थ
2. निमित्त कारण – निर्माता
3. स्वरूप/आकारिक कारण – कार्य } आकार
4. लक्षय कारण – प्रयोजन

अर्थात् द्रव्य के दो महत्वपूर्ण तत्व पदार्थ व आकार है। संसार की समस्त वस्तुऐं इन्हीं दो तत्वों से मिलकर बनी।

1. **पदार्थ** – जड़ तत्व : वह है जो किसी भी प्रकार का आकार ग्रहण करने की संभावना से युक्त है।
2. **आकार** – सार तत्व : आकार वास्तविकता है यह किसी विशेष वस्तु का सार तत्व है।

**पदार्थ व आकार की व्याख्या**

संभाव्यता बनाम वास्तविकता से
↓
अर्थात् पदार्थ वह है जो अपने आकार की ओर गतिशील है या संभाव्यशील है।
जैसेः मिट्टी के लौदे से घड़ा
अतः अरस्तु, प्लेटो के विरूद्ध संसार के विकास व परिवर्तन को अर्थपूर्ण व सत्य कहते है।

**पदार्थ व आकार में संबंध**

सापेक्ष एवं परिवर्तनीय संबंध है । एक दृष्टिकोण से जो वस्तु पदार्थ है, दूसरे दृष्टिकोण से वही आकार है।
जैसेः कपास (पदार्थ) → धागा (आकार)
धागा (पदार्थ) → कपडा (आकार)
कपडा (आकार) → शर्ट (आकार)

**प्रयोजन मूलक विकासवाद**

जगत की व्याख्या ईश्वरीय प्रयोजन के माध्यम से
↓
विकासवाद से तात्पर्य प्रत्येक वस्तु उच्च प्रयोजन की ओर गतिशील है।
↓
वस्तुओं के उच्च एवं निम्न स्तर होने का निर्णय उनमें निहित पदार्थ और आकार के अनुपात से होगा।
↓
पदार्थ की उच्च मात्रा → निम्न वस्तु
↓
आकार की उच्च मात्रा → उच्च वस्तु

**ज्ञानमीमांसा**

वास्तविक/यर्थाथ् के लिये बुद्धिवाद के साथ–साथ अनुभववाद को भी साधन माना।

**नीति मीमांसा (Ethics)**

अरस्तु ने निकोमेशियन दूथिक्स में पहली बार पाश्चात्य नीति मीमांसा को व्यवस्थित वर्णित किया।
अरस्तु ने सुकरात व प्लेटो की नैतिकता को एकपक्षीय कहा। क्योंकि इन्होंने मानव के दूसरे पक्ष सहज ईच्छा, भावनाओं की उपेक्षा की। जबकि अरस्तु ने इस दूसरे मानवीय व्यवहारिक पक्ष को अपने नैतिक दर्शन में बौद्धिक नियमन व नियत्रंण के आधार पर सम्मिलित किया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

**नैतिक सद्गुण**

अरस्तु ने सुकरात/प्लेटो के **'ज्ञान ही सद्गुण'** है। **'सद्गुण के ज्ञान'** के साथ–साथ सद्गुण अनुरूप व्यवहार को भी आवश्यक माना। इस तरह से अरस्तु ने सुकरात, प्लेटो की सद्गुणीय नैतिकता के साथ अनुभावित पक्ष को भी समाहित किया।

- मानव ने बुद्धि के साथ–साथ भावनाऐं भी पाई जाती है। अतः सुख का पूर्णतः त्याग मानव स्वभाव के विरूद्ध है। अतः भावनाओं की आपूर्ति बुद्धि के नियंत्रण में करने हेतु **दो सद्गुण** बतायें। यह विभाजन आत्मा के दो पक्षों **बौद्धिक और भावनात्मक** पक्षों पर आधारित है।

**दो सद्गुण**

| **बौद्धिक सद्गुण** | **नैतिक सद्गुण** |
|---|---|
| मानव को शेष प्राणियों से अलग बनाता है। | आत्मा का भावनात्मक पक्ष इच्छाओं व वासनाओं से संबंधित। |
| दार्शनिक एवं वैचारिक जीवन में निहित। | इन्हें नैतिक जीवन की सामग्री माना। |
| बौद्धिक सद्गुण ही मानव के लिये परम शुद्ध है। | इस भावपक्ष के त्याग की बजाय बुद्धि द्वारा नियमन। बुद्धि के द्वारा वासनाओं और भावनाओं के नियमन को **नैतिक सद्गुण** कहा है। |

**स्वर्णिम माध्य का सिद्धांत (The Theory of Goden Mean)**

- नैतिक सद्गुण का स्त्रोत है।
- दो अतियों के मध्य का मार्ग

| वैराग्यवादी | सुखवादी |
|---|---|
| भावनाओं की उपेक्षा | बौद्धिक पक्ष की उपेक्षा |
| नैतिक सद्गुण का सार समाप्त | पाशविक सुख को श्रेष्ठ मानने की भूल |

दोनों के मध्य का मार्ग स्वर्णिम माध्य कहलाता है।
जैसे साहस (कायरता और उतावलेपन के मध्य का गुण)
विनम्रता (उदण्डता और चापलूसी के मध्य का गुण)

**महत्व**

- भावनाओं, वासनाओं का उत्पीड़न नहीं वरन् बुद्धि द्वारा नियन्त्रण।
- जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग
- नैतिक सद्गुण व बौद्धिक सद्गुण प्राप्ति के साधन।

**आलोचना**

- हर जगह, प्रत्येक परिस्थिति में लागू नहीं।
- कोई तार्किक वस्तुनिष्ठ आधार नहीं।
- संकल्प स्वास्थ्य की अवधारणा थी, प्रत्येक परिस्थिति में लागू नहीं।

**पूर्णतावाद**

बुद्धि द्वारा भावनाओं का नियमन व अतिशय वैराग्य व भोग का त्याग ही पूर्णतावादी नीतिशास्त्र है।

**सद्गुणों की संख्या**

निश्चित नहीं, निर्माण परिस्थिति के अनुसार।

**सद्गुणों अभ्यासजन्य नहीं है**

सद्गुणी जीवन हेतु निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।
सद्गुणों का केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं, उसका आचरण भी जरूरी है।

VIDYA ICS
Dedicated to Civil Services

## अरस्तु का न्याय सिद्धांत

अरस्तु का न्याय सिद्धांत नैतिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्लेटो के न्याय सद्गुण से आगे जाकर अरस्तु ने, **'न्याय'** को एक सद्गुण तो माना है, लेकिन न्याय को सम्पूर्ण सद्गुण और सभी अच्छाईयों का मूर्त रूप माना। यहां न्याय एक मात्र सद्गुण न होकर यह सद्गुण से कुछ अधिक है। यह कार्य रूप में सद्गुण है। अतः व्यवहार में सद्गुणों को लाने वाली स्थिति ही न्याय सद्गुण है।

उदा. **'तर्कबुद्धि'** एक सद्गुण है। किन्तु **'तर्कसंगत आचरण'** न्याय है। सच्चाई एक सद्गुण है, किन्तु 'सच्चा होना' न्याया है। विवेकी होना सद्गुण है जबकि विवेकपूर्ण आचरण न्याय है।

**न्याय के 2 प्रकार**

**न्याय**

| सामान्य न्याय/व्यक्तिगत न्याय | विशेष न्याय |
|---|---|
| • यह न्याय का व्यापक अर्थ है जो कानून और नैतिकता के पालन से जुड़ा हुआ है।<br>• यह समाज के सभी सदस्यों को लिये समान व्यवहार व अवसरो की गारंटी देता है। | यह व्यक्तियों के बीच संबंधों और व्यवहारों को नियंत्रण करता है।<br>विभिन्न अनुबंधो में निष्पक्षता और समानता सुनिश्चित करता है। |

**व्यक्तिगत न्याय–** स्वर्णिम माध्य का सिद्वान्त अर्थात् जब मानवीय व्यवहार में दो अतियों के बीच की साम्य अवस्था हो वही स्थिति न्याय है।

- व्यक्ति में सद्गुणो की साम्यावस्था ही न्याय है।

**विवरणात्मक न्याय**

- यह न्याय लाभों, सामाजिक सम्मानों व पदों के वितरण को नियंत्रित करता है।
- यह योग्यता और योगदान के आधार पर समानता और आनुपातिकता सुनिश्चित करता है।

**प्रतिशोधात्मक न्याय**

- अपराध और दंड के बीच का नियंत्रण।
- अपराधियों को अपराध के अनुपात में दण्डित करता है।
- सामाजिक व्यवस्था व न्याय की भावना बनाये रखता है।

## विशेषताऐं

- न्याय एक सद्गुण है, अतः कानूनी व नैतिक दोनों है।
- समानता आधारित न्याय है, न्याय सर्वोच्च सद्गुण है क्योंकि सभी सद्गुण न्याय में ही शामिल हैं।
- आनुपातिकता पर आधारित न्याय।
- कानून तथा नैतिकता से जुड़ा हुआ है।

## आलोचना

- राज्य की सेवा का मानदंड स्पष्ट नहीं।
- राज्य को दिये गये धन के आधार पर सम्मान की पात्रता।
- दण्ड के नियम पूर्णतः अंकगतिणतीय आधारित नहीं हो सकते।
- लाभ वितरण में सामाजिक प्रथाओं परंपराओं को आधार बनाया जो लाभ वितरण के लिये तार्किक नहीं माने जा सकते।

**प्लेटो और अरस्तु के न्याय की तुलना।**

| प्लेटो | अरस्तु |
|---|---|
| 1. इनका न्याय स्वः कार्यों का विशिष्टीकरण है। | 1. सद्गुणों को व्यवहार में लाना। |
| 2. यह कर्त्तव्यों से जुड़ा है। | 2. यह अधिकारों से जुड़ा है। |
| 3. यहां नैतिक व दार्शनिक है। | 3. यह नैतिक व विधिक दोनों है। |
| 4. यह अध्यात्मिक है। | 4. यह व्यावहारिक, सद्गुण कार्यरूप में है। |
| 5. व्यक्ति की अंतःप्रेरणा, आत्मा का गुण है। | 5. मनुष्य के कर्मों से संबंधित बाध्यकारी क्रियाकलाप |

## महत्व

यह प्रथम व्यवस्थित, विकसित पाश्चात्य दर्शन है। जो व्यावहारिक दर्शन है। एवं अच्छे कर्मों पर बल, भावनाओं पर, इच्छाओं पर बौद्धिक नियमन की बात करता है। एवं राजनैतिक दर्शन में न्याय सिद्धांत का नैतिक व विधिक रूप जो व्यापक महत्व है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# जैन दर्शन (महावीर स्वामी)

- परिचय
- अर्थ – जिन (जैन)
- सिद्धांत (दर्शन)
  - तत्व मीमांसा (अनेकांतवाद)
  - ज्ञान मीमांसा (स्यादवाद)
- नैतिक विचार
  - नीति मीमांसा (बंधन–मोक्ष)
  - त्रिरत्न, पंचमहावृत
- कमियां
- महत्व व निष्कर्ष

- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे
- जन्म – 540 ई.पू., वैशाली गणराज्य के कुंडग्राम में
- पिता – सिद्धार्थ, माता – त्रिशाला
- पत्नी – यशोदा
- दामाद – जमाली (प्रथम शिष्य)
- बचपन का नाम–वर्धमान
- ज्ञान प्राप्ति – जम्भिक गांव, ऋजुपालिका नदी, साल वृक्ष
- मृत्यु (निर्वाण) – पावापुरी (राजग्रह बिहार) 468 ई.पू. में (72 वर्ष में)
- उपाधि–केवलिन (सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त व्यक्ति), प्रतीक चिन्ह – सिंह

**परिचय**–अनेकांतवादी, बहुतत्ववादी, स्यादवादी, वस्तुवादी, एवं सापेक्षतावादी दर्शन हैं।

**अर्थ** –'जैन' शब्द **जिन** से बना है, 'जिन' का अर्थ–**विजेता**। महावीर स्वामी जी ने अपनी इंद्रियो, राग, द्वेष व काम वामवाश्नाओं पर विजय प्राप्त की इसलिए जिन कहलाये। उनके शिष्य व अनुयायी जैन कहलाये ।

**साहित्य/रचनाऐं** – स्वामी जी के उपदेशों को उनके अनुयायियों ने 'आगम ग्रंथ' में संकलित किया। अन्य ग्रंथ तत्वार्थाधिगम सूत्र।

## सिद्धांत (दर्शन)

### तत्वमीमांसा (Meta Physics)

**इनकी तत्वमीमांसा** – बहुतत्ववादी, वस्तुवादी, सापेक्षतावाद पर आधारित है जिसे अनेकांतवादी कहा है।

- **अनेकांतवाद** – सत्ता की अनेकता का सिद्धांत। अनेकांतवाद शब्द – अनेक + अंत + वाद = यहा अंत का अर्थ वस्तु व गुण धर्म से है। इस प्रकार जगत में अनेक वस्तुऐं है। जिनमें प्रत्येक में अनंत धर्म (गुण) है।
- इस प्रकार, जगत में अनके सत्ताओं को स्वीकार किया।
- सत्ता के लिये द्रव्य शब्द का प्रयोग।
- द्रव्य स्वरूप को अनेक दृष्टिकोण से देखने पर अनंत धर्म गुण होते हैं जो प्रायः 2 प्रकार के होते है।

**1. नित्य धर्म (स्थायी गुण)/ स्वरूप धर्म**

- वस्तु में सदैव विद्यमान, अस्तित्व हेतु आवश्यक।
- स्वरूप धर्म भी कहते है।
- जैसे स्वर्ण का पीलापन

**2. अनित्य धर्म (अस्थायी गुण)/ आगुंतक धर्म**

निरंतर परिवर्तित होते रहते है।
आगुंतक धर्म कहलाते है।
जैसे : स्वर्ण के आभूषण।

इस प्रकार, 'चेतना' आत्मा का स्वरूप धर्म (नित्य गुण) तथा सुख–दुख आगुंतक धर्म है।

### एकांतावाद का खंडन

- एकांतावाद में सत्ता के स्वरूप की व्याख्या एकांगी दृष्टिकोण से की है।
- जैन दर्शन में बौद्ध व वेदांत दर्शन को एकांतवाद का पोषक कहा।
- अतः अनेकातावद एक अखंड दृष्टि है जिसमें वस्तु के सभी धर्मों का समन्वय है।

### द्रव्य सिद्धांत (Theory of Substance)

- द्रव्य वह आधार है जिसमें गुण (स्वरूप लक्षण) व पर्याय (आगंतुक लक्षण) दोनों ही रहते हैं।
- द्रव्य अनेक धर्मों से युक्त है। सभी धर्मों का ज्ञान सभी मनुष्य को नहीं अतः पूर्ण ज्ञान केवल केवलिन् को ही।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

- **द्रव्य के 2 प्रकार है।**
  - आस्तिकाय – शरीर युक्त द्रव्य जो स्थान घेरता है।
  - जीव –चेतन द्रव्य, नित्य है, कर्त्ता, भोता एवं धाता है।
  - अजीव – जीव के अलावा अन्य 4 आस्तिकाय।
    1. पुद्गल – जड़त्व
    2. धर्म/अधर्म – गति/अगति
    3. आकाश – स्थान देता है
  - अनास्तिकाय – जिन द्रव्यों का विस्तार नहीं होता ।
  - अनंत चतुष्टय – अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, अनंत आनंद
  - जीव अनंत चतुष्कटय से युक्त होता है।

द्रव्य के प्रकार

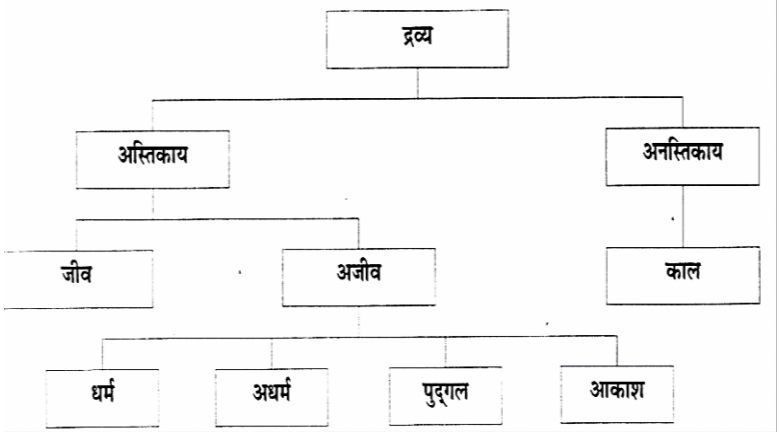


## ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

- **स्यादवाद** – ज्ञान की सापेक्षता संबंधी सिद्धांत जो जैन दर्शन में परमार्श को व्यक्त करता है।
- अनेकान्तवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु के अनन्त गुण होते हैं। अनन्त गुण होने के कारण उसका स्वरूप अत्यधिक जटिल होता है। वस्तु के अनन्त गुणों का ज्ञान मात्र 'केवली' को होता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ होता है। साधारण मनुष्य का ज्ञान अत्यधिक सीमित होता है, क्योंकि वह किसी वस्तु को कुछ ही दृष्टियों से देखता है। अतः वह वस्तु के आंशिक धर्मों को ही जानता है और उसी के आधार पर वस्तु के विषय में परामर्श करता है।
- यह तत्वमीमांसीय सिद्धांत अनेकांतवाद को ज्ञानमीमांसीय अभिव्यक्ति है।
- सिद्धांत – प्रत्येक मनुष्य, वस्तु को कुछ दृष्टि से ही देखता है। जिससे उसका ज्ञान आंशिक होता है। और परस्पर मतभेद उत्पन्न होते है।
- वस्तु का आंशिक ज्ञान 'नय' कहलाता है – हाथी का उदाहरण
- अतः परामर्श की दोषमुक्ति हेतु 'स्यात' शब्द का प्रयोग।
- इससे वस्तु की सत्यता प्रसंग विशेष पर निर्भर हो जाती है।
- अतः स्यादवाद यह मानता है कि मनुष्य का ज्ञान आंशिक व एकांगी है।

**सप्तभंगीनय** – स्यादवाद का व्यवाहारिक अभिव्यक्ति।

- अर्थात् किसी वस्तु के विषय में स्यात्पूर्वक 7 परामर्श किये जा सकते है।
  1. स्यात् है
  2. स्यात् नहीं है।
  3. स्यात् है, स्यात् नहीं भी है।
  4. स्यात् कहा नहीं जा सकता।
  5. स्यात् है, कहा नहीं जा सकता।
  6. स्यात् नहीं है, कहा नहीं जा सकता।
  7. स्यात् है, नहीं है, कहा नहीं जा सकता।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## नीतिमीमांसा (Ethics)

- बंधन एवं मोक्ष की महत्वपूर्ण अवधारणा है।

**बंधन**

| सामान्य अर्थ | जैन दर्शन में |
|---|---|
| निरंतर जन्म ग्रहण करना व दुख झेलना | जीव का पुद्गल से संयोग |

- बंधन की अवस्था में अनंत चतुष्य वैसे ही ढक जाते है। जैसे मेघ सूर्य को ढंक लेते है।

**बंधन का कारण** – अज्ञानता/अविद्या

- मानव कोन सा शरीर धारण करेगा। यह पुर्वजन्म के कर्मों के अनुसार तय होगा।
- इस प्रकार कर्म सिद्धांत में विश्वास ।

**बंधन की प्रक्रिया**

| आस्व | बंध |
|---|---|

• जीव की ओर कर्म पुद्गलों का प्रवाह — जीव का कर्म पुद्गलों से बंध जाना।

## मोक्ष (कैवल्य)

• जीव का पुद्गलों से प्रथक हो जाना।
• जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति को परम लक्ष्य हो जाना।

### प्रक्रिया

**संवर**
नये पुद्गलों का जीव की ओर प्रवाह रूकना

**निर्जरा**
पहले से प्रवष्टि कर्म पुद्गलों का नाश

**साधन :** **त्रिरत्न**

**सम्यक ज्ञान** –उचित वास्तविक ज्ञान, वस्तु की अनेकता का ज्ञान दृष्टि ,अनेकांतवाद, स्यादवाद के अनुसार ज्ञान।

**सम्यक दर्शन** – तीर्थंकर (**पथ प्रदर्शक) के प्रति श्रद्धा व विश्वास से ही संभव है।**

**ज्ञान चरित्र** – हितकर कार्यों का आचरण और अहितकर कार्यों का वर्जन ही सम्यक् चरित्र है। जो व्यक्ति को मन, वचन और कर्म पर नियंत्रण करने का निर्देश देता है।

पंचमहावृत – **महावृत (कठोर)**– यह जैन सन्यासियों के लिये।
**अणुहत (गृहस्थ)**– यह गृहस्थों के लिये

### पंचव्रत

1. **अहिंसा (Non -Violence)**– सर्वाधिक आधारभूत नैतिक गुण है। मन, वचन एवं कर्म तीनों से होने वाली हिंसा का परित्याग।
2. **सत्य (Truth)** – सत्य मुख्यतः हमारे वचन की पवित्रता से संबंधित है। असत्य वचन का परित्याग। सत्य व्रत का पालन भी मन, कर्म व वचन से करना चाहिए।
3. **अस्तेय (Non -Stealing)** – चोरी न करना।
4. **अपरिग्रह (Non -Attachment)** – अपरिग्रह का अर्थ हुआ धन आदि का संग्रह न करना।
5. **ब्रह्मचर्य (Celebacy)** – समस्त वासनाओं का परित्याग करना। ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन व कर्म से होना चाहिए।

### आलोचनाएं

1. साधना पद्धति अत्यधिक कठोर है, जो व्यवहारिक जीवन में संभव नहीं है। अहिंसा का सिद्धान्त सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ होने के बावजूद अत्यधिक कठोर है।
2. महाव्रत एवं अणुव्रत के विभाजन में अन्तर्विरोध है।
3. यदि जीव स्वभावतः अनन्तचतुष्टय से युक्त है, तो फिर अज्ञानता की बात करना असंगत है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### महत्व

• उदार दृष्टिकोण, समाज के लिये लाभप्रद।
• व्यक्ति में उदार मनोवृत्ति का विकास।
• दूसरों के विचारों के प्रति श्रद्धा।
• समाज में साम्प्रदायिकता, विद्वेष, जातीय आदि की समाप्ति ।
• सर्व धर्मसमन्व हेतु लाभप्रद।
• जैन दर्शन ईश्वर आदि की सहायता के बिना मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। इससे मनुष्य को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा मिलती है। विचार का प्रभाव जीव पर पड़ता है.– मनोवैज्ञानिक रूप से सत्य है। जैनों के आचरण संबंधी नियम प्रशंसनीय है
• आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, अन्याय, भोगवाद, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं के संदर्भ में प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है

# गौतम बुद्ध (Buddha)

- परिचय
- साहित्य
- सिद्धांत (दर्शन)
  - तत्व मीमांसा (अव्याकतानि)
  - अनित्यवाद, क्षणिकवाद, अनात्मवाद
  - ज्ञान मीमांसा (प्रतीत्यसमुत्पाद)
- चार आर्य सत्य
  1. सर्वम् दुखम
  2. दुख का कारण (प्रतीत्यसमुत्पाद)
  3. दुख निरोध
  4. दुखनिरोध गाामिनी प्रतिपदा– आष्टांगिक मार्ग है।
- नैतिक विचार– नीति मीमांसा (बंधन–मोक्ष– निवार्ण)
  मध्यम मार्ग
  त्रिरत्न, पंचशील, त्रिशिक्षा, पारमिताएं
- महत्व व निष्कर्ष

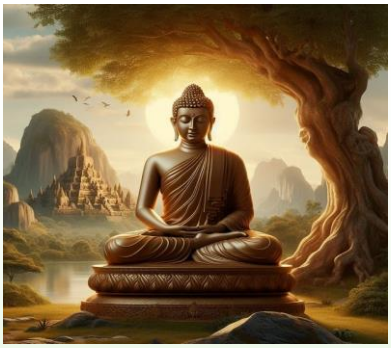

- जन्म– 563 ईसा पूर्व
- जन्मस्थली– लुंबिनी वन (कपिलवस्तु वर्तमान लुम्मदेई, नेपाल)
- पिता– शुद्धोधन माता– महामाया देवी
- बचपन का नाम – सिद्धार्थ
  - गौतमी विमाता प्रजापति (मौसी)
  - पत्नी – यशोधरा
- पुत्र– राहुल ' सारथी– चन्ना' घोड़ा– कंथक
- ध्यान गुरु– अलार कलाम
- ज्ञान प्राप्ति– 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा के दिन, बुद्ध कहलाए।
  - ज्ञान प्राप्ति स्थल गया (बोधगया) बिहार, निरंजना नदी बोधी या पीपल वृक्ष।
- प्रथम उपदेश– सारनाथ
- महापरिनिर्माण – 483 ईसा पूर्व, 80 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा–कुशीनगर बुद्ध

**परिचय**– भारतीय नास्तिक व्यवहारिक दर्शन , इसमें चार आर्य सत्यो के द्वारा दुख के कारण व निरोग पर बल दिया, आधारभूत सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद है। जिससे क्षणिकवाद, अनात्मवाद का प्रतिपादन किया।

## सम्प्रदाय

हीनयान (रूढिवादी)
महायान (प्रगतिशील)

## साहित्य/रचनाऐं

1. त्रिपिटक (नैतिक नियमों की 3 पिटारियां)
- **विनयपिटक** – संघ के आचार–विचारों का संकलन
- **सुत्तपिटक** – बुद्ध के उपदेश एवं वार्तालाप
- **अभिधम्मापिटक** – बुद्ध के उपदेश पर आधारित दार्शनिक नियम

2. मिलिपदपन्ही बौद्ध दर्शन के प्रारंभिक विचार

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## सिद्धांत (दर्शन)

### तत्व मीमांसा

**अव्याकतानि अवधारणा**

**परम तत्व /ईश्वर के प्रश्न पर –** तत्वमीमांसीय समस्याओं पर मौन रहे।
- पालि साहित्य में इन समस्याओं के प्रश्नों का अत्याक्तानि कहा गया।

**जगत** को परिवर्तनशील व क्षणिक माना।

**आत्मा–** आत्मा की नित्यता, स्थायी स्वरूप की जगह अनित्यता, अनात्मवाद का सिद्वान्त दिया।
- बुद्ध ने दर्शन में दुःख के कारण व निरोध पर बल दिया।

### आर्यसत्य (Four Noble Truths)

- बुद्ध के व्यवहारिक दर्शन को व्यक्त करने वाले विचार।
- उद्देश्य–मानव के दुखों का अंत कर मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त।

**1. सर्वम् दुखम** –सब और दुख।
सभी पदार्थ विनाशी एवं अनित्य होने के कारण दुखमयी है।

- जन्म दुखमय, इच्छाओं की पूर्ति न होना दुखमय, पिय्र का वियोग, अप्रिय का संयोग।
- सांसरिक दुख को भी दुख कहा क्योंकि यह क्षणिक है।

**2. दुख समुदाय** – दुख के कारण है।
- संसार में कोई भी कार्य अकारण नहीं होता (कार्य–कारण सिद्धांत)
- दुख के कारण बताने के लिये प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत का प्रतिपादन।
- 12 कड़ियों वाली एक लंबी श्रृंखला द्वादश निदान चक्र का भी प्रतिपादन।

**3. दुख निरोध** – दुख का नारा संभव है। दुख के कारणों की श्रृंखला को समाप्त कर निदान संभव।

**4. दुखनिरोध गाामिनी प्रतिपदा** – अर्थात् हेतु आष्टांगिक मार्ग है।
- इस हेतु आष्टांगिक मार्ग, जो निर्वाण के लक्ष्य तक पहुंचता है, का प्रतिपादन किया।

## मध्यम प्रतिपदा

- अत्यंत भोग विलास एवं अत्यधिक तपस्या के मध्य का मार्ग – 8

**सोपान (आष्टांगिक मार्ग)**

1. **सम्यक् दृष्टि** – वस्तुओं का वास्तविक स्वरूप समझना।
2. **सम्यक् संकल्प** – आर्यसत्य के ज्ञान के अनुरूप आचरण का संकल्प।
3. **सम्यक् वाक्** – संकल्प के अनुरूप वाषी पर नियंत्रण।
4. **सम्यक् कर्म** – अंहिसा, अस्तेय, इंद्रिय संयम आदि का आचरण।
5. **सम्यक् आजीव** – ईमानदारी पूर्वक जीवन निर्वाह।
6. **सम्यक् व्यायाम** – बुरे विचारों का त्याग कर, अच्छे विचारों को अपनाना।
7. **सम्यक् व्यायम** – वास्तविक ज्ञान के प्राप्ति निरंतर जागरूकता।
8. **सम्यक् समाधि** – चित्त की एकाग्रता

## प्रतीत्य समुत्पाद (Theory of Dependent Origination)

- प्रतीयत्यसमुत्पाद दो शब्दों : प्रतीत्य + समुत्पाद से बना है।
- बौद्ध दर्शन का कार्य – कारण सिद्धांत अर्थात् एक के होने पर अन्य की उपस्थिति।
- कार्य की उत्पत्ति कारण की अपेक्षा से या कारण पर आश्रित होकर होती है। अतः इसे आश्रित उत्पत्ति सिद्धांत कहते है।
- बौद्ध दर्शन में दुख के कारण **12 कड़ियों** (द्वादश निदान चक्र) को माना गया है।

1. **जरामरण (वृद्धास्था + मृत्यु)** – दुःख को जरा–मरण कहा
2. **जाति (जन्म लेना)** – जरा–मरण का कारण जाति, अर्थात् जन्म लेना
3. **भव (जन्म गृहण की इच्छा)** –
4. **उपादान (वस्तुओं की इच्छा)** – जगत् की वस्तुओं के प्रति राग एवं मोह।
5. **तृष्णा (दुख का मूल कारण)** – तृष्णा ही हमारे सभी सांसारिक दुखों का कारण है।
6. **वेदना (पूर्ण इंद्रियोनुभाति)** – पूर्व इन्द्रियानुभूति को वेदना कहा
7. **स्पर्श (इंद्रियो+विषयों संपर्क)** – इंद्रियों का विषयों से संयोग।
8. **षड़ायतन (5 इंद्रियों + मन)** – पांच ज्ञानेन्द्रियों एवं मन के संकलन को षड़ायतन कहा
9. **नामरूप (मन + शरीर)** – मन व शरीर के समूह को नामरूप कहा
10. **विज्ञान (चेतना)** – नाम रूप का कारण विज्ञान है।
11. **संस्कार (भ्रुण में चेतना उत्पन्न)** – संस्कार पूर्व जन्मों के कर्म के फलस्वरूप बनते हैं।
12. **अविद्या (पुनर्जन्म का कारण)** – ज्ञान का अभाव। अविद्या को अनादि मान लिया गया है किन्तु यह अनन्त नहीं है इसका नाश संभव है।

- द्वादश निदान चक्र से अतीत, वर्तमान व भविष्य संबंधित।
- अतीत, वर्तमान, जीवन का कारण,
- भविष्य, वर्तमान जीवन का कर्म, यहीं से कर्मवाद की स्थापना।

## क्षणिकवाद (Theory of Change)

- हीनयान द्वारा प्रतिपादित।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

- प्रतीत्य समुत्पाद की तार्किक परिवर्तशील, जिसे बुद्ध ने अनित्यवाद कहा।
- विश्व की प्रत्येक वस्तु अनित्य एवं क्षणभंगुर है।
- कोई भी वस्तु दो क्षणों में समान नहीं होती → भ्रमवंश हमें परिवर्तन दिखाई नहीं देता।
- हमें प्रवाह में भी स्थिरता का आभास होता है।
  जैसे– हम एक नदी में दो बार नहीं नहा सकते।

## अनात्मवाद / नैरात्मवाद (No Soul Theory)

- आत्मा संबंधी सिद्धांत, प्रतित्य समुत्पाद की तार्किक परिणति है।
- नित्य आत्मा का निषेध → नैरात्मवाद,
- आत्मा की सत्ता तो है परन्तु वह नित्य न होकर परिवर्तनशील है।
- अतः नित्य आत्मा की सत्ता को अस्वीकार किया।

**आत्मा का स्वरूप** – पंचस्कंधों का समूह है।
**रूप** – भौतिक घटक
**वेदना** – संज्ञा → संस्कार → विज्ञान
मानसिक घटक

- उन्हीं पंचस्कंधों का समूह आत्मा है। पंचस्कंधों का संघात नष्ट → आत्म तत्व नष्ट।

**कर्म एवं पुनर्जन्म सिद्धांत** – विश्वास

- **पुनर्जन्म का अर्थ** – विज्ञान के अविच्छिन्न प्रवाह का निरंतरता है।
- **मुत्यु** – एक विज्ञान प्रवाह की समाप्ति
- विज्ञान प्रवाह की नये शरीर में निरंतरता कायम रखना ही पुनर्जन्म ह।
- **निर्वाण** – अर्थात् सभी दुखों का अंत
  ↳ पापकर्मी, नष्ट
  ↳ पुनर्जन्म नहीं होता
  ↳ शांत, स्थिर, तृष्णा रहित अवस्था
  ↳ अविद्या समाप्त

## मध्यम मार्ग (Median Path)

प्रतीत्यसमुत्पाद | आष्टांगिक मार्ग | अनित्यवाद | क्षणिकवाद | अनात्मवाद

दो अतियों के मध्य का मार्ग : इसमें पहला अति भोगविलाश व दूसरा अत्यधिक पीड़ा, कष्ट, निर्धनता इन अतियों के बीच का मार्ग खोजा। इसकी तुलना अरस्तु के स्वर्णिम मध्यम मार्ग से की जा सकती है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## निर्वाण (मोक्ष) (Liberation)

तृतीय आर्य सत्य में दुःख निरोधः की यही अवस्था बौद्ध दर्शन में निर्वाण के नाम से जानी जाती है।
निर्वाण का सामान्य अर्थ है- समस्त दुःखों का अंत हो जाना।
'निर्वाण' शब्द का अर्थ है - बुझा हुआ। यहां बुझ जाने का अर्थ है- समस्त पापकर्मों का समाप्त हो जाना एवं अविद्या का नष्ट हो जाना।
1. **दुःख का कारण -** अविद्या (बुद्ध द्वितीय आर्य सत्य से प्रतीत्य समुत्पाद के माध्यम से दुःखों के कारण की खोज करते हैं

2. **निर्वाण का साधन -** आष्टांगिक मार्ग

**3. निर्वाण में सहायक तत्व-** बौद्ध दर्शन में निर्वाण की प्राप्ति हेतु ईश्वर की कृपा को बिल्कुल भी महत्व नहीं दिया गया है। यहा निर्वाण एक पुरुषार्थ है, जिसे व्यक्ति आत्मदीप (आत्मः दीपो भव) वनकर प्राप्त कर सकता है

**4.निर्वाण की अवस्था-** निर्वाण की प्राप्ति से पुनर्जन्म नहीं होता। समस्त दुःखों का अंत हो जाता है।
बुद्ध के अनुसार निर्वाण अवर्णनीय है

## त्रिरत्न

1. **बुद्ध** – जागृत एवं अनंत ज्ञानी मनुष्य
2. **धम्म** – बौद्ध धर्म की शिक्षाऐं

3. **संघ** – बौद्ध भिक्षुओं व उपासकों का संगठन

**पंचशील**

1. **सत्य** – सत्य न बोलना।
2. **अंहिसा** – हिंसा न करना।
3. **अस्तेय** – चोरी न करना।
4. **ब्रह्मचर्य** – व्यभिचार न करना।
5. **नशा न करना।**

**पारमिताऐं**

नैतिक मूल्य, जिनका अनुशीलन बुद्धत्व की ओर ले जाता है।
10 – दान, शील, नैष्क्रम्य, प्रजा, वीर्य, शांति, सत्य, अधिष्ठानप, मैत्री, उपेक्षा।

**त्रिशिक्षा**

निर्वाण पथ हेतु महत्वपूर्ण आष्टांगिक मार्गों का समावेश

1. **प्रजा** – सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प।
2. **शील** – वाक्, कर्म, अजीविका, व्यायाम।
3. **समाधि** – स्मृति, समाधि।

**महत्व व निष्कर्ष**

- महात्मा बुद्ध भारतीय विरासत के एक महान विभूति हैं। उन्होंने संपूर्ण मानव सभ्यता को एक नयी राह दिखाई। व्यवहारिक दर्शन जो सांसारिक समस्या व सांसारिक दुखों के निवारण/निरोध का मार्ग बताते है। भारत को वैश्विक पहचान दिलाई।
- बुद्ध का **'आत्म दीपो भवः'** का सिद्धांत व्यक्ति को व्यक्ति बनने पर बल देता है।
- बुद्ध का **मध्यम मार्ग सिद्धांत** वीणा के तार को उतना नहीं खींचना कि वह टूट ही जाए या फिर उतना भी उसे ढीला नहीं छोड़ना चाहिये कि ध्वनि ही न निकले।
- तृष्णाओं व इच्छाओं पर नियंत्रण द्वारा अति उपभोगभाग, बाजारवाद पर नियंत्रण रख कर पर्यावरण तथा प्रकृति का सरंक्षण भी संभव है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# चार्वाक

- परिचय
- उत्पति
- ज्ञानमीमांसा
  - खण्डनात्मक पक्ष
- तत्वमीमांसा
- नीतिमीमांसा
  - पुरूषार्थ
  - सुखवाद
- महत्व निष्कर्ष

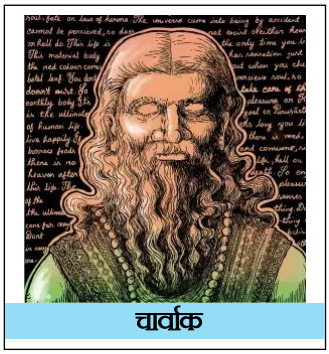
चार्वाक

## परिचय

भारतीय प्राचीन नास्तिक व प्रथम भारतीय भौतिकवादी और संशयवादी दर्शन है।
5–6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व विकसित

## उत्पत्ति

1. चर्व धातु से अर्थात् चवाना या खाना।
   जड़वादी दर्शन है – खाओ पियो मौज करो।
2. चारू + वाक् ⇒ मीठा वचन
3. चार्वाक नामक ऋषि
   - ↳ जड़वाद के समर्थक
   - ↳ देवगुरू ब्रहस्पति के शिष्य
4. प्रणेता – ब्रहस्पति
   यज्ञ के समय राक्षस परेशान करते थे, अतः जड़वादी दर्शन राक्षसों में फैला दिया।

## ज्ञानमीमांसा

- संपूर्ण दर्शन ज्ञान मीमांसा पर आधारित यथार्थ (प्रत्यक्ष) को ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन माना।
- चार्वाक की ज्ञान मीमांसा 2 पक्ष।

**1. भावात्मक पक्ष**– प्रत्यक्षवादी दर्शन है, प्रत्यक्ष को ही ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन माना।
प्रत्यक्ष ज्ञान– इंद्रियों और विषयों के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान।
प्रत्यक्ष ज्ञान यथार्थ, असंदिग्ध व निश्चित है। इसकी सत्यता हेतु प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

**2. खण्डनात्मक पक्ष**

- अनुमान, प्रत्यक्ष पर आधारित ज्ञान है।
- इसकी वैधता व निश्चियता पर संदेह।
- केवल ज्ञान की संभात्यता का प्रदर्शन करता, निश्चितता का नहीं
- अनुभव से स्थापित प्रक्रिया है। इसमें तार्किकता का होना अनिवार्य नहीं।

**शब्द प्रमाण का खंडन**– विश्वसनीय एवं आप्त पुरूषों के वचन
**खण्डन** – आप्त पुरूषों की विश्वासनीयता अनुमान आधारित जबकि अनुमान स्वंय अप्रमाणित।

- शब्द ज्ञान एवं प्रत्यक्ष पर आधारित
- हमेशा सत्य नहीं → कभी–कभी विश्वसनीय व्यक्ति भी असत्य सिद्ध।

**अपनाम का खंडन**– अर्थात् सादृश्य के आधार पर ज्ञान।

- उस वस्तु की ज्ञान प्राप्ति का अनुमान लगाते है। जिसके सादृश्य हमें वस्तु पहले से ज्ञात है।
- **खण्डन**– सादृश्य का ज्ञान, प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त अतः यह स्वतंत्र प्रमाण नहीं

## आलोचना

- **प्रत्यक्ष ज्ञानेन्द्रियों पर निर्भर** :– ज्ञानेन्द्रियों अस्वस्थ होने पर प्रत्यक्ष दूषित करेगा। जैसे – पीलिया में षरोगी।
- **ज्ञानेन्द्रियों भ्रमित हाती है।** :– रस्सी में सर्प का भ्रम।
- प्रत्यक्ष को यथार्थ प्रमाण के रूप में अनुमानित किया, जबकि स्वंय अनुमान का खंडन किया।
- अन्य प्रमाणों के खंडन में शब्दप्रमाण का सहारा लिया।
- मानव का अधिकांश जीवन अनुभवों पर आधारित होता है। केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं माना जा सकता।

## निष्कर्ष

- प्रत्यक्ष संबंधी ज्ञान मीमांसा संतोषजनक नहीं।
- परन्तु महत्वपूर्ण योगदान – भारतीय दर्शन को अंधविश्वासी व रूढ़िवादी होने से बचाया।

## तत्वमीमांसा

- चार्वाक की तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा पर ही आधारित है।
- चार्वाक ने उन्हीं वस्तुओं को वास्तविक माना है। जिनका प्रत्यक्षीकरण संभव है।
- चूंकि प्रत्यक्षीकरण केवल भौतिक पदार्थों का संभव अतः इनका दर्शन भौतिकवादी दर्शन कहलाता है।

### जगत संबंधी विचार

**जगत का निर्माण**

पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकश

इन्हीं 4 तत्वों से चेतन अचेतन तत्वों का निर्माण

आकाश स्वीकार नहीं क्योंकि प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं।

↓

मिलते कैसे है ?

↓

परस्पर संगठित होना जड़ तत्वों का स्वभाव है। इसे वे स्वभाववाद कहते है।

↓

निर्जीव भौतिक तत्वों में चेतना का आविर्भाव कैसे होता है।

↓

उदा. के माध्यम से समझाया कि पान, कत्था, चूना, कसैली, में लालिमा का अभाव होता है, परन्तु संयोग से लालिमा का आविर्भाव हो जाता है।

↓

इसी प्रकार 4 तत्वों के मिलने से चेतना का आविर्भाव होता है।

स्वीकार नहीं क्योंकि प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## आत्मा संबंधी विचार

- प्रत्यक्ष ज्ञान को ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र साधन माना है। अतः स्थायी आत्मा को अस्वीकार किया।
- स्थायी आत्मा के स्थान पर चेतना की सत्ता को स्वीकारा
- चेतना को शरीर का गुण माना। अतः चेतन शरीर ही आत्मा हैं। आत्मा का कोई अस्तित्व नही।
- आत्मा संबंधी यह सिद्धांत **देहात्मवाद** कहलाया।
- आत्मा की अमरता संभव नहीं, अतीत, भावीजीवन, पुनर्जन्म, स्वर्ग–नरक आदि निराधार है।
- इस विश्व में जो सुख है, वह स्वर्ग है।

## मोक्ष संबंधी विचार

- मोक्ष संबंधी विचारों की आलोचना की।
- मुत्यु को ही मोक्ष माना, जब तक जीवित है, दुख है। मृत्यु के पश्चात् दुख समाप्त हो जाता है।

### ईश्वर संबंधी विचार
- ईश्वर का ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा नहीं अतः ईश्वर का अस्तित्व नहीं।
- वेशेशिक दर्शन तर्क के आधार रप ईश्वर की व्याख्या तर्क स्वंय अनुमान पर आधारित है।
- विश्व के व्यवस्थापक के रूप में ईश्वर को मान्यता का खंडन
- संसार का उपादान व निर्मित कारण ईश्वर को नहीं बल्कि 4 भौतिक तत्वों को माना।

### आलोचना
- जड़त्व जगत का उपादान कारण हो सकता है। किन्तु पर्याप्त कारण नहीं हो सकता।
- जड़त्व से चेतना की उत्पत्ति की स्पष्ट व्याख्या नहीं
- यदि चेतना शरीर का गुण है तो अंग अलग–अलग होने पर उनमें चेतना क्यों नहीं रहती।
- ईश्वर, आत्मा आदि का खंडन अनुमान से
- ईश्वर के बिना नैति मूल्यों की वस्तुनिष्ठ व्याख्या संभव नहीं।

### निष्कर्ष
- भारतीय दर्शन को हठवादी व अंधविश्वासी होने से बचाया।

## नीतिमीमांसा
- चार्वाक को नीति मीमांसा भौतिकवादी तत्वमीमांसा की तार्किक परिणति है।
- चार्वाक की नीतिमीमांसा का सिद्धांत सुखवाद कहलाता है।

पुरूषार्थ – 4 | सुखवाद

### पुरूषार्थ
#### 1. मोक्ष
- भौतिकवादी दार्शनिक, अतः पारलौकिक सत्ता में विश्वास नहीं।
- कोई आत्मा हीं नहीं है जिसकी मुक्ति के लिये प्रयत्न हो।
- न कोई ईश्वर हो जिसके पास पहुंचने के लिये आतुर हो।
- मोक्ष का अर्थ है। दुखों से पूर्ण मुक्ति अतः मृत्यु ही मोक्ष है।

#### 2. धर्म
- मोक्ष के समान धर्म भी निंदनीय है। वेदों को धूर्तों की कृति कहा जिनका उद्देश्य लोगों को मूर्ख बनाना है।

#### 3. अर्थ
- मोक्ष व धर्म के समान अर्थ को भी अस्वीकारा।
- अर्थ मार्ग सुख प्राप्ति का साधन है।
- धन का संगृह करना मूर्खता है। इसलिये कमाऐं और सुख भोगें।

#### 4. काम
- स्वीकार किया, इंद्रियों सुखों का भोग ही जीवन का परम लक्ष्य है।
- खाओ, पियो, मौज करो यही जीवन का परमलक्ष्य व मूलमंत्र है।

### सुखवाद
- सुखों की प्राप्ति ही नैतिक कार्य है।
- नैतिक वह है जो आनंद प्रदान करे, अनैतिक वह जो दुख प्रदान करे।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## सिद्धांत

| वर्तमान में सुख | सुख के साथ दुख भी | सभी सुख समान |
|---|---|---|
| भविष्य के अनिश्चित सुख की बजाय वर्तमान के निश्चित सुख को भोगना बुद्धिमानी है। | सुख–दुख लगे रहते है।, दुखों से बचकर सुख भोगना बुद्धिमानी है ↓ दुख के भय से सुख छोड़ना मूर्खता है। | जिस सुख से आनंद प्राप्त हो, उसे बार–बार पाने के प्रयत्न करो। जैसे– शराब ↓ पियो–पियो तब तक पियो जब तक जमीन पर न गिर पड़ो। |

### आलोचना

- चार्वाक के सुखवादी दर्शन को नीतिमीमांसा कहा जा सकता है। क्योंकि नैतिकता का अर्थ ही आत्म नियंत्रण है।
- भविष्य के सुख की व्यवस्था करना ही, प्राणिमात्र की मूल प्रवृत्ति है।
- भौतिक सुख सदैव आनंद मयी नहीं
- स्वार्थवाद को बढ़ावा।
- वर्तमान सुख भोग पर केन्द्रण व्यवहारिक नहीं।
- सभी सुख समान कोटि के नहीं।
- चार्वाक दर्शन में सही गलत, शुभ–अशुभ, नैतिक–अनैतिक का स्थान नहीं।

### निष्कर्ष

- चावार्क के सुखवाद की बहुत निंदा हुई किन्तु चावार्क ने जीवन और जगत के प्रति अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।
- लौकिकता पर बल।
- सुख को जीवन का सहज उद्देश्य बताया।
- सुख–दुख को जीवन का अंग माना।
- मनौवैज्ञानिक रूप से जीवन को संबल प्रदान।
- वर्तमान में जीने की सलाह।

### चार्वाक का योगदान

- दार्शनिक साहित्य समृद्ध।
- भारतीय दर्शन को हठवादी होने से बचाया।
- समीक्षात्मक मान्यताओं से हटकर स्वतंत्र चिंतन।

### लोकायत दर्शन

- चार्वाक दर्शन का ही नाम।
- साधारण जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व।
- केवल उस लोक में विश्वास, परलोक का निषेध।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# भर्तृहरि

भर्तृहरि उज्जैन के राजा थे, इनका काल 7वी शताब्दी उन्होंने अपना राजपठ अपने भाई विक्रमादित्य को सौंपकर गुरू गोरखनाथ के शिष्य बन गये तथा वैराग्य धारण कर सन्यासी जीवन जीने लगे।

## दार्शनिक विचार

राजा भर्तृहरि का दर्शन वेदांत, बौद्ध धर्म एवं योग दर्शन के मिश्रण पर आधारित है। उनके दर्शन में उन तीनों के तत्वों का समावेश है।

## ज्ञानमीमांसा

राजा भर्तृहरि ने ज्ञान मीमांसा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने ज्ञान के स्त्रोत, प्रकृति एवं फल पर गहन विचार किया।

- ज्ञान के मुख्यतः– **3 स्त्रोत है।**

**1. प्रत्यक्ष** → इंद्रियों के द्वारा प्राप्त

2. **अनुमान** →तर्क और अनुमान के आधार पर

**3. शब्द** → वेदशास्त्र व अन्य स्त्रोत

- ज्ञान की प्रकृति :– **2 प्रकार**

**1. प्रमाणिक** → यह ज्ञान सत्य एवं यथार्थ होता है।

**2. अप्रमाणिक** → यह ज्ञान मिथ्या एवं भ्रामक होता है।

- ज्ञान का फल – ज्ञान प्राप्त करने से मनुष्य दुखों से मुक्त हो सकता है। और मोक्ष प्राप्त कर सकता है।
- अन्य महत्वपूर्ण विचार

ज्ञान प्रप्ति हेतु आत्मज्ञान आवश्यक।

ज्ञान प्राप्ति हेतु कर्म एवं भक्ति की आवश्यकता।

## तत्वमीमांसा

1. वृह्म संबंधी विचार– वृह्म सृष्टि का मूल कारण है, वृह्म निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापी है। वृह्म सत्य है, जगत मिथ्या।

2. आत्मा संबंधी विचार– आत्मा चेतन व अमर है। आत्मा का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है, मोक्ष प्राप्ति हेतु आत्मा को ब्रह्म में लीन होना होगा।

3. जगत संबंधी विचार– जगत माया का खेल है, यह क्षण भंगुर है। अर्थात् कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है।

4. ज्ञान संबंधी विचार– ज्ञान आत्मा का स्वरूप है, प्रकाश है, ज्ञान के बिना आत्मा अंधकार में रहती है।

5. **कर्म संबंधी विचार**– कर्म का फल अवश्य मिलता है, मोक्ष प्राप्ति हेतु कर्म से मुक्त होना आवश्यक है।

6. मोक्ष संबंधी विचार– मोक्ष, जीवन का अंतिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति हेतु ज्ञान, कर्म एवं भक्ति आवश्यक है।

राजा भर्तृहरि एक महान दार्शनिक व कवि थे, उनके तत्व मीमांसा संबंधी विचारों का भारतीय दर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

## नीतिमीमांसा

राजा भर्तृहरि ने नीतिमीमांसा में नीतिशास्त्र, कर्म सिद्धांत और सदाचार के महत्व पर विचार किया।

### 1. नीतिशास्त्र

नीतशास्त्र जीवन जीने का सही तरीका बताता है, नीतिशास्त्र में सदाचार, नीति और नैतिकता के सिद्धांतो का अध्ययन शामिल है।

### 2. कर्म का सिद्धांत

इसके अनुसार, कर्मों का फल अवश्य मिलता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छा, बुरे कर्मों का फल बुरा।

### 3. सदाचार

सदाचार जीवन का आधार है, इसमें सत्य, अहिंसा, दान, क्षमा दया जैसे गुणों का समावेश होता है।

VIDYA ICS Dedicated to Civil Services

**4. नीतिशतक**–नीतिशास्त्रीय विषयों का समावेशन

**5. राजा का कर्त्तव्य**– राजा का कर्त्तव्य है, प्रजा की रक्षा करना।
राजा को प्रजा कल्याण हेतु कार्य करना चाहिये तथा राजा को न्यायप्रिय व नीतिवान होना चाहिये।

**6. सामाजिक न्याय**
समाज में सभी लोगों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये। गरीबों और जरूरतमंदो की मदद व जाति–पंति का भेदभाव नहीं करना चाहिये।

## सामाजिक सुधार

**1. स्त्रियों संबंधी विचार**
- स्त्रियों के विषय में उनका दृष्टिकोण पक्षपात दिखता है, श्रृंगारशतक में स्त्री के विश्वासघात का वर्णन।
- साथ ही स्त्री को अबला न होकर सबला होना चाहिये।
- स्त्री एवं पुरूष समान, पुरूषो को स्त्रियां का सम्मान करना चाहिये।
- पति–पत्नि के बीच प्रेम एवं विश्वास होना चाहिये।

**2. सामाजिक विचार**
- सभी वर्गों के लोगों के साथ समान व्यवहार।
- गरीब एवं जरूरतमंदों की मदद।
- जातिगत भेदभाव नहीं।

**3. शिक्षा**
- सभी के लिये शिक्षा आवश्यक।
- शिक्षा से व्यक्ति के ज्ञान व चरित्र का विकास।
- शिक्षा से समाज का विकास।

**4. विद्वानों की महत्ता**
- समाज में सदैव श्रेष्ठ स्थान।
- लक्षण–विपत्ति में धैर्य, क्षमा, वाक्पुरता आदि।

**5. मनुष्य के स्वभाव**– 3
1. वैराग्य
2. नीति
3. श्रृंगार

**6. मनुष्य के प्रकार**

अधम

मध्यम

उत्तम

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## रचनाऐं

1. त्रिशतक राष्ट्र
- **नीतिशतक**– नीतिशास्त्र पर आधारित श्लोकों का संगृह।
जीवन के तरीके, कर्म सिद्धांत, सदाचार पर बल।
- **श्रृंगारशतक**– प्रेम एवं सौंदर्य पर आधारित श्लोकों का संगृह।
प्रेम की विभिन्न भावनाओं, स्त्री सौंदर्य जवन के सुखों पर विचार।
- **वैराग्यशतक**– जीवन की क्षणभंगुरता मोक्ष प्राप्ति, वैराग्य के महत्व पर आधारित

2. महाभाष्यदीपिका – पाणिनी की अष्टाध्यायी की व्याख्या।
3. वाक्यपदीय – संस्कृत व्याकरण का उच्चकोटि का ग्रंथ।
4. मीमांसाभाष्य
5. वेदांतसतःवृत्ति

# गुरूनानक

- परिचय
- रचनाऐं/उदासियां
- दार्शनिक चिंतन – तत्वमीमांसा
  - धार्मिक, सामाजिक दर्शन
  - 10 सिद्धांत
- महत्व

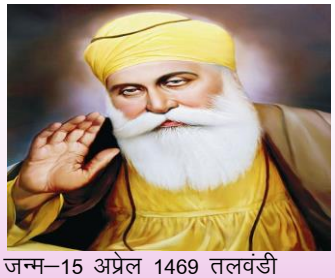

जन्म–15 अप्रेल 1469 तलवंडी ननकाना
माता– तृप्ता देवी
पिता– मेहता कालूचंद
विवाह– सुलक्षणी
पुत्र –श्रीचंद लक्ष्मीचंद
शिष्य –लेहना
मृत्यु – 1539 करतारपुर (पाक)

## परिचय

नानक एक दार्शनिक, कवि तथा समन्वयशील उदार व्यक्तित्व बाले समाज सुधारक थे। उनका संदेश शुद्ध आध्यात्मिक था और इसमें उन्होंने हिन्द व इस्लाम धर्म में समन्वय का प्रयास किया।
सिद्धांतों का सार – ''न कोई हिन्दु, न कोई कोई मुसलमान''

**उदासियां**– नानक द्वारा 3 यात्रा चक्र

- भारत, श्रीलंका, मक्का मदीना, फारस, अफगान और अरब स्थानों पर भ्रमण। इन्हें ही पंजाबी में उदासियां कहा।
- यात्रा में 2 शिष्य बाला मरदाना (मुस्लिम) साथ थे।

**रचनाऐं**– जयजी, तरवारी, राग के बारहमा हो।

- गुरू ग्रंथ साहिब में नानन की रचनाओं का संकलन महला नाम से।
- नाननक के उपदेश कविताओं के रूप में आदिग्रंथ में संगृहित है।
- संग्रह – अर्जुनदेव द्वारा किया गया।

**सिद्धांत–**

**दार्शनिक चिंतन** **तत्वमीमांसा**

**ईश्वर संबंधी विचार**

ऐकेश्वरवाद → परमात्मा एक, अनंत, सर्वशक्तिमान
निर्गुणी, निराकार है → सगुण रूप में भी स्वीकारा → माया से अपनी 3 संतान →सृष्टिकर्ता (ब्रह्म) , सृष्टिपालक (विष्णु), सृष्टिसंहारक (शिव) को उत्पन्न किया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## जगत संबंधी विचार

संसार को माया, छलावा नहीं माना → संसार का अस्तित्व है जो कि अस्थाई एवं नष्ट हो जाने वाला है।

## जीव संबंधी विचार

ईश्वर का लघुरूप ईश्वर परमज्योति है जिससे जीवात्मा चिंगारी के समान निकलती है।
जीवात्म की 2 स्थितियां है।
1. मनसुख – जो जीव अपने स्वार्थ व इच्छानुसार जीवन व्यतीत करते है।
2. गुरूमुख – जो जीव अपनी इच्छा को ईश्वर की इच्छा मे समर्पित करते, अंत में परमगति को प्राप्त।

## कर्म सिद्धांत एवं पुनर्जन्म – स्वीकार

- गुरू की महत्ता – गुरू एवं सत्संग को अत्यधिक महत्व →अभाव में परमगति को प्राप्त नहीं।
- सच्चागुरू वह है, जिसके अपनी पाप प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है। और जो मानव तथा परमसत्ता के बीच मध्यस्थता करे।
- मोक्ष → मोक्ष के चतुष्पदी स्तंभ को स्वीकारा → कर्म (अविद्या), संसार (आवागमन), ज्ञान (भक्ति), मोक्ष।

- **मोक्ष मार्ग के लिये 3 तत्व**

  1. निज साधन  2. ईश्वर अनुग्रह  3. गुरू निर्देश, आदेश, सेवा।

  नानक जी : मुक्ति किसी निष्क्रीय आनंद की प्राप्ति नहीं बल्कि यह तो सकृिय जीवन व्यतीत करने साथ साथ सामाजिक प्रतिबद्धता की निरंतर कोशिशों में निहित है

## नानक की 3 शिक्षाऐं

1. नाम जपी – ईश्वर का नाम बार–बार सुनना व दोहराना।
2. किरत करो – ईमानदारी से मेहनत कर आजीविका।
3 दान – जरूरतमंदो की मदद।

## धार्मिक दर्शन

- अवतारवाद में विश्वास नहीं। जीव के कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्वीकारा।
- मूर्तिपूजा के विरोधी → मोक्ष प्राप्ति में बंधक।
- साम्प्रदायिकता का विरोध। हिन्दु–मुस्लिम एकता का समर्थक।
- नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों पर बल।

## सामाजिक दर्शन

- नारी मुक्ति की दिशा में काफी प्रयत्न।
- सती प्रथा का विरोध। सभी कर्म परिश्रम करे बराबरी से
- साम्प्रादियकता का विरोध। अनुयायी ग्रहस्थ रहते हुए उपयोगी उत्पादक पेशों से जुडें!
- हिन्दु–मुस्लिम एकता का समर्थक।
- जातिप्रथा का खंडन। लंगर प्रथा के द्वारा सभी समान माने एंव सभी को परिश्रम अनिवार्य है
- कर्म एवं श्रम की महत्ता पर बल।

## नानक के 10 सिद्धांत

- ईश्वर एक है
- सदैव कए ही ईश्वर की उपासना करो
- ईश्वर सभी जगह, सभी प्राणियों में मौजूद है।
- ईश्वर सर्वशक्तिमान है। सभी स्त्री–पुरूष बराबर है।
- ईमानदारी से मेहनत कर उदपूर्ति करो।
- बुरे कार्य के बारे में न सोचे, न ही किसी को सताऐं।
- सदा प्रसन्न रहें, ईश्वर से सदैव क्षमाशील रहें।
- लोभ–लालच एवं संगृह बुरी प्रवत्तियां है। कमाई से जरूरतमंदो की मदद करे।

**पंचककार** – केश, कड़ा, कच्छा, कंघा, कृपाण

नानक के अनुसार 5 दुश्मन – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

जपजी – आदिग्रंथ की मुख्य कविता।

- नानके के आध्यात्मिक विचारों का संग्रह।
- प्रातःकाल में गया जाता है। नियमित उपासना पद्धति गुरूवाणी का गायन

**महत्व** – निष्क्रीय आनंद की जगह सकृीय उत्पादक सामाजिक प्रतिबद्धता को महत्व दिया। और समन्वयशीलता, नर नारी की सामनता, कर्मवाद एवं सामाजिक जातिगत समानता आदि मूल्यों को स्थापित किया ।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# कबीरदास

- परिचय
- रचनांए
- दर्शन –तत्वमीमांसा
  - रहस्यवाद
  - धार्मिक दर्शन
- सामाजिक–नैतिक दर्शन
- महत्व/प्रासंगिकता

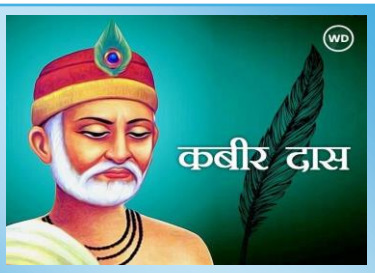


जन्म–1440 काशी में
मृत्यु– 1518 मगहर में
गुरूमंत्र–राम,राम
पेशा–जुलाहे

## परिचय

कबीर 15वीं शताब्दी के धर्मप्रवर्तक, समाज सुधारक, उपदेशक, संत एवं समन्वयवादी रहस्यवादी मिश्रित दार्शनिक कवि थे।
सामान्य जानकारी

**रचनाऐं**– कबीर के उपदेश दोहे व छोटी–छोटी कविताओं के रूप में संकलित हे। जिसे बीजक कहते है।
इसके 3 भाग है।

1. **साखी** : कबीर की शिक्षा एवं सिद्धांत दोहा छंद में रचना।
2. **सवद** : अलौकिक प्रेम व साधना पद्धतिमेय छंद में रचना।
3. **रमैणी** : रहस्वादी व दार्शनिक विचार चौपाई छंद में रचना
   भाषा – पंचमेल/खिचड़ी (साधुक्कड़ी)

## चिंतन पर प्रभाव

- **बौद्ध दर्शन का**– हठयोग, कुण्डलिनी जागरण, निवृत्तिमार्ग, आंडवर जातिवाद का खण्डन।
- **जैन दर्शन का**– अंहिसा एवं करूणा का मूल्य।
- **वेदांत दर्शन का**– अद्वैतवाद
- **इस्लाम एवं सूफी दर्शन का**– समतामूलक समाज एवं बंधुत्व का विचार।

**नोट** – कबीर ने किसी स्वंतत्र दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया। विभिन्न धर्मो और दर्शनों से विचारों को गृहण करके उन्हें तर्क एवं अनुभव के आधार पर पर तात्कालिक समय की सामाजिक धार्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया।

## कबीर के दर्शन

- **ब्रह्म संबंधी विचार** – ऐकेश्वरवाद में विश्वास
- निर्गुण एवं निराकार बृह्म के उपासक।
- ब्रह्म का ज्ञान अपरोक्षानुभूति द्वारा।
- ब्रह्म /राम निर्वचन का विषय न होकर, अनुभूति का विषय है।
- **आत्मा** – परमात्मा का ही अंश है। आत्मा–परमात्मा एक है।
- अज्ञानतांवरा (माया) दोनों में भेद है।
  माया – ब्रह्म की रहस्यमयी शक्ति।
- विश्वासमयी नारी के रूप में प्रकट होकर जीवों को ठगती है।
- ***माया के 2 रूप है।***
  1. कंचन
  2. कामिनी

## जगत

- स्वंतत्र जगत का कोई अस्तित्व नहीं, केवल माया के कारण इसकी सत्ता दिखती है।
- जगत को व्यवहारिक रूप में स्वीकार किया, परमार्थिक स्तर पर इसकी सत्ता को स्वीकार नहीं करते।

## मोक्ष

- आत्मा एवं परमात्मा की द्वैतानुभूति समाप्त हो जाना।
- भक्तिमार्ग पर बल दिया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## कबीर का रहस्यवाद

ईश्वर के प्रति भक्त की सीधी, सरल सहज एवं प्रत्यक्ष आत्मानुभुति की रहस्यवाद है। इस अनुभूति में आत्मा–परमात्मा का एकाकार हो जाता है।

- कबीर के रहस्यवाद पर अद्वैतवाद (माया) तथा सूफी मत (प्रेम) का प्रभाव है।
- रहस्यवाद की 5 अवस्थाऐं है।

### 1. जिज्ञासा की भावना

- परमतत्व को जााने की तीव्रइच्छज्ञ।
- ब्रह्म कैसा है, कहां है ?

### 2. ब्रह्म का महत्वपूर्ण प्रदर्शन

- जिज्ञासा में साधक को पथप्रदर्शक की आवश्यकता होती हे।?
- गुरूकृपा से ही मन इस संसार से विमुख होकर ईश्वरोन्मुख होता है।

### 3. दिव्यानुभूति

- गुरू की कृपा से ईश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न – परम सत्ता के दर्शन प्राप्त।

### 4. विरहानुभूति

- जीवात्मा दिव्य दर्शन के पश्चात् पुनः दर्शन के लिये तड़प उठती है।

### 5. स्थायी मिलन

- अंतिम अवस्था में चिर विरह के बाद चिर संयोग की अवस्था। मैं और पर को द्वैत मिट जाता है।

## रहस्यवाद की विशेषताऐं

- **नाम स्मरण** – रामनाम की महिमा का वर्णन, एकग्रचित्त होकर राम का नाम जपना।
- **आचरण की शुद्धता** – सदाचार पर बल, कुसंग का त्याग, अंहकार व कपट का त्याग।
- **ईश्वर में विश्वास** – श्रद्धा व विश्वास भक्ति के अनिवार्य तत्व।
- **वैराग्य भावना** – अर्थात् संसार का त्याग नहीं अपितु संसार में रहते हुये मन में संतोष लाना, विषय भोगों के प्रति अनासक्ति, तृष्णा से मुक्त होना।
- **माधुर्य भाव** – भक्त स्वंय को जीवात्मा, भगवान को परमात्मा मानकर दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यक्ति जहां करता है, वहां माधुर्य/मदुरा भक्ति होती है।
- **दास भाव** – वे स्वंय को दास तथा प्रभु को स्वामी कहते है।

## धार्मिक चिंतन

- मूर्तिपूजा का विरोध कर्मकाण्डों का विरोध
- तिलक लगाने एवं माला का विरोध
- जीव हत्या का विरोध
- तीर्थयात्रा का विरोध
- सिर मुड़ाने, चोटी धारण करने का विरोध

**सामाजिक चिंतन–** मानवमात्र के एकत्व का भाव

- छुआछूत, जातिप्रथा का विरोध • मास भक्षण तथा हिंसा का विरोध।
- हिन्दु मुस्लिम एकता पर बल। सांम्प्रदायिकता का विरोध
- प्रेम, दया, करूणा की भावना पर बल।
- नारी (सकारात्मक – पतिव्रता नारी की प्रशंसा, नकारात्मक – साधना में बाधा)

**नैतिक चिंतक**

- परनिंदा का विरोध
- सदाचार पर बल
- कर्मशीलता का संदेश
- थोड़े मे ही संतोष रखने पर बल
- कथन–करनी में एकरूपता की सीख
- मानतावादी
- परोपकारी की भावना

## वर्तमान प्रासंगिकता

- मध्यकाल में भटकी जनता को उपहार • भौतिकवाद के अंधकार से मुक्ति।
- धर्म–जाति के भेदभाव से मुक्ति के प्रयत्न।
- कबीर वास्तव में एक मानतावादी एवं समाज सुधारक समन्वयवादी रहस्यवादी थे।

कबीर जी के उपदेशों में इस्लाम व ब्राहमणवादी दोनों के वाहयआडबरपूर्ण कर्मकाण्डों का मजाक उडाकर जनता को व्यवहारिक कर्म व ज्ञानमार्ग पाठ पढाया

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# तुलसीदास

- परिचय
- रचनाऐं
- सिद्धांत (दर्शन)
  - तत्व मीमांसा
- नैतिक विचार
  - सामाजिक चेतना एंव रामराज्य मर्यादावाद
- तुलसी का समन्वयवाद
- महत्व व निष्कर्ष

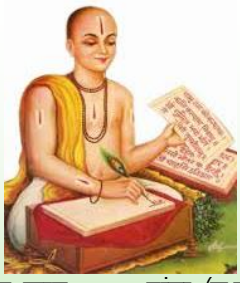

जन्म जन्म–1532 बांदा (उ.प्र.) में
मृत्यु – 1632 काशी में
माता – हुलसी
पिता – आत्माराम दुबे
पालन पोषण – घुनिया
पत्नी – रत्नावली
बचपन का नाम – रामबोला

**परिचय**– मध्यकालीन आर्दशवाद, मर्यादावाद, एवं रामराज्य का दर्शन देने वाले संत एवं दार्शिनिक।

**रचनाऐं** – ब्रज तथा अवधी भाषा में 12 प्रमाणिक ग्रंथ मिले।

1. रामचरितमास– सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ, श्रीराम के जीवन–चरित्र का वर्णन–अवधी भाषा में।
2. दोहावली – दोहों एवं सोरठों का संगृह भक्ति, नीति, धर्म, आचार–विचार, ज्ञान संबंधी दोहे।
3. कवितावली – कविता छंदो का संग्रह, 7 काण्डों में विभक्त।
4. गीतावली – गीति काव्य, 7 खण्डों में, संपूर्ण रामकथा का वर्णन।
5. पार्वतीमंगल – खण्डकाव्य, शिव–पार्वती के विवाह का वर्णन, पूर्वी अवधी।
6. जानकीमंगल – खण्डकाव्य, राम–सीता के विवाह का वर्णन, पूवी अवधी।
7. विनयपत्रिका – अंतिम कृति, विभिन्न भगवानों की स्तुतियों का वर्णन ब्रज भाषा में।

## दार्शनिक चिंतन — तत्वमीमांसा

- तुलसीदास न केवल महान भक्त थे, बल्कि एक चिंतक एवं दार्शनिक भी थे। उनके दार्शनिक विचारों पर तात्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है
- ब्रह्म संबंधी विचार : राम ही निर्गुण–निराकार ब्रह्म के सगुण–साकार अवतार है। – जब ससांर मे अधर्म बढ़ता है तो ब्रह्म अवतार लेते है।
- जीव संबंधी विचार : ब्रह्म का अंश है – माया के प्रभाव से कर्म बंधन में फंसा है।ईश्वर कृपा से ही मुक्ति संभव है।
- जगत संबंधी विचार : राम/ब्रह्म ही जगत का के उपादान तथा निमित्त कारण है जब राम सत्य है तो जगत भी सत्य है
- माया संबंधी विचार : राम की अभिन्न शक्ति है जिससे सृष्टि के कार्य सम्पन्न होते है। जीव के मोह और बंधन का कारण भी माया ही है।
- मोक्ष संबंधी विचार : मोक्ष प्राप्ति हेतु भक्तिमार्ग पर बल दिया।

**निष्कर्ष**–तुलसीदास के दर्शन पर अद्वैतवाद एवं विशिष्टाद्वैतवाद का प्रभाव दिखता है। उन्होंने एक विशेष मत न अपनाकर समन्यवादी दृष्टिकोण अपनाया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## नैतिक सामाजिक दर्शन

### सामाजिक चेतना एवं रामराज्य

**रामराज्यः** दो धारणाओं से समझा जा सकता है– कलयुग और रामराज्य

यहां कलयुग तात्कालीन समय का यथार्थ है– जघन्य अपराधों व अत्याचारों का युग इसमें अमर्यादित कृत्य नीतिविहीन राजनीति दिशाहीन अर्थतंत्र समाज में विषमता व्याप्त है, राम इन कलयुगी सामंती मूल्यों व बुराईयों से लडने वाले नायक है जो मर्यादापूर्ण सामाजिक व्यवस्थायुक्त रामराज्य की स्थापना करते हैं।

तुलसीदास जी के द्वारा यंहा ''केंद्रीय मूल्य सामाजिक मर्यादा''है,

यहा व्यक्ति के स्तर पर 'राम' स्वंय के उदाहरण द्वारा विभिन्न रिश्तों को मर्यादित स्वरूप एंव सामाजिक व्यवस्था के स्तर पर रामराज्य कि स्थापना करते है अतः वो राम मर्यादा पुरूषोत्तम है।

- तुलसीदास जिस युग में अवतरित हुये वह जघन्य अपराधों व अत्याचारों का युग था। जातिवाद और भेदभाव बढ़ने लगे थे, सामाजिक मान, मर्यादा, सम्मान एवं संबंधों मं विसंगतियां उत्पन्न हो गई थी। ऐसे समय में लोकमंगल की कामना करते हुये उन्होंने ऐसे आदर्श समाज की कल्पना की जो त्याग, बलिदान, प्रेम, सदाचार, न्यायप्रियता, कर्मण्यता आदि मूल्यों पर आधारित होगा, उसे ही तुलसीदास ने रामराज्य कहा है।

**राजा :–** शक्ति, नीति, ऐश्वर्य से संपन्न प्रतापी राजा एवं शीलवान होगा।

- प्रजा के दुख को कम करने वाला राजा ही राज्य करने योग्य है।
  **राजा के कर्त्तव्य** –राजधर्म, मित्रधर्म, मातृधर्म एवं पितृधर्म।
  **रामराज्य** – दरिद्रता, दुख, ज्ञानहीनता, रोग–व्याधि का कोई स्थान नहीं।
- सर्वज्ञ प्रेम, बंधुत्व तथा भाइचारे का बोलवाला।
  राजा–प्रजा संबध –प्रजा के प्रति राजा की प्रेम एवं वात्सल्य की भावना, समदार्शिता आदि।
- राजा के प्रति प्रजा की प्रेम, समर्पण की भावना।
  **वर्णाश्रमधर्म** – वर्ण व्यवस्था पर आधारित सामाजिक संरचना।
- मानव जीवन को 4 आश्रमों में विभक्त कर सामाजिक मर्यादा पर बल दिया।
  **आदर्शवादी** : आदर्शवादी की स्थापना हेतु श्रीराम को चुना–आदर्शपुत्र पुत्र, शिष्य,पिता,माता,भ्राता, पति, मित्र और शासक।
  **मर्यादावादी** : मानव आदर्शो व मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता;लोकमंगल की स्थापना के लिये मर्यादापूर्ण जीवन आवश्यक।

## पारिवारिक जीवन का आदर्श

सभी सदस्यों को मर्यादित भावना में रहकर चलने का संदेश – जिस प्रकार राम समेत चारों भाईयों में परस्पर प्रेम था।

**नारी की स्थिति** –पतिव्रता होनी चाहिये, बहुविवाह में विश्वास नहीं, नारियों की स्वतंत्रता पर बल।

## सच्चा समाजवाद

रामराज्य के एक लोककल्याणकारी एवं समतामूलक समाज की कल्पना करते है।
जैसे : राम ने शबरी के झूठे बेर खाऐ। केवट को सखा कहा।

## तुलसीदास का समन्वयवाद

तुलसीदास के जन्म के समय समाज, धर्म, राजनीति आदि क्षेत्रों में पारस्परिक विभेद एवं वैमनस्य का बोलवाला या तुलसीदास ने इन्हीं विषमताओं में समन्वय करने का प्रयास किया।

- **शैव तथा वैष्णव मत में समन्वय** – शिव को राम का उपासक बताया, राम को शिवजी का प्रेमी बताया। सेतु निर्माण के समय शिवजी की आराधना का उल्लेख।
- **वैष्णव एवं शक्ति मत में** – वैष्णव, विष्णु के तथा शाक्त, शक्ति के उपसक थे।
- सीता को शक्ति का स्वरूप बताकर पूजा की।
- **सगुण निर्गुण में** – बृहन निगुर्ण निराकर है, भक्तो के कष्ट निवारण हेतु सगुण– साकार अवतार लेते हैं।
- **ज्ञानमार्ग** – भक्तिमार्ग में दोनों हीक्लेश का नाश करने वाले हैं।
- भक्ति को ज्ञान एवं वैराग्य से युक्त बताया।
- **दर्शनिक मतों में** – न किसी विचार धारा समर्थन, न ही खंडन, केवल स्वयं के स्वरूप को पहचानने पर बल।
- **सामाजिक समन्वय–** छुआछूत, भेदभाव, उच्चवर्ग की निम्नवर्ग के प्रति घृणा, शूद्रो की सामाजिक, शैक्षाणिक, आर्थिक आधारो पर वंदना। सच्चे समाजवाद की कल्पना। मानवतावादी विचारो का विस्तार।
- **परिवार मे समन्वय** – श्रीराम के परिवार का आदर्श प्रस्तुत।
- राजा–प्रज्ञा में – रामराज्य।
- साहित्य के क्षेत्र में – विभिन्न शैलियों में काव्य रचना।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## तुलसी के काव्य में भक्ति भावना

तुलसीदास सगुण भक्ति धारा के रामभक्त कवित थे।
सगुण भक्ति – विष्णु के अवतार राम को आराध्य मानते थे। तुलसी के राम सृष्टि के कर्ता, धर्ता संहारकर्ता हैं।

**दीनता का भाव** – श्रीराम को सबसे महान एवं स्वयं को तृच्छ माना।

**सेवक–सत्य भाव** – श्रीराम को स्वामी, स्वयं को उनका सेवक माना।

**निषम भावना** – राम की आराधना केवल इसलिए क्योंकि वह प्रिय है, न कि मुक्ति प्राप्ति हेतु।

**पूर्ण समर्पण** –राम के चरणो में।

**अनन्य प्रेम** – राम के प्रति प्रेम अनन्य एवं निष्काय।

**ज्ञान–भक्ति में समन्वय–** इस प्रकार, तुलसी की भक्ति पद्वति में विनय, प्रेम, समर्पण और निष्कामता के भाव की प्रधानतों होते हुए भी दास भावना ही उनकी भक्ति का मूलाधार है।

**कमी:** समन्वयतापूर्ण साहित्य व सामाजिक दर्शन है लेकिन इनके कुछ श्लोकों में महिलागत पूर्वाग्रह भी व्यक्त हुआ है।

**महत्व/योगदान :** तुलसीदास जी ने साहित्य दारा मध्यकालीन समाज को नैतिक मर्यादापूर्ण आचरण का पाठ रामराज्य के रूप में पढाया आपने समन्वयतापूर्ण सामाजिक दर्शन दिया

# संत रविदास )

- परिचय
- रचनाऐं
- सिद्धांत (दर्शन)
  - धार्मिक विचार
- सामाजिक विचार
- नैतिक विचार
- महत्व व निष्कर्ष

- जन्म – 1388 वाराणसी
- माता– कर्मादेवी कलसा
- पिता– संतोखदास रग्घु
- मृत्यु– 1518 वाराणसी
- उपनाम–रैदास
- प्रसिद्ध कथन– मन चंगा तो कठौती में गंगा

**परिचय–** संत रविदास संत रविदास एक महान संत, कवि एवं समाज सुधारक थे। उन्होने अपने जीवन और रचनाओं के माध्यम से प्रेम, भक्ति और समानता का संदेश दिया।

**साहित्य/रचनाऐं–** रवीदास की बानी– गुरूग्रंथ साहिब में संकलन भजन,पदों का
रवीदास की वाणी– इसमें रवीदास के भक्ति व सामाजिक संदेश,
रविदास के पद– इसमें भक्ति और सूधारवादी दृष्टिकोण।

## सिद्धांत (दर्शन)

### दार्शनिक विचार

1. **सर्वधर्म समभाव**– सभी धर्म समान, जाति–पाति से मुक्त ईश्वर की भक्ति का संदेश।
2. **भक्ति भावना** –प्रवल समर्थक, ईश्वर की भक्ति ही जीवन का सच्चा उद्देश्य।
   गुरू की महिमा , नाम स्मरण, सत्संग का महत्व
3. **आत्मज्ञान**– सबसे महत्वपूर्ण, आत्मज्ञान से ही स्वयं में ईश्वर की खोज। मन की एकग्रता
4. **निष्काम कर्म**– कर्म सिद्धांत की महत्ता पर बल।
5. **समाज सुधार**–सामाजिक बुराईयों का विरोध।

### धार्मिक विचार

1. ईश्वर : एकेश्वरवादी, ईश्वर एक है, सर्वव्यापी है।
2. सर्वधर्मसमभाव
3. जाति–पाति का विरोध
4. बाहरी आडंबरों का विरोध

### आध्यात्म और भक्ति के योगदान

1. **आध्यात्मिकता**– मनुष्य को सदैव आत्मज्ञान ओर आत्मसुधार के प्रयास करना चाहिऐ।
2. **भक्ति**– ईश्वर भक्ति से आत्मज्ञान → मोक्ष
3. **निर्गुण भक्ति**– प्रबल समर्थक
4. **भक्ति आंदोलन**– अपनी रचनाओं से लाखों लोगों को प्रेरित किया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### सामाजिक विचार

1. **समानता**– सभी मनुष्य समान, जाति के आधार पर भेदभाव गलत। सामाजिक समरसता एंव प्रेम
2 **भाईचारा**–समी मनुष्यो में प्रेम व सहयोग पर बल।
3. **शिक्षा**– सभी को को शिक्षा का अधिकार
4. **न्याय**– सभी के लिए समान न्याय का समर्थन ।
5. **सामाजिक बुराइयों का विरोध**–जातिगत लैंगिक, अंधविश्वास का विरोध।

- प्रासंगिकता– सामाजिक समानता व न्याय पर बल,
  सामाजिक बुराईयों का विरोध
  शिक्षा – समाज सुधार का महत्वपूर्ण साधन
  विचारो से सामाजिक सुधार आंदोलन पर बल।

### शिक्षा की महत्ता पर बल

शिक्षा जीवन का महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा से ज्ञान प्राप्ति और ज्ञान से ही जीवन को सार्थकता प्राप्त।

**शिक्षा का स्वरूप**– केलव पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं शिक्षा से चरित्र निर्माण हो सामाजिक न्याय व समानता की भावना विकसित हो।

**शिक्षा का महत्व**

आत्म ज्ञान की प्राप्ति सदगुणो का विकास मनुष्य को अहंकार से प्रकाश की ओर ले जाती है शिक्षा।

## नैतिक विचार

**सदाचार**

सदाचार को जीवन का आधार माना

मनुष्य को सदैव सत्य प्रेम दया करूणा न्याय जैसे सदाचारो का पालन करना चाहिए।

**ईश्वर भक्ति**

नैतिकता का आधार भक्ति से ही मनुष्यो में सदगुणो का विकास।

**समानता**

नैतिकता का महत्वपूर्ण स्तंम्भ, किसी के भी साथ भेदभाव नहीं करना।

**4. सामाजिक न्याय**

नैतिकता का महत्पपूर्ण पहलु, सभी को समान न्याय।

**5. समाज सेवा**

नैतिकता का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य, मनुष्य को दूसरे की सेवा व समाज के विकास में योगदान देना चाहिये।

**वर्ततमान प्रासंगिकता**

संत रविदास 15वीं शताब्दी के एक महान संत, कवि और समाज सुधारक थे, उनके अनेक विचार आज भी प्रासंगिक है।

1. सामाजिक समानता।
2. भक्ति का समर्थन।
3. आध्यात्मिकता का महत्व।
4. समाज सेवा पर बल
5. शिक्षा का महत्व
6. नैतिकता को जीवन का आधार
7. सर्वधर्मसमभाव की भावना।
8. सामाजिक न्याय पर बल।
9. देशप्रेम व विकास में योगदान।

रविदास के उपरोक्त सिद्धांतो के आधार पर आदर्शराज्य की संकल्पना की जा सकती है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# रविन्द्रनाथ टैगोर

- परिचय
- सगंठन एंव रचनाएं
- सिद्धांत (दर्शन)
  - तत्व मीमांसा
- अन्य विचार
  - राजनैतिक विचार
  - अंतर्राष्ट्रीयतावाद , मानवतावाद
  - सामाजिक विचार , शिक्षा पर विचार
- महत्व व निष्कर्ष

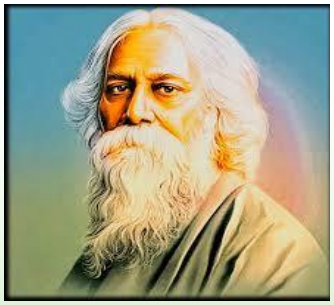

**जन्म** – 1861, कलकत्ता

**माता** – शारदादेवी, पिता देवेंन्द्रनाथ टैगोर

**पुरूस्कार** –1913 गीतांजलि के लियए नोवल पुरूस्कार।

**उपाधि** – 1915 में भारत सरकार द्वारा 'नाइट' की

## परिचय

आधुनिक भारत के असाधारण सृजनशील बहुप्रतिभावान संगीतकार चित्रकार कलाकार नाटककार' थे – भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ रूप से पश्चिमी देशों को परिचय कराया।

**स्थापना** – 1901 में शांति निकेतन– 1918 में विश्वभारती में परिवर्तित।
1921 लियोनार्ड एमहर्स्ट के साथ ग्रामीण पुनर्निर्माण संस्थान – श्रीनिकेतन की स्थापना।

**रचनाऐं** – **नाटक** :– डाकघर, राजा, मुक्तधारा।
**काव्य** :– मानसी, गीतामाल्या, गीतांजलि,
**कहानी/उपन्यास** :– गोरा, पोस्टमास्टर, काबुलीवाला, द रिलीजन ऑफ मैन, योगायोग।

## चिंतन पर प्रभाव

बंगाली लेखक बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, ब्रह्मसमाज का।
राष्ट्रीय आंदोलनो का।

## तत्वमीमांसीय दर्शन

नव्यवेदांती दार्शनिक, उपनिषदो के चिंजन एवं मनन के परिणास्वरूप विकसित।
**ब्रह्म**– ईश्वर को व्यक्तिपूर्ण मानकर ईश्वर को प्रेम तथा अनुभूति से ही जाना जा सकता है।
**जगत**– जगत की वास्तविकता पर विश्वास – सृष्टि, ब्रह्म की अभिव्यक्ति है परन्तु ब्रह्म से अलग है।
**जीव** का लक्ष्य ब्रह्म में लीन होना नहीं बल्कि स्वयं को पूर्ण बनाना है।
**माया**– महत्वपूर्ण विचार – माया द्वारा प्रकट रूपों की वास्तविक अनुभूति होती हैं।
**आत्मा** – 3 रूप – आत्माभिव्यक्ति, अस्तित्व एवं रक्षा भावना, अस्तित्व का चयन।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## राजनैतिक दर्शन

राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रभावित, बंग–भंग आंदोलन में सक्रिय सहयोग, स्वदेशी गीतों से जनता के क्रोध तथा पीड़ा को अभिव्यिक्त किया।
**राज्य संबंधी विचार** – सीमित राज्य के समर्थक, राज्य के दमनकारी और अतिसत्तावादी स्वरूप की आलोचना।
उनके अनुसार राज्य का कार्य, व्यक्तियों के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।
**अधिकार** – प्राकृतिक अधिकारो में विश्वास– अभाव में व्यक्ति एवं आत्मा का विकास संभव नहीं।
राज्य को प्राकृतिक अधिकारो में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

## स्वतंत्रता का सिद्वांत

**राजनीतिक स्वतंत्रता** – परम्पराओं एवं प्रथाओं के बंधन से मुक्ति।
**आध्यात्मिक स्वतंत्रता** – आत्मसाक्षात्कार द्वारा आत्मा को प्रबोधित करना।
**राष्ट्रवाद** – उक्त एवं संकीर्ण राष्ट्रवाद के आलोचक का।
राष्ट्रवाद का अर्थ देश की संस्कृति, परम्परा, सभ्यता, कला के प्रतिश्रद्वा पूर्ण समर्पण।
धार्मिक उन्माद, सामाजिक संघर्ष, साम्प्रदायिकता का विरोध।
**देशप्रेम** –राष्ट्र से अत्यधिक प्रेम, बंगभंग आंदोलन में स्वदेशी, स्वभाषा राष्ट्रीय शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का समर्थन।
हिंदु–मुस्लिम एकता के समर्थक।

## टैगोर का अंतर्राष्ट्रीयवाद

संकुचित राष्ट्रवाद एवं साम्राज्यवाद से घृणा। विश्व बंधुत्व एवं प्रेम में अटूट विश्वास।
वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारण में विश्वास। राष्ट्रो की पारस्परिक एकता, मित्रता का समर्थन।
पाश्चात्य एवं प्राच्य संस्कृतियों के समन्वय तथा सहयोग से विश्वशांति विश्वएकता, विश्वसरकार की स्थापना पर बल।
टैगोर का यह स्वप्न UNO रूप में साकार हुआ।

**संश्लेषणात्मक सार्वभौमवाद**– टैगोर का वह सिद्वांत जो राष्ट्रवाद को अंतर्राष्ट्रीयवाद के साथ जोड़कर मानववाद को बढ़ावा दे।

## टैगोर का मानववाद एवं विश्वबंधुत्व

- उच्चकोटि के मानववादी। संपूर्ण दर्शन में मानव कल्याण को अत्यधिक महत्व दिया।
- मानव की सभी शक्तियों के सामंजस्य पूर्ण विकास का समर्थन।
- मानवता को राष्ट्रवाद से अधिक महत्व।
- टैगोर का मानववाद आधुनिकतावाद से युक्त।
- मानवतावाद के साथ ही विश्वबंधुत्व में विश्वास।
- मानव व प्रकृति एक ही है, अभेद संम्बध है। अतः मानव को प्रकृति में स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिए
- टैगोर का आध्यात्मिक मानववाद– विश्व की जड़ में अध्यात्मिकता है तो विश्व के केन्द्र में मानव है अतः मानव व आध्यात्मिकता अर्न्तसम्बंधित हैं
- मानव दुनिया में विशिष्ट क्षमताओं वाला प्राणी हैं जिसकी क्षमताऐं 'केवल 'स्व' उद्देश्य तक सीमित न होकर बल्कि 'पर'/ दुसरे प्राणियों के उद्देश्य को पूर्ण कर सकते हैं
- मानव विश्व का सबसे मुक्त प्राणी हैं जो भौतिक स्वतंत्रता के लिए किसी भी स्तर को प्राप्त कर सकता है।
- आपके मानववाद की अभिव्यक्ति ही विश्व भारती के रूप में जो अंतर्राष्ट्रीय नागरिकता की ओर जाती है।
- यही टैगोर जी की नई समन्वियत वैश्विकृत मानव केद्रिंत संस्कृति है।

## सामाजिक विचार

- जातिप्रथा, छुआछूत, अस्पृश्यता, धार्मिक कट्टरता का विरोध। वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थक।
- राष्ट्रनिर्माण व समाज सुधार में गांवो का महत्वपूर्ण स्थान। देश सेवा का कार्य ग्रामों से ही।
- ग्रामीण विकास हेतु 'ग्राम सेवा समिति' की स्थापना पर बल।

## कार्य

- मतभेदो का हल पंचो द्वारा , स्वदेशी का उपयोग, ग्रामीण अस्तपतालों का निर्माण, खेलो की उचित व्यवस्था।
- सभाभवन का निर्माण।

## शिक्षा संबंधी विचार

- टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं शिक्षा शास्त्री थे। उनके अनुसार, सर्वोत्तम शिक्षा वही है जो सृष्टि को से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित कर सके।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

**शिक्षा दर्शन – तीन आधार**

1. स्वतंत्रता 2. रचनात्मक अभिव्यक्ति 3. प्रकृति व मानव के मध्य रचनात्मक संबंध।

- शिक्षा का अर्थ व उद्देश्य स्वतंत्रता में निहित है, अज्ञानता, पूर्वागृह, रूढ़ियो आदि से मुक्ति ही शिक्षा का सार।
- सभी को रचनात्मक होना चाहिए।
- शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए बच्चो को प्रकृति के करीब लाना होगा।
- प्रकृति से संपर्क द्वारा बच्चा विशाल दुनिया की निरंतरता, वास्तविकता और आनंद से परिचित होगा।

**उद्देश्य–** शारीरिक, बौद्विक, संवेगात्मक, सामाजिक, नौतिक, आध्यात्मिक आदि अवकास के साथ ही राष्ट्रीयता एवं अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास।

**मातृभाषा पर बल** – मातृभाषा में भावो की सुंदर अभिव्यक्ति करने की क्षमता होती है।

## महत्व

टैगोर जी ने अपने साहित्य के द्वारा न केवल भारतीयों में बल्कि वैश्विक जनमानस में मानववादी, अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक नागरिकतावादी, समन्वयवादी दृष्टिकोण का बीजारोपण किया, एंव प्रकृति प्रेम, सामाजिक न्याय, शिक्षा की सृजनशीलता बताने के साथ ही भारतीय संस्कृति को वैश्विक पटल पर रखा।

# राजा राममोहन राय

जन्म– 22 मई 1772 राधानगर कलकत्ता
माता –तारिणीदेवी
पिता– रमाकांत राय
म्रत्यु– 1833 ब्रिस्टल
स्थापना– आत्मीय सभा 1814
हिंदू कालेज,कलकत्ता
यूनेटेरियन 1821
ब्रह्म समाज 20 अगस्त 1828

## परिचय

- भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत, भारती राष्ट्रीयता का पैगंबर ,आधुनिक भारत के जनक।

## रचनाऐं

तुहफात – मुलवाहिदीन 1809 में, फारसी में – मूर्तियों का खण्डन।
प्रीसेप्ट्स ऑफ जीजस 1820
संवाद कौमुदी 1821 – बंगाली – साप्ताहिक पात्रिका।
मिरात–उल–अखबार 1822 – फारसी

- **उपाधि** – अकबर द्वितीय द्वारा राजा की।

## शिक्षण क्षेत्र में कार्य

- 1817 में डेविड हेयर की सहायता से कलकत्ता में हिन्दु कॉलेज की स्थापना।
- 1817 में कलकत्ता–अंगेजी विद्यालय।
- 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना।

## विचारों पर प्रभाव

- परिवार–रूढ़िवादी एवं धर्मावलंबी था।
- नकरात्मक प्रभाव पड़ा।
- बहुदेववाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा का विरोध।
- धर्म – हिन्दु, मूस्लिम, ईसाई तथा बौद्ध धर्म का प्रभाव।
- दार्शनिक का – मोण्टेरक्यू, वेंथम
- ब्लेकस्टोन → उदारता, स्वतंत्रात, मानववादी गुणों का समावेशन।
- पाश्चात्य संस्कृति – मैकाले, विलियम जौंस, डिग्बी से निकटता → अंग्रेजी भाषा व संस्कृति का ज्ञान।

## दार्शनिक व धार्मिक चिंतन

पालन–पोषण ब्रह्मणवादी एवं विष्णुभक्त परिवार में, अतः धार्मिक चिंतन का आधार उपनिषद् एवं ब्रह्मसूत्र थे।

- **अद्वैतवेदांत दर्शन**– निर्गुण निराकार ब्रह्म का समर्थन →एकेश्वरवाद में विश्वास।
- **बुद्धिसंगत दृष्टिकोण**– धार्मिक दृष्टिकोण मूलतः बौद्धिक था।
- किसी भी ऐसी परंपरा का समर्थन नहीं जिसे मानवीय बुद्धि स्वीकार नहीं करती।
- सर्वव्यापी धर्म समर्थक– सभी धर्मों का आंतरिक रूप समान है, विवाद केवल धर्म के बाह्य पक्ष को लेकर है।
  सम्प्रादायवाद का खण्डन– सभी धर्मों की मौलक एकता का समर्थन।

**ब्रह्म समाज के उद्देश्य**

एकेश्वरवाद की स्थापना, सदाचार, दयाभाव, प्रेम, करूणा, निर्भयता आदि की शिक्षा।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## ब्रह्म समाज के सिद्धांत

- ईश्वर एक है, वह विश्व का सृष्टा, पालक व रक्षक है।
- जीवात्म अमर है, उसमें प्रगति की असीम क्षमता है।
- आध्यात्मिक सुख हेतु ईश्वर की प्रार्थना एवं कृपा आवश्यक है।
- सच्ची उपासना, ईश्वर से प्रेम करना व उसकी इच्छा का पालन करना।
- ईश्वर सर्वव्यापी है, भगवान का आश्रय व अनुभूति आवश्यक है।
- समस्त धर्मों में सार है, मूर्तिपूजा व कर्मकाण्ड निरर्थक है।
- सत्य की अंतिम कसौठी मानव विवेक है।

## राजनैतिक चिंतन

- वैयक्तिक व राजनैतिक स्वतंत्रता– प्राकृतिक अधिकारों का नैतिक समर्थन, राज्य के कार्यक्षेत्र के संबंध में उदार दृष्टिकोण।
- **प्रेस की स्वतंत्रता**– शासक एवं शासित दोनों के लिये लाभप्रद।
- **शक्ति प्रथक्करण में विश्वास**– शासन व्यवस्था का मूल सिद्धांत।
- **धर्मनिरपेक्षता**– सभी धर्मों के प्रति आदरभाव।

- **मानवतावाद**– समस्त मानव जाति को एक परिवार तथा विभिन्न राष्ट्रों को उसकी शाखाऐं मातने थे।
- **विश्वबंधुत्व**– ऐसे विश्व संघटन की कल्पना जिससे दो राष्ट्रों के मध्य मतभेदों को पंच निर्णय द्वारा समाधान के लिये भेजा जा सके।

**सामाजिक चिंतन**

वे वस्तुतः एक समाज सुधारक थे, उन्होंने सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन द्वारा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया।

- सतीप्रथा का विरोध– सती प्रथा निषेध कानून 1829 में इन्हीं के प्रयासों से विलियम बैंटिक द्वारा पारित हुआ।
- नारी शिक्षा एवं स्वतंत्रता– नारी स्वतंत्रता नारी शिक्षा एवं नारी के अधिकारों पर बल।
- जातिप्रथा एवं अस्प्रश्यता का विरोध– जाति का आधार कर्म का माना, अंतर्जातीय विवाह के पक्षधर। शैव विवाह पद्धति का समर्थन जिसमें आयु, वंश, जाति का कोई बंधन नहीं।
- स्त्री पुरूष समानत–स्त्री के संमत्ति के अधिकार की वकालत।
- बहुविवाह एवं बालविवाह का विरोध।
- बालिका वध का विरोध।

**आर्थिक चिंतन**

- निजी सम्पत्ति के विरोधी नहीं, विरोध केवल आर्थिक असमानता का।
- किसानों के शोषण का विरोध।
- स्वंतत्र व्यापार का समर्थन।
- ईस्ट इंडिया कंपनी की मितत्ययता का समर्थन।
- धन निष्कासन का विरोध।

**शिक्षा संबंधी विचार**

- अंग्रेजी भाषा के ज्ञान पर बल→ अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर बल।
- प्राच्य एवं पाश्चात्य शिक्षा की पूरकता पर बल।
- वैज्ञानिक शिक्षा पर बल।
- यूरोपीय विचारों को प्रसारित करने का कार्य।

**आलोचना**

- अंग्रेजी शासन, भाषा, संस्कृति की प्रशंसा।
- स्वतंत्रता आंदोलनों में कभी प्रत्यक्षतः भाग नहीं लिया।
- भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रति, भारतीयों में हीन भावना का विकास हुआ
- अंग्रेजी गुलामी की स्थापना का मार्ग तैयार हुआ

**महत्व** – आपने मानवीय व तार्किक द्रष्टिकोण से तत्कालीन भारतीय धर्म व समाज में व्याप्त कुरूतियों , भेदभावकारी प्रथाओं व संस्थाओं की समीक्षा की तथा उनमें मानवीय कल्याण हेतू वैचारिक व संगठनात्मक सुधार का प्रयास किया। भारत में मानवता, राष्ट्रीयता के विकास में भूमिका के कारण अंततः आप प्रथम आधुनिक भारतीयता के अग्रदूत कहलाऐं।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# देवी अहिल्याबाई होल्कर

जन्म – 31 मई 1725 औरांगाबाद महाराष्ट्र
पति–खंडेराव होल्कर
पुत्र– मालेराव होल्कर
शासनकाल 1767– 1795 ई.

## परिचय

अहिल्याबाई इतिहास में एक महान रानी, जो न केवल अपना राजनीतिक कुशलता हेतु बल्कि अपने दार्शनिक विचारों, कल्याणकारी कार्यो के लिये भी प्रसिद्ध थी।

## दार्शनिक विचार

अहिल्याबाइ के दर्शन में कर्म, न्याय, नीति और धर्म जैसे गहन विचार शामिल थे।

1. **कर्म**– कर्म के महत्व में विश्वास, मनुष्य के कर्मफल की चिंता किये बिना अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिये। ''कर्म ही जीवन का आधार है कर्म से ही मनुष्य को सफलता व मोक्ष प्राप्त होता है।
2. **न्याय**– न्यायप्रिय शासिका, राज्य में न्याय व्यवस्था की स्थापना हेतु महत्वपूर्ण कार्य किये। ''उन्होंने कहा, न्याय की समाज का आधार है, बिना न्याय के समाज में अशांति और अव्यवस्था फैलती है।
3. **नीति**– नीतिशास्त्रों के सिद्धांत के आधार पर शासन। ''उन्होंने कहा, नीति ही जीवन का सार है, नीति के बिना मनुष्य का जीवन अधुरा है।
4. **धर्म**– अहिल्याबाई धार्मिक विचारों वाली थी। ''उन्होंने कहा, धर्म ही जीवन का मार्गदर्शक है, धर्म के बिना मानव जीवन अपूर्ण है।

## कुशल राजनीतिज्ञ

रानी अपनी कुशल राजनीति के लिये प्रसिद्ध थी। उन्होंने अपने काल में कई महत्वपूर्ण राजनैतिक कार्य किये।

1. **प्रशासन सुधार**– राजस्व व्यवस्था को सुव्यवस्थित कर भ्रष्टाचार को कम किया।
2. **न्याय व्यवस्था**– सभी वर्गों को समान न्याय प्रदान किया।
3. **सैन्यशक्ति**– मजबूत सेना, आधुनिक हथियार, सैनिकों को प्रशिक्षण किया।
4. **संबंधों का प्रबंधन**– पड़ोसी राज्य से मजबूत राजनैतिक व व्यापारिक संबंध स्थापति किये।
5. **कूटनीति**– राजनैतिक समस्याओं के समाधन हेतु।

## महत्व

- राज्य समृद्ध व शक्तिशाली बना। राज्य में शांति व सुव्यवस्थित स्थापित, जनता, खुशहाल एवं समृद्ध।

## जनकल्याणकारी कार्य

भारत की लोकमाता 'अहिल्याबाइ होल्कर' अपनी प्रजा के प्रति उदारता व दयालुता के लिये प्रसिद्ध थी। उन्होंने अपने शासनकाल में कई महत्वपूर्ण कार्य किये।

### 1. समाज सुधार

- सती प्रथा व बाल विवाह का विरोध।, विधवा पुनर्विवाह का प्रोत्साहन।, स्त्री शिक्षा को महत्व।

### 2. महिला सशक्तिकरण

- महेश्वर में महिलाओं हेतु विद्यालय।, अस्पताल एवं औषधालयों की स्थापना।
- रेशम बुनाई एवं कढ़ाई जैसे कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम, राजनैतिक व सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन।
- महिलाओं का सम्मान एवं समानता का अधिकार।

### 3. शिक्षा व स्वास्थ्य

- कई विद्यालयों एवं मठों की स्थापना। गरीबों एवं जरूरतमंदो हेतु चिकित्सा सुविधा।

### 4. आार्थिक विकास

- व्यापार एवं वाणिज्य को बढ़ावा, हस्तकरघा उद्योग महेश्वर की साड़ियां विकास। बाजार एवं सड़कों को विकास।
- उद्योगों को प्रोत्साहन।

### 5. न्याय एवं कानून व्यवस्था

- भ्रष्टाचार को कम करने के प्रयास, सभी वर्गों का समान न्याय

### 6. धार्मिक स्थलों पर जीर्णोद्धार

- काशी विश्वनाथ, सोमनाथ, द्वारकादीश मंदिर, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम्, केदारनाथ आदि मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया।
- मंदिरों में पूजापाठ एवं धार्मिक अनुष्ठान की व्यवस्था।
- तीर्थ यात्रियों हेतु धर्मशालाओं व धार्मिक त्यौहारों का ऋण आयोजन।

*नोट*– अहिल्याबाइ होल्कर एक महान शासिका थी जिन्होंने अपनी प्रजा के लिये उसके कल्याण के लिये अपन जीवन समर्पित कर दिया।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

# सावित्री बाई फुले

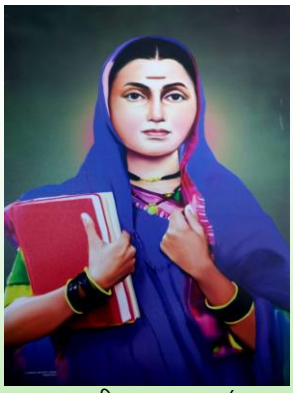

जन्म–3जनवरी1831सतारा(महाराष्ट्र)
पति– ज्योतिबा फूले
मृत्यु –10मार्च 1897 प्लेग
उपनाम– आई
शिक्षा : 1841 में ज्योतिबा फुले की प्रेरणा से प्रारंभ।

## परिचय

भारत की महान समाजसेविका, प्रथम महिला शिक्षक एवं आधुनिक भारत की प्रथम विद्रोही महिला कवियत्री एवं लेखिका।

- **रचनाऐं** :

**कविताओं का पहला संग्रह**– काव्यफुलै में 1854
**दूसरा संग्रह**– बावनकशी सुबोध रत्नाकर 1891 में
**कर्ज**– किसानों की दुर्दशा का वर्णन।
**परनिर्भर शूद्र**– शिक्षा का महत्व बताया।
अपनी कविताओं में सबसे ज्यादा चोट मनुवाद, जाति–पात के भेद पर तथा स्त्री–पुरूष असमानता पर किया।

## स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान

- 1897 में महाराष्ट्र में प्लेग– यशवंत राव के साथ मिलकर अस्पताल खोला।
- अछूतों का उपचार।

### महिला विद्यालय की स्थापना

- अपने पति व सहयोगी शिक्षिका फातिमा शेख के साथ 1 जनवरी 1848 को भिड़वाडा (पुणे) में लड़कियों के लिये स्कूल की स्थापना।
- 1850 में दो शैक्षणिक ट्रस्टों ''द नेटिव फीमेल स्कूल पुणे'' और ''द सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ एजुकेशन ऑफ मदर्स'' की शुरूआत।
- 1849 में पुणे में अस्मान शेख के घर पर मुस्लिम स्त्रियों और बच्चों के लिये विद्यालय खोला।
- शिक्षा के क्षेत्र इनके इस योगदान के चलते ब्रिटिश सरकार के शिक्षा विभाग ने 1852 में सम्मानित किया।

### महिलाओं के सशक्तिकरण में योगदान

- 1852 में महिला सेवा मंडल का गठन (उद्देश्य–महिला अधिकार, सम्मान, सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता)
- बाल विवाह एवं सती प्रथा का विरोध।
- विधवाओं के सिर मुंडाने की प्रथा का विरोध।
- विधवा पुनर्विवाह की शुरूआत।
- 1854 में विधवा आश्रम बनाना→ महिलाओं को शिक्षित कर सशक्त करने का प्रयास।

### बाल हत्या पर रोक हेतु प्रयास

- 1893 में नवजात शिशुओं का आश्रम→ कन्या भ्रुण हत्या पर रोक, गर्भवती, विधवाओं, बलात्कार पीड़ित महिलाओं को अपने बच्चों के पालन हेतु।
- काशीबाई नामक एक गर्भवती विधवा महिला को आत्महत्या करने से रोका→ कलांतर में उसी के पुत्र यशवंतराव को गोद भी लिया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

### अस्पृश्यता और सामाजिक समानता के क्षेत्र में योगदान

- 24 सितंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना।
उद्देश्क : शूद्रों व अतिशूद्रों को उच्च जातियॉ के शोषण व अत्याचारों से मुक्ति दिलाकर उनका विकास करना।
- ज्योतिबा फुले की मृत्यु के बाद बागडोर संभाली।

### सामाजिक चिंतन

- जातिप्रथा एवं भेदभाव का विरोध।,
- विधवा पुर्नविवाह का समर्थन।,
- महिलाओं के मानवीय अधिकारों का समर्थन।
- सती प्रथा व बाल विवाह का विरोध।,
- ब्राह्मणवाद का विरोध।
- भ्रूण हत्या व बाल हत्या का विरोध।
- अंधविश्वास तथा पांखड का विरोध।
- मानवतावाद तथा सेवाभाव पर बल।?

### वर्तमान प्रासंगिकता

- शिक्षा का बुनियादी अधिकार। ,स्त्री शिक्षा तथा उत्थान। नारी शिक्षा की अग्रदूत
- स्त्री–पुरूष समानता। मानवतावाद। जातिप्रथा व अस्पृश्यता का विरोध। वैज्ञानिक सोच पर बल।

सावित्रीबाई फुले वर्तमान में महिला शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र की सामाजिक सेवाओं के लिये प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

# स्वामी दयानंद सरस्वती

**जन्म–12 फरवरी 1824**
**मोरवी गुजरात**
वास्तविक नाम– मूलशंकर
मृत्यु–30 अक्टूबर 1883
पिता– अबांशंकर
गुरू– स्वामी विरजानंद
नारा– 'वेदों की ओर लौटों'

## परिचय

स्वराज्य ,स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वराष्ट्र, स्वदेशोन्नति के अग्रदूत रहें,
1863 में झूठें धर्मो का खण्डन कर पाखंड खंडिनी पताका लहराई
1875 में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुर्नस्थापना हेतु– पुर्नउत्थानवादी

## रचनाऐं

1. सत्यार्थ प्रकाश–सत्य/सही पर प्रकाश डालने वाला ग्रथं भारत में प्रचलित समस्त धर्म, दार्शनिक पंथों का उल्लेख
2. पंचमहायज्ञ विधि
3. संस्कार विधि
4. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

## दार्शनिक एंव धार्मिक चिंतन

मूलतः धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे, हिंदू धर्म को सर्वोच्च धर्म के रूप में स्वीकार किया
**वेद**– प्रमाणिक व अपौरूषेय हैं

1. वैदिक धर्म एंव एकेश्वरवाद में विश्वास– वैदिक धर्म में आस्था ,
आप शुरूआत में शैवमत व वेदांती थे– लेकिन बाद में मूलतः सांख्य– योग को अपनाया और अद्वैतवाद का खण्डन किया और अद्वैतवाद को वेदिक दर्शन के विपरीत माना।
**ईश्वर**–एकेश्वरवादी, ईश्वर निर्गुण नहीं बल्कि मंगलमय गुणों का भंडार।
**जगत**– प्रकृति जगत सत है।
**आत्मा**– सत है ,परमात्मा चित आनंद है।
ब्रह्म व जीव–दोनों में भेद है मृत्यु के बाद भी जीव, ब्रह्म से अलग रहता है।
2. **कर्म सिद्धांत में विश्वास**– जीवन की समस्याओं का समाधान वैदिक सिद्धांत के आधार पर करना चाहते थे।
3. **अंधविश्वास एंव कर्मकाण्ड का विरोध**– पौराणिक हिन्दू धर्म का खण्डन मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, अवतारवाद,पशुवलि, श्राद्ध, तंत्रमंत्र तथा झूठे कर्मकाण्डो को स्वीकार नहीं किया।
4. **धर्म की उदार व्याख्या**–ईश्वर के प्रति निष्ठा रखते हुए उदार एंव शाश्वत मानवीय मूल्यों को ग्रहण करना ही धर्म है।
5. **शुद्धि आंदोलन**– हिंदू धर्म की पुनः स्थापना हेतु।

## सामाजिक चिंतन

महान समाज सुधारक, तत्कालीन समाज में व्याप्त,सामाजिक कुरीतियों तथा अंधविश्वासों और रूढ़ियों बुराईयों को दूर करने के लिए निर्भय होकर उन पर आक्रमण किया–सन्यासी योद्धा।

1. **आश्रम व्यवस्था का समर्थन**–सत्यार्थ प्रकाश की विवेचना।
2. **कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था**– जन्म आधारित वर्ण एंव जाति व्यवस्था का विरोध।
3. **दलित उत्थान**–सर्वाधिक कार्य, शुद्ध तथा स्त्रियों के लिए, वेद पढ़ने एंव उच्च शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवीत धारण करने, सभी पक्षों से ऊंची जाति तथा पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त करवाने के लिए अंदोलन किये।
4. व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास समाज में रहकर ही संभव है
5. **सामाजिक बुराइयों का विरोध**–जातिप्रथा अंस्प्रश्यता, बाल विवाह, सतीप्रथा, बहुविवाह, दहेज, देवदासी जैसी कुप्रथाओं का विरोध नारी गरिमा का समर्थन, स्त्री–पुरूष समानता पर बल, नारी शिक्षा को बढ़ावा।

**वैदिक मूल्यों का समर्थन**– वैदिक मूल्यों को सामाजिक जीवन का आर्दश बनाकर सुसस्कृत और सभ्य समाज का निर्माण कर सकते है।
**राजनैतिक चिंतन**– वेदों तथा मनुस्मृति में वर्णित राजनीतिक सूत्र को अपने चिंतन का आधार बनाया।
**प्रवुद्ध राजतंत्र का सिंद्धात**– ऐसे राज्य की अवधारणा ग्रहण की जो धर्मानुकूल आचरण के सिद्धांत पर चले तथा राजा उसी को चुना जाए जो बुद्धिमान तथा चतुर हो।

## 2. भारतीय राष्ट्रवाद

स्वधर्म, स्वराज, स्वभाषा, स्वदेशी को बढावा।
भारतीय राष्ट्रवाद को जगाने के लिए अंधविश्वास, आडम्बर ,रूढ़िवादिता कुरीतियों आदि पर प्रहार।
सत्यार्थ प्रकाश में 'स्वराज' का आंदर्श प्रस्तुत।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

स्वेदेशी राज्य को सर्वोत्तम माना बुरे से बुरा देशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बेहतर है।
राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी को पूरे देश में प्रचलन में आवश्यक माना।

3. **लोकतंत्र संबंधी विचार**– स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आधारभूत लोकतांतित्रक सिद्धांतो में पूर्ण विश्वास वे मानते थे कि लोकतंत्र व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करता वल्कि व्यक्तियों को स्वंतत्र विकास करने के अवसर प्रदान करता है।
4. **शासन का स्वरूप व शक्ति संतुलन**– शासन का अंतिम स्त्रोत, ईश्वर शासन की शक्ति 3 निकायों में विभाजित धर्मायसभा–न्यायपालिका, विधानायसभा–विधायिका, राजायसभा–कार्यपालिका
5. **कानून का शासन**– राजा व प्रजा दोनों को ही कानून की सत्ता के अधीन रहना चाहिए। कानून के शासन से तात्पर्य कानून की दृष्टि से सभी व्यक्ति समान है।
6. **ग्राम प्रशासन**– लोकतांत्रिक विक्रेन्दीकरण ,प्रशासन की मूलभूत इकाई ग्राम।
7. **अहिंसा की धारणा**– पूर्ण अहिंसा को अव्यवहारिक मानते हुए राजनीतिक मामलों में दण्ड व्यवस्था की अनिवार्यता को स्वीकार्य किया ।
8. **मानवतावाद व अंतर्राष्ट्रीयवाद का समर्थन**– मानवतावादी व विश्वबंधुत्व के महान समर्थक, सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार की तरह माना।

## शिक्षा संबंधी चिंतन

शिक्षा को मानव जीवन को महान ध्येय माना, शिक्षा संबंधी विचार वैदिक परंपरा के पोषक है शिक्षण संस्थाओं का आधार गुरूकुल प्रणाली, स्त्री व शूद्रों की शिक्षा पर विशेष बल, शारीरिक विकास को भी अनिवार्य माना ,स्वदेशी शिक्षा का समर्थन शिक्षा के साथ सात्विक प्रवृत्ति,नैतिक शिक्षा व ब्रह्मचर्य को भी अनिवार्य माना।

**आर्य समाज के 10 सिद्धांत है।**

1. जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उनका मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निर्गुण, निराकार सर्वशक्तिमान है।
3. वेदो का अध्ययन अध्यापन आर्यो का प्रमुख धर्म है।
4. सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को छोड़ने हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए।
5. सभी कार्य धर्मानुसार करना चाहिए।
6. संसार का उपकार करना, समाज का मुख्य उदेदश्य है।
7. सभी से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वार्ता करना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना चाहिए।
9. सभी की उन्नति में अपनी उन्नति समझना।
10. प्रत्येक के लिए हितकारी नियमों का पालन करना चाहिए।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

**कमी** : शुद्धि आन्दोलन में धार्मिक टकराव व साम्प्रदायिकता बढ़ी।

**महत्व** : 19वीं सदी में पहली बार **'स्वराज'** की अवधारणा दी। भारतीयों में आत्मविश्वास बढ़ाने और सांस्कृतिक व धार्मिक पुनरूत्थान एंव राष्ट्रीय नव जागरण में बड़ी भूमिका रही हैं।

# महर्षि अरविन्दो

- परिचय
- सिद्धांत (दर्शन)
- तत्व मीमांसा– पूर्ण अद्वैतवाद्
  पूर्ण अद्वैत योग
- राजनैतिक दर्शन
- महत्व व निष्कर्ष

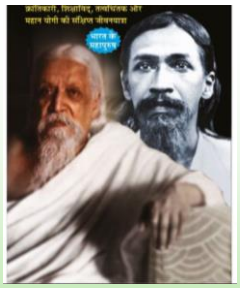

जन्म : 15 अगस्त 1872, कलकत्ता में
मृत्यु : 5 दिसंबर 1950, पाण्डिचेरी
अरविंद आश्रम : 1910 पाण्डिचेरी

**परिचय**– पहले राष्ट्रवादी क्रांतिकारी, वाद में एक योगी संत नव्य वेदांता दार्शनिक की भूमिका में रहें।

**रचनाऐं** – एससे ऑन गीता, द लाइड डिवाइन, द सिंथेसिस ऑफ योगा, द ह्यूमन, साइकिल, द आइडिल ऑफ ह्यूमिनिटी, ऑन द वेदा, ए लीजेंण्ड एण्ड ए सिंबल।

## तत्वमीमांसा दर्शन

नव्य वेदोंती दार्शनिक है, इनका दर्शन पूर्ण अद्वैतवाद के नाम से प्रसिद्ध हैं।

**पूर्ण अद्वैतवाद** – सर्वांगीण परमपूर्ण तत्व में भौतिक व अध्यात्मिक दोनों पक्षो का अनुपम, समन्वय विद्यमान है। जड़–चेतनतत्व की अंर्तनिहित एकता पर बल ।

- जगत की वास्तविक सत्ता में विश्वास। जगत व जीव दोनो सत् हैं।
- जगत ब्रह्म की लीलामयी अभिव्यक्ति
- ब्रह्म और जगत के स्वरूप में कोई तात्विक अंतर नहीं, अभेद संबंध है। सृष्टि उसी का खेल है, वहीं खेल है, वही खिलाड़ी है और वहीं क्रीड़ा परिषद है।
- दुख + अशुभ = सच्चिदानंद के विकासक्रम की एक स्थिति विशेष को प्रकट करते है।
- अरविंद के अनुसार, जगत की प्रक्रिया 2 रूपों में व्यक्त होती है।
  1. आरोहण  2. अवरोहण

**सत्ता के 8 स्तर**

- परम सत्, चित्त, आनंद, अतिमानस, मानस, मन, प्राण, जड़।

**आरोहण** : निम्नतर का उच्चतर की ओर बढ़ावा अर्थात् जगत के निम्नतर रूप का सच्चिदानंद की ओर बढ़ना।
**अवरोहण** : परमसत् का स्वंय को जगत के निम्नतर रूपों में अभिव्यक्त करना अर्थात् सच्चिदानंद का जगत के निम्नतम रूपों में व्यक्त होना।

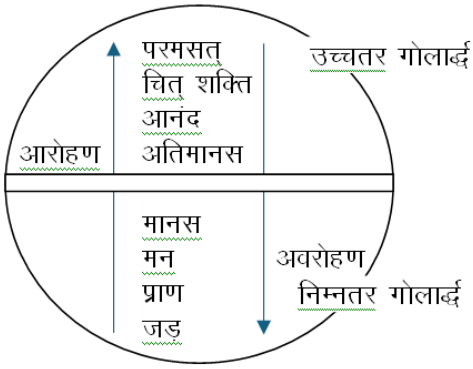


- अभी तक आरोहण की प्रक्रिया मानस तक पहुंच चुकी है।

## पूर्ण अद्वैत योग

- अरविंद ने मानस से अतिमानस के स्तर पर छलांग लगाने के लिये पूर्ण अद्वैत योग का मार्ग सुझाया। सांसारिक दुखो का निवारण केवल योग के माध्यम से आत्मा का विकास करके ही संभव।
- **योग**– मानव की संपूर्णता में ईश्वर तत्व का उत्प्रवाह है। मानव में ईश्वरत्व या दिव्य जीवन का अति प्रवाह है। जिसके 3 स्तर है– आत्मिकता की प्रक्रिया मानस को बह्यता से हटाकर आंतरिकता की ओर उन्मुख।
- **आध्यत्मिकता की प्रक्रिया**– आत्मा में यह क्षमता उत्पन्न करना कि वह उच्चतर स्तर के लिये स्वंय को तैयार कर सके।

- **अतिमानसिकता की प्रक्रिया**– आत्मा उच्चतर स्तर को प्राप्त कर लेती है। उसकी चेतना ईश्वरीय हो जाती है तथा सभी द्वैत समाप्त हो जाते है।
- **मोक्ष**– इसी जगत में पार्थिव सत्ता में, सामाजिक जीवन में संभव।

## राजनैतिक दर्शन

- **दार्शनिक आधार**– भारतीय पुनरूत्थान और राष्ट्रवाद के मूल में ईश्वर को माना, स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनैतिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि मानव जाति की आध्यत्मिक नेतृत्व प्रदान करना भी है।
- **राजनैतिक चिंतन**– भौतिकवाद और आध्यात्मवाद में समन्वय स्थापित।
- **स्वराज** : उग्रवादी विचारधारा, स्वराज के बिना सामाजिक सुधार, औद्योगिक विकास, शिक्षा एवं राष्ट्रीय जीवन में परिपूर्णता असंभव है।

**आध्यात्मिक राष्ट्रवाद**– राष्ट्रवाद को देवीय आदेश कहकर उसमें चेतना का संचार किया।
**राज्य संबंधी विचार**– राज्य की सर्वोच्चता को चुनौती, राज्य की शक्तियों को सीमित करने के पक्ष में।

### स्वतंतत्रता संबंधी विचार– 3 प्रकार

1. **राष्ट्रीय स्वतंत्रता** : विदशी शासन से मुक्ति।
2. **आंतरिक स्वतंत्रता** : व्यक्ति की किसी वर्ग या सामूहिक नियंत्रण से मुक्ति।
3. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** : व्यक्ति की समाज या स्वेच्छाचारी शासक से मुक्ति।

## लोकतंत्र की आलोचना

लोकतंत्र को व्यक्तिगत स्वतंत्रता को पोषक नहीं माना, बहुसंख्यक दल का शासन व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा न कर उसे स्वार्थपूर्ति का साधन बनाता रहा है।

**समाधान**– विवेन्द्रीकरण
उग्रवादी विचार एवं निष्क्रिय प्रतिरोध के समर्थक।
विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना।
धर्म–राजनीति अलग नहीं।

### शिक्षा संबंधी चिंतन

उनके अनुसार, मानव शिक्षा द्वारा स्वंय को मानस से अतिमानस में परिवर्तित कर सकता है।
**वर्तमान शिक्षा पद्धति**– आध्यात्म एवं सृजनात्मकता का अभाव, असंतुष्ट।
अरविन्द के शिक्षा पद्धति : भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षा के समर्थक, माध्यम–मातृभाषा।

- प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान की पुर्नस्थाना।
- आध्यात्मिक ज्ञान में दर्शन, साहित्यकला, विज्ञान व विवेचनात्मक ज्ञान शामिल।
- वर्तमान समस्याओं का समाधान, भारतीय आत्मज्ञान की दृष्टि से हो।
- आध्यात्म प्रधान समाज की स्थापना।
- नैतिक शिक्षा– गुरू की प्राचीन परंपरा के पोषक, गुरू–शिष्य का मित्र, पथप्रदर्शक एवं सहायक होता है।

### महत्व

जड़वाद, आध्यात्म का समन्वय किया, आनन्दवाद व आशावाद का संदेश एवं मानवता के उन्नयन, कल्याण की बात की।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

# सर्वपल्ली राधा कृष्णन

## परिचय

प्रख्यात शिक्षाविद ,दार्शनिक, नव्यवेदांती एंव समन्वयवादी दृष्टिकोण और भारतीय संस्कृति के संवाहक, सोवियत संघ के विशिष्ट राजदूत भी रहे। 1952–62 तक प्रथम उपराष्ट्रपति ,1962 में राष्ट्रपति बने।
1954 में भारत रत्न तथा मरणोपरांत 1975 में टेम्पलटन पुरूस्कार यू.एस.ए. से सम्मानित।

जन्म – 5 सितंबर 1888
जन्मस्थान तिरूतनी तमिलनाडु
माता – सीताम्मा
पिता– सर्वपल्ली वीरास्वामी
**मृत्यु**– अप्रैल 1975
उपनाम– दार्शनिक राष्ट्रपति

**रचनाऐं :** कंटपररी इंडियन फिलासफी, गौतम बुद्धः जीवन और दर्शन, ईस्टर्न रिलीजन एण्ड वेस्टर्न थाटस, एन आइडियलिस्टिक व्युआफ लाअफ, इंडियन फिलासाफी आफ रवीन्द्र नाथ टैगोर, द ब्रह्म सूत्र।

## तत्व मीमांसीय दर्शन

हिंदू धर्म व दर्शन की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया।
**अद्वैतवाद में विश्वास** किंतु जगत की वास्तविक सत्ता को स्वीकार, जगत को ही अभिव्यक्ति माना। वैदिक दर्शन के समेकन की बात की।

**नव्यवेदातीं दार्शनिक** : ब्रह्म की सत्ता में विश्वास, ब्रह्म को अनुभूति का विषय माना, ब्रह्म, जीव, जगत का भेद मिट जाए तो यही आध्यात्मिक स्वतंत्रता या मोक्ष है, ज्ञान– आत्मिक अनुभव/सहज अनुभव (intuition) से।

## धर्म और विज्ञान

**धर्म की प्रगति**– आध्यात्मिक विकास, धर्म का तात्पर्य– आधात्मिक अनुभूतियों से है, कर्मकाण्डों से नहीं।
**विज्ञान की प्रगति**–भौतिक विकास, विज्ञान को सार्वभौमिक तत्व माना लेकिन विज्ञान दो धारी तलवार माना।
अगर इसका उपयोग व्यक्ति उच्च नैतिक गुण/मूल्यों के आधार पर नहीं करेगा तो विज्ञान विनाश का कारण बनेगा अतः दोनों को ही आवश्यक माना।

वर्तमान में धर्म–दर्शन की व्यवस्था दोषपूर्ण हो गई पूर्व के दर्शन में धर्म पर अधिक बल साम्प्रदायिकता, कट्टरता मे वृद्धि एंव पश्चिम के दर्शन में विज्ञान पर अधिक बल– भौतिकवाद, उपभोक्तावाद में वृद्धि इसीलिए दोनों में समन्वय की आवश्यकता है धर्म को वैज्ञानिक दृष्टिकोण एंव विज्ञान में मानवीय एंव नैतिक मूल्यों का समावेशन जरूरी हैं जिससे मानव का हित हो सके।

VIDYA ICS
Dedicated to Civil Services

## सामाजिक राजनैतिक चिंतन

- वर्णव्यवस्था का समर्थन गांधीवाद का प्रभाव।
- जाति व्यवस्था का विरोध सामाजिक आर्थिक न्याय पर बल।
- लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना।
- राष्ट्रवाद के समर्थक परंतु संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी।
- प्रतिबंध रहित स्वतंत्रता के पक्षधर नैतिक एंव आध्यात्मिक विकास।

## शिक्षा संबंधी विचार

शिक्षा का आधार आध्यात्मिक दृष्टिकोण आत्मा को परमतत्व माना, समस्त प्रयास आत्मा को लक्ष्य मानकर।

**उददेश्य–ज्ञा**नोपार्जन, ज्ञान का रूपांतरण,स्वतंत्रता, जीने की कला, अंतदृष्टि व आत्माभिव्यक्ति का विकास।

**प्रकृति मानव संबंध–** मनुष्य अपने विकास क्रम के दौरान और अधिक सुरक्षित हो जाना चाहता है किन्तु यह सुरक्षा प्रकृति पर आधिपत्य की प्रवृति से नही बल्कि आत्म नियंत्रण से आएगी जो धर्म सिखाएगा।

## महत्व

इन्होनें अन्य भारतीय दर्शनों की समन्वय, एकीकरण की परंपरा को आगे बढ़ाया आपके विशिष्ट योगदान के कारण ही आपके जन्म दिवस **5 सितम्बर** को **'शिक्षक दिवस'** के रूप में मनातें है।

# डॉ. भीमराव अंबेडकर

**परिचय :** महान व्यक्तित्व, बहुप्रतभाशाली, विचारक, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ शिक्षाविद, विधिवेत्ता एंव प्रथम कानून मंत्री और संविधान के शिल्पकार रहें है। एंव आधुनिक मानवतावादी, तार्किक दृष्टिकोण से भारतीय धर्म व समाज का परीक्षण किया एंव युक्ति युक्त सुधार के लिए प्रयासरत रहें।

जन्म – 14 अप्रैल 1891 इन्दौर मंहू
माता – भीमाबाई
पिता – रामजी मलोजी सकपाल
पत्नी – रमाबाई
मृत्यु– 6 दिसम्बर 1956

## समाचारपत्र

दलित अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने पाँच पत्रिकाएँ शुरू कीं –
मूकनायक (मूक का नेता, 1920)
बहिष्कृत भारत, 1924)
समता (समानता, 1928)
जनता (द पीपल, 1930)
प्रबुद्ध भारत, 1956

**मूकनायक–** भाषा– मराठी, पाक्षिक पत्र, 1920 में प्रकाशन विषय वस्तु दलितों की आवाज को सामने लाना तथा उनमें नवीन चेतना का संचार कर अपने अधिकारों के लिए प्रेरित करना। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर का पहला सत्याग्रह 1927 में महाड तालाब सत्याग्रह था तथा उनका दूसरा सत्याग्रह कलाराम मंदिर में प्रवेश के लिए था।

| संगठन | रचनाऐं |
|---|---|
| बहिष्कृत हितकारिणी सभा– 20 जुलाई 1924<br>समता सैनिक दल – 1927<br>स्वतंत्र लेबर पार्टी – 1936<br>अनुसूचित जाति फेडरेशन – 1942<br>डिप्रस्ड क्लास एजुकेशन सोसायटी – 1945<br>भारतीय बौद्ध महासभा – 1955 | बुद्धा एण्ड हिज धम्म 1957<br>द अनटचेबल 1947<br>गांधी और गांधीज्म<br>शूद्र कौन थे 1946<br>फिलासफी आफ हिंदू<br>एनिहिलेशन आफ कास्ट<br>द डिक्लाइन एंड फाल आफ बुद्धिस्म इन इंडिया<br>द स्माल होलिंग्स इन इंडिया एंड देयर रेमेडीज<br>अ इडिंया आफ नेशन |

**डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के विचार** –1. सामाजिक विचार
– 2. धार्मिक विचार
– 3. राजनीतिक विचार

- वर्ण व्यवस्था संबंधी विचार
- जातीय व्यवस्था संबंधी विचार
- महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु विचार
- दलितों की स्थिति में सुधार के कानूनी उपाय
- शिक्षा संबंधी विचार
- सामाजिक न्याय की अवधारणा

VIDYA ICS
Dedicated To Civil S

### 1. सामाजिक विचार

सामाजिक व्यवस्था में समता स्थापित करने के लिए आमूलचूल परिवर्तन की बात की

- पारिवारिक सुधार एवं सामाजिक सुधार के माध्यम से समाज में व्यापक सुधार की अवधारणा उन्होंने दी परिवारिक सुधारों में स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह आदि शामिल है वहीं सामाजिक सुधारों में वर्ण भेद को मिटाना, जाति प्रथा का उन्मूलन आदि शामिल है।

### वर्ण व्यवस्था संबंधी विचार

अपनी पुस्तक 'Who was shudras' में वर्ण वर्णाश्रम व्यवस्था को अस्वीकार किया है, डॉक्टर अंबेडकर जी का कहना है कि वर्ण व्यवस्था ब्राह्मणवादी हितों की पूरक है। यह व्यवस्था अन्याय असमानता एवं शोषण पर आधारित है। हिंदू धर्म के ऐसे सभी ग्रंथ जो इस व्यवस्था को स्वीकार करते हैं उन्हें अमान्य किया जाना चाहिए।
वर्ण व्यवस्था गतिशीलता को रोकती है यह रूचि एवं योग्यता के अनुसार नहीं बल्कि जन्म के अनुसार श्रमिकों का विभाजन करती है वर्ण व्यवस्था सामाजिक विषमताओं को बढ़ावा देती है जो आधुनिक एवं सभ्य सभ्यताओं के लिए उचित नहीं है। वर्ण व्यवस्था बौद्धिक एवं शारीरिक श्रम को अलग अलग करती है एवं बौद्धिक श्रम को कुलीन मानती हैं इस प्रकार वर्ण व्यवस्था एक बंद व्यवस्था है जो समाज में सृजनात्मक शक्तियों का नाश करती हैं।

## जातीय व्यवस्था संबंधी विचार

वर्ण व्यवस्था के स्थाई हो जाने पर जाति व्यवस्था प्रचलन में आई। यह व्यवस्था समाज मे अस्पृश्यता को बढ़ावा देती है असमानता में वृद्धि करती है समाज में चतुर वर्ण व्यवस्था में निम्न स्तर पर विद्यमान जातियों के साथ अस्पृश्यता व्यवहार किया जाता है उन्हें शिक्षा , संस्कृति, संपत्ति से वंचित रखा जाता है जाति व्यवस्था के उन्मूलन के द्वारा ही इस प्रथा को समाप्त किया जा सकता है जाति व्यवस्था का उन्मूलन अंतरजाति विवाह एवं अंतरजातीय भोज से संभव है।

## महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु विचार

महात्मा ज्योतिबा फुले से प्रेरणा लेकर महिलाओं महिला आंदोलन की शुरुआत की जो समतामूलक समाज स्थापित करने पर आधारित था इससे उपेक्षा, शोषण श्रम में लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना चाहते थे।

डॉक्टर अंबेडकर का मानना था कि स्त्रियों के पतन के लिए बाल विवाह, सती प्रथा, भ्रूण हत्या आदि प्रमुख समस्याएं जिम्मेदार हैं इन सभी समस्याओं की जड़ जाति प्रथा एवं ब्राह्मणवादी व्यवस्थां हैं जिसने महिलाओं को हमेशा से बंधन में रखा उन पर असमानता लादि अर्थात भारत में दलितों महिलाओं के पतन के लिए ब्राह्मणवादी व्यवस्था मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

परिवार के अंदर स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देकर एवं भ्रूण हत्या पर रोक लगाकर वहीं दूसरी तरफ सामाजिक स्तर पर सकारात्मक मनोवृति का विकास करके महिलाओं को गरिमा, समानता व सम्मान प्रदान करना चाहते थे।

उन्होनें भारतीय संविधान में अनेक प्रावधान किए जिससे महिला समानता अनुच्छेद 15, महिला को मत देने का अधिकार अनुच्छेद 326 एवं राज्य के नीति निर्देशक तत्व में महिला उत्थान हेतु अनेक प्रयास किए– प्रमुख **1955 में हिंदू कोड बिल** पेश किया गया था, यह बिल व्यापक सुधारों को लिए हुए था।

## दलितों की स्थिति में सुधार के कानूनी उपाय

अनुच्छेद 15 और अनुच्छेद 16 में सामाजिक समानता की व्यवस्था और अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को कानूनी दृष्टि से अपराध घोषित करने की व्यवस्था की गई, जिसमें दलितों को समानता एवं अस्पृश्यता के व्यवहार से बाहर निकालने में डॉक्टर अंबेडकर जी का प्रभाव रहा है।

## शिक्षा संबंधी विचार

**"शिक्षित हो, संगठित रहो, संघर्ष करो"**

शिक्षा के माध्यम से व्यापक परिवर्तन लाना चाहते थे, समतारूपी समाज की स्थापना के लिए उन्होंने एक सूत्र दिया कि शिक्षित हो संगठित रहो और संघर्ष को शिक्षा के माध्यम से ही समाज में परिवर्तन आ सकता है।

स्त्री शिक्षा हेतु विशेष प्रयास– स्त्री शिक्षा के बगैर समाज में समानता स्थापित नहीं की जा सकती है,

दलित वर्ग में शिक्षा के बगैर आत्मविश्वास एवं जागरूकता का संचार नहीं हो सकता है। 'निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना राज्य का दायित्व – इस व्यवस्था से दलित को भी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल जाएगा।

अतः सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार अंबेडकर शिक्षा के माध्यम से गुलामी की जड़ों को काटकर सामाजिक समानता आर्थिक उन्नति व राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करना चाहते थे।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## सामाजिक न्याय की अवधारणा

व्यक्ति के अधिकार के साथ–साथ सामाजिक समानता ' सामाजिक समानता के क्रम में सर्वप्रथम चाहते थे कि

दलित समुदाय अपने उत्थान के लिए स्वयं प्रयास करें उन्होंने दलितों को उन सब कार्यों को करने के लिए मनाही की जो अपवित्र समझे जाते थे, जैसे कि मरे हुए पशुओं को फेंकना आदि।

डॉक्टर अंबेडकर जी के द्वारा दलितों को पाखंड, धार्मिक, कर्मकांड व भाग्यवादी सोच त्यागकर संघर्षशील व कर्मठ बनने की प्रेरणा दी अपने कार्यों को करने के लिए डॉक्टर अंबेडकर के द्वारा 1924 में बहिष्कृत हितकारिणी सभा नामक संस्था की स्थापना की।

इसमें संघर्ष के साथ– साथ रचनात्मक कार्यों को भी आगे बढ़ाया इसके इसके अलावा डॉ अंबेडकर जी ने ''मूकनायक'' एवं ''बहिष्कृत भारत'' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से अपने समाज सुधार कार्यक्रम को और भी विस्तृत आयाम दिया

## धार्मिक विचार

उनका उद्देश्य– प्रजातांत्रिक समाज की स्थापना करना , इसके लिए उन्होंने हिंदू धर्म को समानता, स्वतंत्रता एवं मानवीय गुणों से युक्त बनाने का आग्रह किया।

वे धर्म में ऐसे मूल्यों को स्थापित करना चाहते थे जो व्यक्ति एवं व्यक्ति के मध्य सम्मान एवं गरिमा का संबंध स्थापित करें। वे हिंदू धर्म में विद्यमान वर्गीय, जातिगत असमानता को समाप्त करना चाहते थे, निम्न वर्ग एवं जातियों की स्वतंत्रता, मंदिर जाने, धर्म ग्रंथ को पढ़ने की स्वतंत्रता के हिमायती थे। वे धर्म को मानवीय गुणों से परिपूर्ण करना चाहते थे इसलिए उन्होंने निम्नलिखित सुझाव दिए। हिंदू धर्म का केवल एक प्रमाणिक ग्रंथ होना चाहिए जिसमें आधुनिक मूल्यों का समावेश हो , पंडिताई

की वंशानुगत व्यवस्था समाप्त होना चाहिए, जिस प्रकार डॉक्टर, इंजीनियर बनने के लिए विशिष्ट योग्यता की आवश्यकता होती है वैसे ही पंडिताई के लिए की जानी चाहिए।

- पुरोहितों को राजकीय सेवक बनाया जाना चाहिए राज्य द्वारा उनका चयन किया जाना चाहिए।
- डॉक्टर अंबेडकर जी ने सन 1956 में 500000 दलितों के साथ उन्होंने बौद्ध धर्म धारण कर लिया, इसका उद्देश्य दलित वर्ग को अपनी एक नई पहचान और महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान करना था।

## राजनीतिक विचार

- अंबेडकर जी राजनैतिक विचारों को व्यवहार में लाने के लिए– लिखित सवैंधानिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का निर्माण , प्रगतिशील विचारों के माध्यम से स्वतंत्रता का सर्वोच्च स्थान रखते थे।
- स्वतंत्रता की प्राप्ति पराधीनता को समाप्त करके ही की जा सकती है परंतु वह स्वतंत्रता के साथ–साथ समतामूलक समाज को भी समान महत्व देते थे। स्वतंत्रता और समानता की स्थापना केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही संभव है यह व्यवस्था व्यक्ति को अधिकार एवं समानता प्रदान करती है अतः अंबेडकर जी के द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था सर्वोच्च व्यवस्था के रूप में माना गया डॉक्टर अंबेडकर के समस्त राजनीतिक विचार भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।
- डॉक्टर अंबेडकर जी के द्वारा मानवाधिकारों, मूल अधिकारों, समानता को मौलिक अधिकारों के माध्यम से स्थापित किया गया।
- कल्याणकारी राज्य की स्थापना को राज्य के नीति निदेशक तत्वों के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास किया गया।
- संसदीय प्रकार की शासन व्यवस्था में डॉक्टर अंबेडकर जी के द्वारा कार्यपालिका को विधायिका के प्रति उत्तरदाई बनाया गया
- भारतीय संविधान में कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका के मध्य संतुलन स्थापित किया गया है।

- शिक्षक महादेव अंबेडकर के कहने पर उन्होंने अपने नाम से सकपाल हटाकर अंबेडकर जोड़ लिया जो उनके गांव के नाम अंबावडे पर आधारित था।

## महत्व

महान व्यक्तित्व, बहुप्रतिभावान थे। और आपने समाजिक न्याय के लिये धरातल स्तर पर जाकर जातिवाद, छुआछूत व अन्य सामाजिक भेदभाव के खिलाफ कानूनी, धार्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर कठोर प्रयास किया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# पण्डित दीनदयाल उपाध्याय

जन्म–25 सितंबर 1916 चंद्रभान मथुरा
मृत्यु – 11 फरवरी 1968 मुगलसराय
माता – राम प्यारी
पिता – भगवती प्रसाद

## परिचय

दार्शनिक, विचारक समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्री एवं भारतीय राजनीतिज्ञ तथा भारतीय जनसंघ के संस्थापक एव भाजपा के अग्रदूत भी थे।

## रचनाऐं

1940 के दशक में लखनऊ से 'राष्ट्र धर्म' की शुरुआत– यह हिंदुत्व राष्ट्रवाद की विचारधारा को प्रसारित करने हेतु।

सम्राट चंद्रगुप्त (1946) जगतगुरु शंकराचार्य (1947)
अखंड भारत क्यों? (1952) अवमूल्यनः एक महान पतन (1966)
**भारतीय अर्थनीति**: विकास की दिशा (1958) राष्ट्र चिंतन
**दो योजनाएं**: वादे, प्रदर्शन, संभावनाएं (1958) राजनीतिक डायरी (1968)
एकात्म मानवतावाद राष्ट्र जीवन की दिशा

## पत्रिकाऐं

**संस्थान**– राष्ट्रधर्म प्रकाशन

राष्ट्रधर्म (मासिक पत्रिका)
पंचजन्य (साप्ताहिक) – वर्तमान में भी चलती है
स्वदेश (दैनिक)

**विचार** – 1. नैतिक सामाजिक एव राजनीतिक विचार – हिंदुत्व, एकात्म वाद
2. आर्थिक विचार – अंत्योदय

## हिंदुत्व

पंडित दीनदयाल उपाध्याय में हिंदुत्व की एक नई अवधारणा दी उनके अनुसार हिंदुत्व एक जीवन पद्धति का नाम है वह हर व्यक्ति जो भारत को अपनी जन्म भूमि, मातृभूमि, कर्मभूमि मानता है वह हिंदू है।

अतः हिंदुत्व को किसी विशेष धर्म या पंथ के साथ नहीं जोड़ा जा सकता वह के निरंतर चलने वाली जीवन पद्धति है।

## एकात्म मानववाद की अवधारणा

**उद्देश्य**– स्वदेशी मॉडल प्रस्तुत करना। मानव का केंद्रीय महत्व है मानव जीवन को अलग–अलग पक्षों पर विचार नहीं करते, बल्कि सम्पूर्ण और संकलित दृष्टि से विचार करते है । मानव की एक ही आत्मा है।

**मनुष्य**– शरीर, मन बुद्धि आत्मा का समुच्चय है और उसके सर्वांगीणा विकास के लिए चतुर्विधि पुरूषार्थ आवश्यक है। मानव अपने व्यक्तित्व में ही एकात्म नहीं है बल्कि वह राष्ट्र के साथ और सम्पूर्ण मानवता,बृह्मण्ड के साथ भी एकात्म है। जिस प्रकार मानव अपने शारीरिक अंगों से सामंजस्य स्थापित करता है, वैसे ही मानव–परिवार, समाज से, राष्ट्र से एक आत्मा स्थापित कर ले, तब यही एकात्म मानववाद कहलाता है।

व्यक्ति एकांगी नही बल्कि बहुअंगी फिर भी परस्पर सहयोग, समन्वय, पूरकता है यही एकात्मकता है और अगर यही सहयोग एवं समन्वय एकात्मता समाज ,राष्ट्र के साथ रखी जाए तो राष्ट्र का कल्याण निश्चित है।

भारत ने सम्पूर्ण सृष्टि रचना में एकत्व देखा है इसलिए भारतीय संस्कृति सनातन काल से ही एकात्मवादी है– भारत में इसे ही अद्वैत माना वस्तुतः एकात्म मानव दर्शन ही है।

आपने एकात्म मानव के सर्वांगींण विकास व अभ्युदय के लक्ष्य भी भारतीय दर्शन से निरूपित किये
जहां साम्यवादी एंव पूंजीवाद भौतिक उत्थान की बात करते हैं जबकि एकात्ममानववाद भौतिक के साथ साथ आध्यात्मिक नैतिक विकास की भी बात करता है।

मनुष्य का सम्पूर्ण बृह्मण्ड के साथ मानचित्र रूप में पैरावोलिक सम्बंध प्रदर्शित करते है

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

## एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता

समाज में सामंजस्य बढ़ाने में। एकीकरण को स्थापित करने में।
वर्ग संघर्ष के निदान में । आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने में।
विश्व बंधुत्व में। संसाधनों के कुशल दोहन में।

**धर्म**– धारण करने योग्य नियम, विचार व कर्तव्य पालन ही धर्म है

**समाज**–समाज की अपनी आत्मा है इसका स्वतंत्र व्यक्तित्व है समाज का सामूहिक मन व्यक्ति के सामाजिक जीवन को व्यवहार को प्रभावित करता है अतः समाज स्वयंभू है ।

**राज्य–राष्ट्र**– राष्ट्र भी समाज की तरह स्वयंभू है और राज्य, राष्ट्र के रक्षण के लिए विकसित एक संस्था है

## आर्थिक विचार

**अंत्योदय**– अंतिम व्यक्ति का आर्थिक उत्थान

**अंत्योदय**– एकात्म मानववाद चिंतन की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है एक आर्थिक विचार है जिसका लक्ष्य समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय अथवा कल्याण करना है।

**उद्देश्य**– आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना करना
संसाधनों का मानवीयता के आधार पर वितरण करना।

अन्त्योदय के विचार में वे मानते है कि जिस प्रकार राजनैतिक लोकतंत्र में व्यक्ति को स्वतंत्रता समानता व न्याय से व्यक्तित्व विकास का अवसर मिलता है ठीक उसी प्रकार आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना से व्यक्ति को कार्य का अधिकार मिलेगा :–

**राजनैतिक लोकतंत्र का सार 'वोट का अधिकार'**
आर्थिक लोकतंत्र का सार 'प्रत्येक व्यक्ति को काम का अधिकार'

पूर्व से चल रही व्यवस्थाएं जैसे–पूंजीवादी व्यवस्था पहले आर्थिक क्षेत्र पर आधिपत्य जमाकर अप्रत्यक्ष रूप से राज्य को नियंत्रित करती है, तो वहीं समाजवाद राज्य को सम्पूर्ण उत्पादन के साधनों का स्वामी बना देता है वस्तुतः दोनों व्यवस्थाएं व्यक्ति के लोकतांत्रिक अधिकार व उसके स्वस्थ्य विकास के प्रतिकूल है अतः हमें केन्द्रीकरण के साथ–साथ शक्तियों के आर्थिक विकेन्द्रीकरण पर भी विचार करना चाहिए।

जिस प्रकार राजनीतिक विकेंद्रीकरण सर्वोच्च राजनैतिक व्यवस्था होती है वैसे ही आर्थिक लोकतंत्र में राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, प्रजा को अपने आर्थिक कार्यों का निर्माण व संचालन स्वयं करना चाहिए, आर्थिक प्रजातंत्र तंत्र ऐसा होना चाहिए जो व्यक्ति को उसकी रचनात्मकता एवं क्रियाशीलता को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने की अनुमति दें।

अतः इस प्रकार पंडित उपाध्याय अंत्योदय के विचार के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति का आर्थिक उत्थान करना चाहते थे।

VIDYA ICS Dedicated To Civil Services

# स्वामी विवेकानंद स्वामी

- परिचय
- सिद्धांत (दर्शन)
  - तत्व मीमांसा/धार्मिक विचार
- अन्य दर्शन /विचार
  - राजनैतिक, सामाजिक और शिक्षा संबंधी
- योगदान/निष्कर्ष

जन्म – 12 जनवरी 1863 कलकत्ता
मृत्यु : 1902
पिता : विश्वनाथ दत्त
माता : भुवनेश्वरी देवी
बचपन का नाम : नरेन्द्रनाथ दत्त
गुरू : रामकृष्ण परमहंस

## परिचय

विवेकानंद एक युवा सन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगंध विदेशों में बिखेरने वाले साहित्य, दर्शन और इतिहास के प्रखण्ड विद्वान में। उन्होंने हिंदू धर्म को गतिशील तथा व्यवहारिक बनाया और सुद्रढ़ सभ्यता के निर्माण के लिये पश्चिमी विज्ञान व भौतिकवाद को भारत की आध्यात्मिक संस्कृति से जोड़ने का आग्रह किया।

**रचनाऐं** : आधुनिक भारत, राजयोग ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, माई मास्टर।

- 1893 में शिकागों विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया।
- अमेरिका के लोगों को भारतीय तत्व–ज्ञान से अवगत कराया, उनकी वक्तव्य शैली तथा ज्ञान को देखते हुये वहां की मीडिया ने उन्हें **साइक्लॉनिक हिंदू** कहा।
- आदर्श वाक्य– ''उठो जागो तब तक न रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाऐ।''

## संस्थागत प्रयास

- 1894– वेदांत सोसाइटी – न्यूयॉर्क
- 1897– रामकृष्ण मिशन – कलकत्ता
- 1898– रामकृष्ण मठ – कलकत्ता

## दार्शनिक व धार्मिक चिंतन

### 1. वेदांत दर्शन का व्यवहारिक रूप

- अद्वैतवाद के समर्थक, वेदांत के अद्वैत रूप को मायावाद के साथ समन्वित करने का प्रयास।
- ब्रह्म के निर्गुण–सगुण दोनों रूपों को स्वीकारा।
- ब्रह्म की अनुभूति के लिये ज्ञान, भक्ति एवं कर्मयोग में समन्वय आवश्यक।
- जीव और जगत के अस्तित्व को स्वीकारा।
- भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास।

### 2. धर्म और उसकी आवश्यकता

- धर्म को– व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों को ही शक्ति प्रदान करने वाला तत्व माना।
- धर्म को विज्ञान माना–धर्म नैतिक जगत के सत्यों से संबंद्ध है,और मनुष्य के आंतरिक स्वभाव के नियमों की खोज करता है।

### 3. हिंदू धर्म का सार्वभौम रूप

- हिंदू धर्म को नैतिक मानववाद और आध्यात्मिक आदर्शवाद का सार्वभौम रूप माना।
- हिंदू धर्म मानव जाति के उद्धार के लिये नैतिक एवं आध्यात्मिक विधानों और नियमों की संहिता है।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

- पाश्चात्य विचाराकों ने जिन कर्मकाण्डों, अंधविश्वासों, आडंम्बरों को देखा वह हिंदू धर्म नहीं है।

## रामकृष्ण मिशन

- विश्व को मानवता, प्रेम, शांति व बंधुत्व का संदेश।

### रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य

- मानव कल्याण एवं सेवा की भावना का प्रचार। सभी धर्म के व्यक्तियों का सद्भाव।
- प्रेम और बंधुत्व की भावना को बढ़ाना। निशुल्क शिक्षण संस्थान एवं अस्पताल की स्थापना।
- हरिजन तथा निर्धन व्यक्तियों की सेवा। अपनी मुक्ति के साथ जगत कल्याण के बारे में सोचना।

## राजनीतिक चिंतन

### आध्यात्मिक एवं धार्मिक राष्ट्रवाद का समर्थन

- धर्म ने भारत की एकता व अखंडता को बनाऐ रखनें में महत्वपूर्ण भावत्मक शक्ति का कार्य किया है। यदि भारत का उत्थान करना है तो धर्म को पुर्नस्थापित करना होगा।
- स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना। शक्ति एवं निर्भयता का संदेश दिया।
- व्यक्ति की गरिमा को महत्वपूर्ण माना।
- विश्वबंधुत्व और अंतर्राष्ट्रीयवाद के प्रबल समर्थक। अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्यों पर बल।
- आदर्श राज्य की कल्पना– ऐसा राज्य जिसमें ब्राह्मण काल का ज्ञान, क्षत्रिय काल की सभ्यता, वैश्यकाल का प्रचार, भाव और शूद्र काल का समानता रखी जा सके।

## सामाजिक चिंतन

सामाजिक समानता के सिद्धांत के समर्थक थे।

**वर्ण व्यवस्था का समर्थन–** प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार सामाजिक स्थिति प्रदान।

**अस्प्रश्यता का विरोध–**वर्णगत तथा जातिगत श्रेष्ठता के विचारों तथा अत्याचारों का उन्मूलन।

**दलित उत्थान–**मूल वर्ण व्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

**बालविवाह विरोध–**आत्मविश्वास पर बल।

## नारी चिंतन

- स्त्री–पुरूष दोनों एक–दूसरे के पूरक तथा सहयोगी।
- लिंग समानता में विश्वास।
- बौद्धिक एवं अक्षर ज्ञान के साथ आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति भी आवश्यक।
- बाल–विवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा एवं अन्य कुरीतियों का विरोध।
- नारी शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा पर भी बल।

## शिक्षा संबंधी चिंतन

- गुरूकुल शिक्षा पद्धति का समर्थन।
- शिक्षा का आधार धर्म → केन्द्र बिन्दु चरित्र निर्माण।
- प्राच्य शिक्षा के साथ पाश्चात्य शिक्षा को भी आवश्यक माना।
- ऐसी शिक्षा पद्धति की कल्पना जिसका उद्देश्य व्यक्ति को स्वामी बनाना हो, न कि दास।

## निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद जी का चिंतन व्यावहारिक एवं भारतीय संश्लेषात्मक परंपरा को आगे बढ़ाते हुये पूर्व–पश्चिमी संस्कृति का समन्वय, धर्म–विज्ञान का समन्वय, हिन्दू पुनरूत्थान एवं भारतीय संस्कृति के विशिष्ट रूप से विश्व को अवगत कराया तथा नारी उत्थान, आध्यात्मिक राष्ट्रवाद और मानवीयता को भारत में प्रभावी बनाया।

VIDYA ICS
Dedicated To Civil Services

# VIDYA ICS

*We Nurture Dreams...*

## मार्गदर्शक

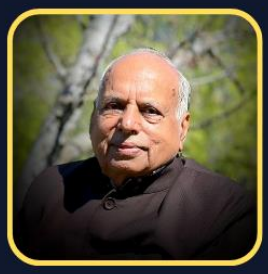

Suresh Jain
**EX-I.A.S.**

Shailendra Singh
**Addl. Collector (A.D.M)**

Robin Jain
**Dy. S.P.**

Vandana Jain
**Joint Collector**

Shubham Sharma
**Joint Collector**

Dipika Jain
**C.T.I. (Commercial Tax)**

**In Collaboration With**

**Dir : Amit Jain**
**THE CORE IAS, DELHI**

THE CORE IAS

**Dir : Sudarshan Lodha**
**TARGET UPSC, PUNE**

TARGET UPSC
The Lead You Need